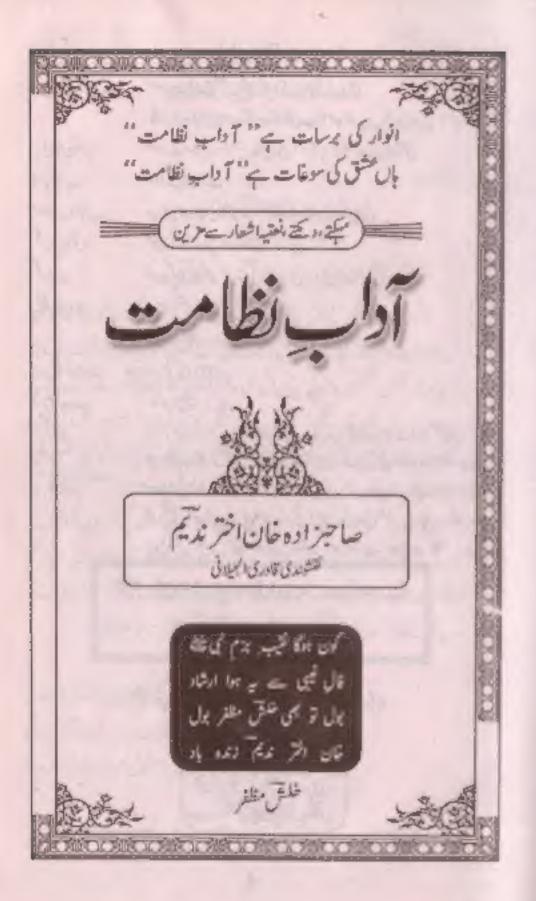
انوار کی برسات ہے ''آ دابِ نظامت'' ہال عشق کی سوغات ہے ''آ دابِ نظامت''

of real states and the

ماجزاده خال اختر ناریم ماجزاده خال اختر ناریم همچیمی کاهمی کاهی ایمی ایمی

سر پرست

پیرِطریقت حضرت الحاج مشن البی قادری چشتی فریدی چیرِطریقت حضرت الحاج مشن البی قادری چشتی فریدی حشرت منت منت اسر میشی درگاه فی میداد باب شاه جیدا فی فردند کون ہوگا نقیب برزم نبی ہیائے فال غیبی سے بیہ ہواارشاد بول تو بھی خلش مظفر بول خان اختر ندیم زندہ باد خان اختر ندیم زندہ باد



فعل خدا ہے جو کہ ہیں مذاح مصطفیٰ وہ عاشق رسول خان اخر عرقیم ہیں



ماجزاده خال اختر ندیم نشوندی قادری انجیانی

تحمده و تصلى على رسوله الكريم يسم الله الرحمان الرحيم

انتساب

انعام پائے گادہ خدا کی جناب سے چوبھی پڑھے گا نعت رسول کریم (تقوی)

الحددثدا راقم نے تقریبا 1976ء سے نعت خوانی کے ساتھ ساتھ کافل نعت کی مطابعہ ساتھ کافل نعت کی مطابعہ سے اور منا قبات کے جو اشعاد پڑھے انہیں بحسن وخوبی پذیرائی فی۔ صفاقان مدین الفظ نے انہیں خوب خوب بند کیا۔ لیکن ان جی کچھا شعاد ایے جی تے جو میری شناخت اور محفل کی جان من محکم سے اسلاقا والسلام اور آل دسول الفظ کے کافلادرب العزت کے بے پایاں کرم۔ صفور علیہ المصلوقا والسلام اور آل دسول الفظ کے کے صدیقے اور وسیلے سے مجان مصطفی الفظ کی کے مدر کے اور وسیلے سے مجان مصطفی الفظ کی کھی میں مناور کر رہا ہوں۔ ساتھ ساتھ آواب نظامت کو اپنے والد کر ای آفاب طریقت کو طریقت ساتات الاسا تذہ معروف نعت کو طریقت ساتات الاسا تذہ معروف نعت کو شام موروف نام موروف نعت کو شام موروف نعت کو شام موروف نعت کو شام موروف نعت کو ساتھ کا طاب کا رہوں۔

فتقركرم ودعا

ماجز أوه خان اخر عربي نتشبندي قادري الجيلاني اليم المدرة التي اليرداتي اليردة التي المراث المردة التي المردة التي المردة التي المردة التي المردة التي المردة المرد

ايران نعت

إلى تبروى-227 ين فبر 10 اللف أبديداآباد موال 3838365 0346

مر پرست دادارت: حضرت الخارج محش اللي قادري جيلاني فريدي

چيز شن دې امور سخي در گاه كي سيدناه بدالو باب شاه جيان ( زمث)

بي فيضان أنظر: حضرت صوفي ماسترضير ضان ويكرا كبرة بادى أنتشيتدى صافى

نام كراب: آواب فلامت

مصنف ومرتب: صاجر اده خان اخر عربيم نشتيندي كادرى الجيلاني

عمان اعلى: فنزادا مندية مراضعة "كرايي

محران نعت كورية الدين ماكى القادرى كرايى بحد المرفع فعت كو

بنظرمناعت: استاذالشعرابطاسانوريريلوي

شاح با كمال جناب خلق منظر

عرف اشاحت الريل 2010ء

عزد مقيد = 200/دو ب مركبن: فاكم صاجزاده ا

وَاكُمْ صَاجِزَاده مَافِظ مِل شَعِب بِرْب كَلِينَك مِنْ 10 لَفِف آباد حيدرآباد فرريل في في فريدي مربط الدين في استاد داد فرك على مصطفال نواب شاهد تقيس عالم فريدي وهد جادي فريدي ماستاد سيف هد في اجميري وزيز احد وارلى انهادج اولي صفى بإسمان دهر سعيد يرويرائز سعد فيستى حكن - صان احد خان - عدمت فاطر مديم

> پیکش: آلراو فرد پرز محال (دونامه آنده ایاب) عبد الوهبد غوری .

مخانب المجمن عاشقان بدوب مصلق الله ديداً إد النب ب بيداً بديد مؤدر في بيداً بياكتان مغنون و آوالنش عمد اكرم فركتى اخر القادري مدد تراجمي فيغان ما يريكن

جمله حقوق اهليه محترمه نصرت نديم محفوظ

ہے تحتِ علی خان اختر ندیم عافق ہر ولی خان اختر ندیم اس کی لورج لحد پر بید تحریر ہو خاک پائے ٹی خان اختر ندیم غاک پائے ٹی خان اختر ندیم

کول نہ آ داب نظامت ہوسدا مقبول عام اس میں حمد ونعت بھی ہیں منقبت ہیں اور سلام جو پڑھے گا شوق سے اس کو دہ پائے گا سر در اے ندیم اس پر رہے گی رحمتِ رَبِ انام

(صاجرز اده خان اخر عرقيم نششوندي)

شیرہ ہے حمد و نعت کے اِس انتخاب کا مہکا ہوا ہر ایک ورق ہے کتاب کا برم رسول میں ہے یہ ناظم کی رہ نما تم نے ندتیم کام کیا ہے ٹواپ کا

"آواب نظامت" نے بھیری ہے خوش ہو یہ نسبت سرکار دوعالم کی ہے کہت ہرنعت کی محفل کو بناتی ہے یہ کا کیف لا دیب مبادک ہے تدیم آپ کی محنت

(صاجزاده فان اخر تدمیم فتشندی)

| _  |                        | امت_ | 12.5 | أحان |                       |    |
|----|------------------------|------|------|------|-----------------------|----|
| 69 | برست برئ موني رحت      | 95   |      | 63   | فعت فقولي دمالت       | 62 |
| 70 | محبوب دوعالم كي رحمت   | 96   |      | 63   | نعت کیاہے             | 63 |
| 70 | مدا ک صدد کی آل دیں کی | 97   | *    | 63   | فعت الواس محركا       | 64 |
| 70 | مشق تي ش               | 98   |      | 64   | 2 2 25 rai            | 65 |
| 70 | مرتابقم بيتن ملغان ذكن | 99   |      | 64   | شيند كي شرك ضروي      | 66 |
|    | محالوا في مال عدى      | 100  |      | 64   | يردت مجوب يل          | 67 |
| 71 | ي ي في وري كا شايد     | 101  |      | 64   | نعت نحاش              | 68 |
| 72 | 82 10 2 20 9 20 1      | 102  |      | 64   | موبو كارت الم         | 69 |
| 73 | マリクラ かっと               | 103  |      | 64   | بازال وراسمادت كم     | 70 |
| 73 | وكرا قاكا خد مناتي يهو |      |      | 65   | وماوم بي اعتر         | 71 |
| 73 | يركاكام عدوقداكاتم     | 105  |      | 65   | 200012                | 72 |
| 73 | ا تسويصد غلوص          | 106  |      | 65   |                       | 73 |
| 73 | مولا کی توازش مهال     | 107  |      | 65   | فى جلوه كر زطر زعان   | 74 |
| 73 | الك سالك عدم على الد   | 108  |      | 65   | دودانا يركل جم الرسل  | 75 |
| 73 | لوك نازال بين كده      | 109  |      | 66   | وشكن الشاعلن تور      | 76 |
| 73 | بال كي بول الفاظري     | 110  |      | 66   | فدا كراو شاكر ول      | 77 |
| 74 | ند الدواد اس           |      |      | 66   | بروج برطيقي           | 78 |
| 74 | آپائی کرمے             | 112  |      | 68   | 542545                | 79 |
| 74 | ز سالعیب اکل           | 113  |      | 68   | أي وساعب خال معيم     | 80 |
| 74 | كيامره آئاي صيفى       |      |      | 66   | ال كي آعمول يرفعا     | 81 |
| 74 | نعت كفيويات الماتزم    | 115  |      | 66   | وأحشر بنك لوكر أط فنى | 82 |
| 75 | برتفذل اور برمظمت      | 116  |      | 67   | ترجسة بهماكولي فسيس   | 83 |
| 75 | نعت كياب               | 117  |      | 67   | عل جا بتاءول أے       | 84 |
| 75 | ميمواك                 | 118  |      | 67   | كامراصه               | 85 |
| 76 | كاش بلخاش مستقل        | 119  |      | 67   | الارزائي كالصدياك     | 86 |
| 76 |                        | 120  |      | 67   | ونياك يكسون كاسيارا   | 87 |
| 76 | جم كادين سعاول         | 121  |      | 68   |                       | 88 |
| 76 | جب افک کوریاش          | 122  |      | 68   | كيالغف ميحن كا        | 89 |
| 76 | خوال والحل سال         |      |      | 68   | شابتدا مك شبكها تهام  | 90 |
| 76 | 2020                   |      |      | 68   | الالفاديمة            | 91 |
| 77 | مرآرزو بيشيدل          | 125  |      | 68   | المان                 | 92 |
| 77 | بمال مطل كانورب        | 126  |      | 69   | للغبال كاعام          | 93 |
| 77 | وروازه كولي إلى فرشح   | 127  |      | 65   | مقدركام _ بحثى كي وحت | 94 |
|    |                        |      | 9    |      |                       |    |

| و نظامت                                  | -laT  |
|--|---|
| واست                                     | 4   |
|  | فبرغاد معرعه صخافير                             |
| 53 كَالْمُ حَمَّى وَجُورِ عُن اللهِ 31   | ا شروع العداء                                   |
| 32 ( الرمحوب ل يعقل ع                    | 2 أوابونهامت على في 5                           |
| 33 القاات مطلق الديادة 34                | 3 جهت بل خان اخر عدم 6                          |
| 34 ئىرىلەت 35                            | 4 كول شرآ واب ظامت 6                            |
| 55 4 - LEV 16 L. 2 35                    | 5 الحاب 5                                       |
| 36 نعت رحمت كالثاراء 66                  | 8 - 6   |
| 37 نعت البّالَ مقد الدار 56              | 7 المان كالمعددة الماركة علم 14                 |
| 38 نديراايان ٢ 38                        | 8 خان الرّ عديم كي المقيضات 26                  |
| <b>4.7 、 (1.31) (1.31) (1.32) 3.9</b>    | 39 2121 9                                       |
| 57 655660 40                             | 10 نعدی دل کے 41                                |
| 57 823/3/82 41                           | 11 مظميدتعت بال 41                              |
| 57 Fre 3/4 42                            | 42 Jt Sit Z Z 12                                |
| 58 12 13 43                              | 13 يارب اعراموان 42                             |
| 44 أب ش كرنا فران كريا   44              | 14 نعت مقب رت كريم ب 43<br>15 شي بول 15         |
| 45 مهرمدان فعات دافت 58                  | 40  |
| 48 فره جير فروران 88                     | 100 100   |
| 58 בשות של איני איני איני איני איני איני |   |
| 48 محدول عالم و 59                       | 60 / 1.0 A.M.                                   |
| שול בילטוו בילטוו 19                     | The 1 7 7 1 00                                  |
| 59 be - 150 / 50                         |   |
| 59 אנטבאר הקלב 51                        | 21 منطوبات اورنتری تعین<br>منطوبات اورنتری تعین |
| 59 באנטולאינים 52                        | 22 يىبىنىقاكۇل 22                               |
| 59 בוטים עוד ליולים ביים 53              | 23 كررى عداج بارى 23                            |
| 54 موجول پر مفیزد کھی چکے 60             | 24 نعدا تھا اعلان کار کی ہے 24                  |
| 55 مارے رواں ش ایک فرف 60                | - A   |
| 60 ליטורילק 56                           | 26 مقدور جين كب 26                              |
| 61 756 Age 22 CO 57                      | 52 ريان الحالي 150 × 27                         |
| 58 ﴿ رَحْقَ عِلَى الْحَالَ               | 27 مرى الجائے تھے ہے<br>28 خلقب كا نات 28       |
| פר בילון של יינים Bri בילון של יינים     | 29 ورضائے 29                                    |
| 60 مِرْتِبْنِتِ 60                       | 30 دداوم بساوت س                                |
| 61 مَنْ الْمُعرف للطالب ثام 63           | 20 Q-1-4/1-1-1-1                                |

| آجاب نظامت |                          |     |    |                                       |  |
|------------|--------------------------|-----|----|---------------------------------------|--|
| 98         | فتفح الور لأكاجهام أكياب | 227 | 90 | 194 آقال الرويدوام                    |  |
| 99         | درو دونعت كي محفل        | 228 | 90 | נונוב לטלו 195                        |  |
| 99         | مونديد كاول              | 229 | 91 | 196 اس يتوب والشية                    |  |
| 99         | こりんじんりこ                  | 230 | 91 | 197 ch 1000 = 197                     |  |
| 99         | INE SIZAGE               | 231 | 91 | 198 موال يرك موتريف                   |  |
| 100        | دو کا پدیول عل           | 232 | 91 | 199 مواسطاني ال                       |  |
|            | كيايال يج ين كامدين      |     | 92 | 200 اگرهدشان او مختیک                 |  |
| 101        | محرى دُعافارول اعظم      | 234 | 92 | 201 وَلُ الرَّوْلُ الرَّالُ اللهِ 201 |  |
| 101        | وين كرورين حالى ك        | 235 | 92 | 202 نعت عام مراكي وبالا               |  |
| 101        | حايت في المحت في         | 236 | 93 | 203 دو ال كراس راست                   |  |
| 102        | الل تقرى آ كه كا يبرا    | 237 | 93 | 4 WW 300 100 204                      |  |
| 102        | رياض في كالكفة كل        | 238 | 93 | 244 JUKULAN 205                       |  |
| 102        | شاومردال مفير يزدال      | 239 | 94 | 206 جسكتارول كالميش                   |  |
| 102        | يكي فوشواور اب على ب     | 240 |    | 207 كاستدركياكاما                     |  |
| 103        |                          | 241 | 94 |                                       |  |
| 103        | The said                 | 242 | 94 | 209 رز ق کاماری کیا                   |  |
| 103        | منط ي وراي ه             | 243 | 95 | ( 大水水 210                             |  |
| 103        |                          | 244 | 95 | 211 بزار بادد كن وكاب                 |  |
| 104        | ربدادر محرب              | 245 | 95 | 212 يَا صَاحِبُ الجُمَالِ             |  |
| 104        | ع ول ياك رسول اكرم       | 246 | 95 | 213 اے کیرکس                          |  |
| 104        |                          | 247 | 96 | 214 جب سن قاان كاجووترا               |  |
| 105        |                          | 248 | 96 | 215 الخاليد وتعالى 215                |  |
| 105        | كبال بيكوني تماري شال    |     | 96 | 216 محبوب كالحفل كوصفاق               |  |
| 106        | بمالي صاحبيتن المر       | 250 | 96 | 217 קאנוצטיפור                        |  |
| 106        | وطاكرم كااشارايو         | 251 | 96 | 218 ميدانات                           |  |
| 106        | كياسين نام ب             | 252 | 97 | 219                                   |  |
| 107        |                          | 253 | 97 | 220 ما المركبة ال                     |  |
| 108        | ,                        | 254 | 97 | 221 ﴿ كَارِ حُولَ كَا رَبِي           |  |
| 109        |                          |     | 97 | 1112 222                              |  |
| 110        | مولى منيرخان كي ياد      | 256 | 98 | 223 - س كردالدى ي                     |  |
| 111        | نعت محمالك شباجريها      |     | 98 | 224 الشرخ كالما                       |  |
| 112        |                          |     | 98 | 225 לונשתנטלים                        |  |
| 112        | تالد يورش طوقان          | 259 | 98 | 226 لذت نعيب ب                        |  |

| آ ه آپ نظامت                  |                                |  |  |  |  |  |  |
|-------------------------------|--------------------------------|--|--|--|--|--|--|
| 84 经上海长小路 161                 | 128 عربيان جان 128             |  |  |  |  |  |  |
| 162 يال عامد عمر كار 84       | 77 July 129                    |  |  |  |  |  |  |
| 84 Coluna 163 .               | 130 كىكيارىدان 78              |  |  |  |  |  |  |
| 85 5-1703 164                 | 131 مم حيات ند فوف آنغا 78     |  |  |  |  |  |  |
| 165 اِنْ آپ كَادُون عُن 165   | 78 Chest 132                   |  |  |  |  |  |  |
| 166 قرآن دو محقد 85           | 133 ما تشخا المعرد ي إلى 79    |  |  |  |  |  |  |
| 85 ປ້ຳຢູ່ນົບໄດ້ 187           | 134 أكل تناس عيد ح إلى 79      |  |  |  |  |  |  |
| 168 (آن کیا جی                | 79 124 / 135                   |  |  |  |  |  |  |
| 85 169                        | 136 بردازول عربال ب 136        |  |  |  |  |  |  |
| 02 2/1/1/1/                   | 137 الله عبد عادال ع 137       |  |  |  |  |  |  |
| 171 وميف كرد إدول 85          | 79 July 2 = 138                |  |  |  |  |  |  |
| 172 كى بى بىلىدەرىغى 88       | 139 مائوں کرم بدماب 80         |  |  |  |  |  |  |
| 173 اے توالد یا استوادات اور  | 140 فرداعال على 140            |  |  |  |  |  |  |
| 86 كوكا عول عن جمالول 174     | 141 يزوول إك                   |  |  |  |  |  |  |
| 175 على اعد الرامل كا 86      | 142 مرلامكال يت طلب اول 80     |  |  |  |  |  |  |
| 176 مظلی کرم فراس کے 87       | 143 عدل المراب 143             |  |  |  |  |  |  |
| 87 Checking 177               | 81 1 1000 144                  |  |  |  |  |  |  |
| 87 AUCULLOUSE 178             | 145 آڀي شان ڪڙان 81            |  |  |  |  |  |  |
| 179 سالال يادت 87             | 146 مركارمراياالت إلى 146      |  |  |  |  |  |  |
| 87 666034 180                 | 147 אין אין אילטוניו ען 147    |  |  |  |  |  |  |
| 181 آپ کسے تایا 88            | 148 واحدادا آلي ۽ 148          |  |  |  |  |  |  |
| 182 مالي الله دياعي موسية 88  | 149 كلفن لميه على بب           |  |  |  |  |  |  |
| 183 مردرانماك بالقائل 183     | 150 كتامت عيارد يما 82         |  |  |  |  |  |  |
| 184 دايز يركارك 88            | 151 عام ترا بحريرة آثال 82     |  |  |  |  |  |  |
| 185 آئے گھنوریارتو 88         | 152 מנישל בוציאות 152          |  |  |  |  |  |  |
| 186 مبرح ۽ 89                 | 153 كايزية الي فرشدوم 153      |  |  |  |  |  |  |
| 187 م غريام                   | 154 يم معظر المرادل كا         |  |  |  |  |  |  |
|                               | 83 VI S 155                    |  |  |  |  |  |  |
| 89 الماكر الماكان 89          |                                |  |  |  |  |  |  |
| 190 استرابای                  |                                |  |  |  |  |  |  |
| 90 المكري 191                 | 158 كياري امت على الم يعد ع 83 |  |  |  |  |  |  |
|                               | 84 KW San 159                  |  |  |  |  |  |  |
| 193 مل كما عرفي أرمول الله 90 | 160 وي اكرر ۽                  |  |  |  |  |  |  |
|                               | -                              |  |  |  |  |  |  |

|             |                            | آمابته | الهت                        |     |
|-------------|----------------------------|--------|-----------------------------|-----|
| Ln 326      | 二维些                        | 137    | 358 محرير يم اقبال          | 148 |
| mg 327      |                            | 138    | 359 عبدالمتمد كاورى         | 148 |
| EU 328      | ن تو يسعند يمن             | 139    | 360 مرجاديد فريدي           | 148 |
| 328 عيدا    | الروف يمن                  | 139    | Un 5 621 361                | 149 |
| JF 330      | ت مطقال                    | 139    | 362 نعت - فلديري كو         | 149 |
| lbs 331     | والزحمال قاتل              | 139    | 2 1/gu 4 363                | 150 |
| 332 راشد    | E                          | 140    | 364 سوفي عبدالمليم خان      | 151 |
| 333         | في خليل الرحمان            | 140    | 365 مريزالدين خاك           | 151 |
| الرز 334    | 2                          | 140    | 366 Ta 157                  | 152 |
| 335         | ووالفقارسين شاونقوى        | 141    | 367 محرما كم قريسي المدنى   | 152 |
| 336 فراد    | درمبيب تعشيدي              | 141    | 368 سيس احرقادري            | 152 |
| 337         | في محر ميل خان             | 141    | 369 محر الدين ير            | 152 |
|             | القادر كمك أوليل شين       | 141    | 370 منگور حسين كلوكم        | 153 |
|             | ف الحرابيري                | 142    | 371 استقال الرائزازي تقريار | 154 |
| Ji 340      | الركى اخر القادري          | 142    | 372 مولى مبداستم خان منتبد  | 154 |
|             | ر ما لم فريدي              | 142    | 373 فيوالوجد فريك           | 154 |
|             | ل فوت محرف اللي مل المن ال | 143    | 374 الحاج من الى وستى       | 155 |
|             | بدالد ين قريكي             | 143    | 375 استبالي على مشامره      | 155 |
| _           | بالوحيد جال مروعدي         | 143    | 376 موقدر كا كلا            | 155 |
| _           | منف فرازي                  | 144    | -13/ His 377                | 156 |
|             | ر المعارى شرازى            | 144    | 378 جب عطا يود عمي          | 156 |
| 2 347       |                            | 144    | 379 مارک او میں             | 156 |
| £ 348       | فعيب                       | 145    | 380 الشرك تدويا             | 156 |
|             | فيصديقي فتتبندي طابري      | 145    | 381 كوكب أورا في اوكا أوى   | 157 |
|             | الدي قادري                 | 145    | 382 حبداللليف إلحى          | 157 |
|             | تى الدين مماى              | 145    | 383 ۋاكۇستدانورىلى نيازى    | 157 |
| / 352       |                            | 146    | 384 سيميل لميدثاه           | 158 |
| ¥ 353       | للم فيخ                    | 146    | 385 ووالققار سين أفتوى      | 158 |
| ¥ 354       | راكرع كى شاه               | 146    | 386 حرمان اخريم             | 158 |
| 355         | As Je                      | 147    | 387 معطا كريفق سار          |     |
| 358         | في منافر                   | 147    | 388 آرگائيرل عالى نعت ذكر   |     |
| الران الران | ريطى                       | 147    | 389 كيان ومحسين             | 160 |

| _   |  | للمت | - آماب نه |                          |
|-----|--|------|-----------|--------------------------|
| 121 | أل بشب يات   | 293  | 112       | 260 أوج يراييخ مقدركا    |
| 122 | الحاج خورشيداحمه   |      | 113       |                          |
| 122 | سيرضامن على حتى  | 295  | 113       |                          |
| 123 | فرل يوق ويول ف   |      | 113       |                          |
| 123 | تريع بغير سكوان وقرار  |      | 113       |                          |
| 124 | لول يقلون الماس ب  | 298  | 113       | 265 عفق احمد عمراول      |
| 125 | الحاج مخشن البي  | 299  | 114       | 266 الله الشاكره         |
| 125 | كي إك إت كبتا إن ا   | 300  | 114       | 267 كتيريز يدوحت ك       |
| 125 | نورجهم شاوجيلال  | 301  | 114       | 268 الشاطرنعيبان         |
| 126 | سيدقمرانؤ بالباثناه  | 302  | 114       | 269 الله في القالوبالغ   |
| 126 |  | 303  | 115       | 270 مالات مبدل دے        |
| 127 | مبئي مبلي صليريدامال   | 304  | 115       | 271 مرشد اک سيال         |
| 127 | نام إن كالمضل رب كريم  | 305  | 115       | Br 62 65 272             |
| 127 | وفرورعي  | 306  | 116       | 273 ماغرى آرددى          |
| 127 | رينت كوني كاب سلسله  | 307  | 116       | 274 ع ل ولا كول مديس     |
| 127 | خدا كفوظ رمح خان اخر   |      | 116       | 275 جبر عالى ندايا       |
|     | لتي الكالعين عرسة ب  | 309  | 116       | 276 لحديدماماميررانك     |
| 128 | - しいかんかい   |      | 116       | 277 روان اليست           |
| 128 | معتى احدميال بمكاني  |      | 116       | 278 باريم عمال           |
| 128 | محبوب عالم شيرواني   |      | 117       | Japan 279                |
| 129 | محمد سين حسين تقامي  | 313  | 117       | 280 ملني وي كرواسط       |
| 129 | مسكراكرد كمينا   | 314  | 117       | 281 مارور الاول كدن      |
| 129 | اناكالى عندى كالح  | 315  | 117       | 282 أن الأوالي ب         |
| 130 | - 46 2 12 KS   | 316  | 118       |                          |
| 130 | The second secon | 317  | 118       | - JUN 11- UK- 284        |
| 130 |  |      | 118       | กมาย์ 285 285            |
| 131 | محرسعيد فيستى عبدالوحيد غوري   | 319  | 118       | 286 مُوسُوارَب سے كرو    |
|     | أستادك كي يذرعقيدت   |      | 119       | 287 سيفيت كى باريا       |
| 132 | 母學了  |      | 119       | 288 جوور كى كا تات       |
|     | حيدا آدك مازدمروف ماخوانان   |      | 119       | 289 أما كذ الناش على إلى |
| 135 | منازوته عال فط الدمل   | 323  | 119       | 290 ال كاعازكرم          |
|     | بيدرآ وداء عدوا فعوان فقل  |      | 120       | 291 سيدس على عايدى       |
| 136 | 1/2  | 325  | 120       | 292 مفتى جمال الدين      |

### بهشارانديم

# دوران نظامت

ال لئے نعت وہ بات اظہار ہے جس کی بدولت بندگان خدا کومجوب کا حات کی بدولت بندگان خدا کومجوب کا حات کی بدر قرصیف کا موقع میسرآتا ہے۔ جب بی تو کا خات کی برشے براحد فا سے حضور میں مشترق ہے۔ جر جگہ براحد، جرساعت، برآن، براحظ ای ذات ایس کے حضور میں مشترق ہے۔ جر جگہ براحد، جرساعت، برآن، براحظ ای ذات ایس کے حضور میں مشترق ہے۔ جر جگہ براحد، جرساعت، برآن، براحظ ای ذات ایس کے حضور میں مشترق ہے۔ جر جگہ براحد، جرساعت، برآن، براحظ ای ذات ایس کے دیار فیرکی صدا کی گوشی نظر آتی ہیں۔

ید کرم خداد ندی ہے کہ اس پر خطا کو ادائل عمر سے بی ذکر مجبوب ملک ہے ۔

ہاس کرنے کا حوصلہ ملا ہے۔ 1976ء میں جب میں نے نظامت کا آغاز کیا تو اہل اس کرنے کا حوصلہ ملا ہے۔ 1976ء میں جب میں نے نظامت کا آغاز کیا تو اہل اس سراہنے گئے۔ میں نے دوران نظامت سامین میں عشق وستی پیدا کرنے کے سے کے عمر واثر پذیرادر جوش وجذ ہے ہے ہر پوراشعار سنانے کا سلسلہ شروع کیا۔ یہ سلسلہ اس قدر کا ممیاب ہوا کہ میرا شار حیور آباد کے نمائندہ نقیبان محفل میں ہو کے سامہ اس قدر کا میاب ہوا کہ میرا شار حیور آباد کے نمائندہ نقیبان محفل میں ہو کے ایک دوبارٹیں بلک عشق و

عبت کی دوراہ ہے جس میں دشواریاں زیادہ جیں۔ مگر جب میں نے اس راہ کا انتخاب کیا تو بھے پر رحمت وکرم مصطفیٰ میں کا کہ دروازے دا ہو گئے۔ آج بھی بیسلسلہ اس طرح جاری وسماری ہے۔

> شامری میری منول تو برگزشیں بال نظامت مری خاص پیجان ہے

میراسفر نظامت کم وثیش 32 سالوں پر محیط ہے۔ جس میں میرے تمام چاہنے والے مشاگرد اور محقین حضرات نے بھیشہ جھے سے دلی عقیدت کا اظہار کیا ہے۔ اگراس موقع پر ش اپنے لائق صدمحتر محسنین کا ذکر ندکروں تو بیری ناانسانی و ہادنی ہوگی ۔ ان حضرات میں چندنمایاں نام بیریں۔

الحاج سيدقسر الزمان شاه صاحب كي نوازشات

حیدرآباد کی نعقیہ تاریخ یس معزت قبلہ الحاج سیدقر الز مال شاہ صاحب کی شخصیت کی تعارف کی گئی نیس ۔ آپ نہاہت خوش طبع کم کو خوش لباس اور دین دار انسان مونے کے ساتھ ساتھ ایک ہے عاشق رسول ہیں۔ بار بارح مین شریفین کی انسان مونے کے ساتھ ساتھ ایک ہے عاشق رسول ہیں۔ بار بارح مین شریفین کی

من شن شریفین کی حاضری کا شرف الما۔

پیچلے مال 2008 ویں ہمی شاہ صاحب نے اپ گر پر منعقدہ شب معران ل کفل میں میرے لیے عمرے کا اعلان فر ایا تھا۔ لیکن پوجیطالت آپ جھے عمرے کے افراجات نہ وے سکے شاہ صاحب کی علالت کی وجہ ہے اس مال 20 جولائی 2009 وکڑاہ صاحب کے گھر شب معراج کی مخل نہ ہوگی۔ ذیا ہے کہ اللہ دب العزت شاہ صاحب کو مضور علی ہے کے مدتے میں جلاصحت کا لمہ عطافر مائے۔ آمین

گلش نعت کا مهکتا بهول العاج گلش الفی فریدی فریدی جیلانی

رهد کرای معرت الحاج گلش الی فریدی جیلانی القادری د فرخهم

بالا تفاق رائ الساره مین نعت حیدراآباد کا کلوت ، تایاب ، کمیاب اور میک کلاب این سر مین نعت میدراآباد کا کلوت ، تایاب ، کمیاب اور میک کلاب این سرات مونس و بعدرد ، فلیق اور لا جواب و با وقار انسان این به پایند سوم وصلو قاود طریقت و معرفت می اعلی مقام کے حال میں اللہ دَب المور ت نے آپ کو باتھ در معرفت میں اعلی مقام کے حال میں اللہ دَب المور ت نے آپ کو باتھ در الحد میں اللہ مقام کے حال میں اللہ دَب المور ت المور میں اللہ میں اللہ دَب المور ت المور اللہ میں اللہ دور اللہ میں اللہ دور اللہ میں اللہ دور اللہ میں اللہ میں اللہ دور اللہ دور اللہ میں اللہ دور اللہ میں اللہ دور اللہ میں اللہ دور اللہ دور اللہ دور اللہ میں اللہ دور اللہ د

حفرت قبله الحاج معن صاحب کی شخصیت اتنی یز کشش اور محورکن ہے کہ جہال جائے ہی سے ملئے ہر فض آپ کی تی تعریف کرتا نظر آتا ہے۔ ترقی نعت کے جراب جائے ہی خدمات بے شاروا تکنت ہیں جوروز روشن کی طرح سب کے لئے محترم جاتی مصاحب کی خدمات بے شاروا تکنت ہیں جوروز روشن کی طرح سب پر میاں ہیں۔ حیور آباد جس کی خدمات ہے تی کے ذریکیٹر سے جائی جاتی ہیں۔ مثالی پر میاں ہیں۔ مثالی ہوں ہے۔ اور مسب سے ذیاد واقعر بیات منعقد کرنے کا اعز از صرف آپ ہی کو حاصل ہے۔

حضرت قبله كلشن اللى صاحب تقريباً 25 سال عدمتواتر غانوادة آل ١٠٠ على على مجيد تخوض وبركات حضرت في سيدنا عبدالوباب شاه جيلاني" كاسات زیارت سے مشرف ہوتے رہے ہیں۔ کیرنعت خوانان مصطفیٰ ملے اورعلائے کرام کو اپنے ذاتی فرج سے عمر ورج سے مستفید کروا چکے ہیں۔

ا 1980 میں ہیرآبادی منعقدہ ایک کل پاکستان محلی نوت میں ہیلی اور میں منعقدہ ایک کل پاکستان محلی نوت میں ہیلی ار عالی مرتبت آبلہ شاہ صاحب نے جھے سنا تو یہ حد پہند کیا۔ میرے انداز نظامت خطابت سے متاثر ہو کرآپ نے اپنے گھر پر منعقدہ کل پاکستان محلی نوت میں نظامت کی دعوت دی۔ چنانچہ بیر میرے لئے اعزاز ہے کہ اس دن سے آئ 2008ء تک میں شاہ صاحب کے گھر پر منعقدہ بے شار کل پاکستان محالی نعت کی نظامت کر چکاہوں۔ حرید یہ کہ وسال تک شاہ صاحب کی قیادت میں منعقدہ ونے دائی ہفتہ دار چکاہوں۔ حرید یہ کہ وسال تک شاہ صاحب کی قیادت میں منعقدہ ونے دائی ہفتہ دار مشتق محالی نعت کی نظامت کا شرف بھی جھے ہی حاصل ہے۔ ان محافل میں بھی بھی محمد مان ہوا کر تے تھے۔

آپ کی نبت ہے جھ کو باصب عز دشرف آپ کی مدحت وسیلہ ہے میری تقدیم کا

پلکجیکے 28 سال گزر کے ہیں۔ لیکن حیدراآبادی مرف قبلہ الحاج سیّر قرائز ماں شاہ صاحب کی وہ فخصیت ہے کہ جنہوں نے جیجے اب تک یاد کرر کھا ہے کو کہ جھے میں اب وہ طاقت و تو انائی نہیں ہے گرشاہ صاحب کی عیت اسی طرح قائم ودائم ہے۔ امید ہے کہ پیسلسلمان شاہ اللہ آئندہ بھی جاری وساری رہے گا۔ مین۔

# مدح محبوب شي كاسب سے بڑا انعام

یہ والدین گرامی، بزرگوں کی دعاؤں اور میرے آ قان کا گاو کرم ہے کہ مجھے ندیہ خوانی کا سب سے بڑا انعام قبلہ شاہ صاحب کے ہمراہ 1987ء میں

روز ہ تو س شریف اور چھروز و معین انملت معطائے رسول قواجہ مخواجگان حضور خواجہ
غریب نواز کا غرس مقدس اور ویگر اولیائے عظام کے احراس مبارکہ فیتیہ
کا نفر نسز ہوائی سام و وعظ کا انتظام والصرام ہیڑی خدہ پیشائی و جاس قشائی سے سر
انجام دے رہے ہیں۔ جو کسی دوسرے کے بس کی بات نہیں۔ کیٹر علاہ وائر کی اعانت
فریب سادار و بے بس مفلس و تو محر حضرات کی خیر گیری بالمخصیص ان کا ہر طرح
خیال رکھنا آپ کے معمولات میں شامل ہے۔ بیاکٹر دیکھا گیا ہے کہ آپ ہر ایک
خیال رکھنا آپ کے معمولات میں شامل ہے۔ بیاکٹر دیکھا گیا ہے کہ آپ ہر ایک
حیدر آباد میں آبا فائی نہیں۔ اللہ ذہ بالموات نظر بدے محفوظ دیکھے۔
حیدر آباد میں آبا فائی نہیں۔ اللہ ذہ بالموات نظر بدے محفوظ دیکھے۔

ال آمام منتقوے ذرا میٹ کریے بتاتا چلوں کہ جاتی صاحب ال خاکسارے بھی دلی میت رکھتے ہوئے ہیں۔ جس کا اندازہ اس بات ہے لگا جا سکتا ہے کہ 1998ء جس درگاہ عالیہ پر منعقدہ ایک محفل جس اس بات ہے لگا جا سکتا ہے کہ 1998ء جس درگاہ عالیہ پر منعقدہ ایک محفل جس محترم حاتی صاحب نے جھے سعادت عمرہ کی ٹوید سنائی تھی اور فرمایا تھا کہ ہے جر ساتھ مدینے چلیس کے لیکن اہلیکی ناسازی طبع جو کہ کئی سال پر محیط رہی اور آخر کا ران کا انتقال ہو گیا۔ گر کے حالات پر بیٹا نیوں کی نذر ہو گئے۔ جس خود کی بارطیل رہا۔ قبلہ حاتی صاحب پر الشرزب الموث ہے رہتوں کی بارش فرمائے ۔ اکثر فرمائے کہ رہا۔ قبلہ حاتی صاحب پر الشرزب الموث ہے رہتوں کی بارش فرمائے ۔ اکثر فرمائے کہ برائی مدینے کے لئے کیا پر وگرام ہے۔ گر جس اپنے مالی حالات و کیمنے ہوئے ہوئے ہوئے کہ دین جس نے قبلہ کرایا کہ جس ہیں شریغی مدینے کر دیتا تھا۔ مسلسل ناسازی طبع کی وجہ سے ایک دین جس نے تبلیہ کرایا کہ جس اب حریثان شریغین ضرورہ جاؤں گا۔ فروری ۔ باری 2009ء جس فاکسار نے اپناارادہ اب حریثان شریغین ضرورہ جاؤں گا۔ فروری ۔ باری 2009ء جس فاکسار نے اپناارادہ

قبلہ مائی صاحب کے گوش گزار کیا۔خدا گواہ یہ بات میں بری سیال سے کہ رہا ہوں ل حاجی صاحب نے قورا فرمایا کہ آپ ضرور مدینے جا تیں مے۔بالکل فکر نہ اریں ۔ جانے کی تیاری کریں اور پھر ایک دن ایا آیا کہ حضور علیہ السلام کی نواز شات کے درواز مدکمل محقے محترم حاتی صاحب نے ممل طعام وقیام کے افراجات عطافرمائ \_اسطرح بدراقم البيلعرت تديم اورجموني صاحبزاوي عاجي ساحب کی دعاؤں اور محبول کے ساتے میں حرمین شریقین عمرے کے لئے روات ہو ك ـ 16 ايريل 2009 مكوداليى مولى تواس مر ديجابد في دركاو عاليد برحظيم الثان التقباليه كاابتمام كيار حاتى صاحب كى نوازشات كيديسين لحات يس بمى فراموش نبین کرسکا۔ حرم دینہ جاکریت جا کر جاتی صاحب پر حضور کا خصوصی کرم ہے۔ وہاں الله الله الكاجيم من يهال خوديش آيا بك بلوايا كيابول-20 ون كستريس وره را ركيس مى كى بى يريشانى كاسامناندكرنا يدار كيكداس بى حاتى صاحب كى يائى جعموسى تصرف الكاوعنايت ادربنده يرورى شال تحى -

پیچاہوں میں مدینے در اور بیل فضا کی چکا میرا تصیا ، دربار مصلیٰ سے

بہر حال حاجی صاحب کی انگنت نعقیہ خدمات ، دیبی و غیبی تنظیموں کی قیادت ،علماء ملت کی سر پرتی ایسی کاوشیں جیں جنہیں کبھی فراموش نہیں کیا جا سکا۔اللہ زّب المعزّت آئیس ہر بلا وہر آفت سے محفوظ رکھے اور ان کا سامیہ ہم پر تاویر قائم ودائم رہے۔آھن

ہے۔ اللہ اللہ عزیز کے نامور شاع پر وفیسر سدھ یو نعور ٹی جناب میں احمد جیلا 🐔 کی گاوگاوائے علی نکات سے خادم کے علم میں اضاف کرتے دیتے ہیں۔ ان مرحوم مروراحدز فی کاتعلق ایک عمی کمرائے سے ہے۔ آپ نے اسے رسالے عیات من شنراد احمد عرجمد ونعت كے لكيے ہوئے مضمون" حديدة باد (سندھ) كے نعصت كمو شعراءً" من جمع شال كيا ب- جه يوجوان قلم كارة اكثر سيّد الواراعم ايك التصييح ال ہونے کے ساتھ ساتھ محبت مصطفی اللے ہے بھی سرش دہیں۔ بھیشہ اے مضا ان می محبوں سے سر فراذ کرتے رہتے ہیں۔ ان کان مجر میں شعرائے حیدر <del>کے ، کو</del> بذريع اولي صفى بإسبان متعارف كروائ والاتمايات نام جناب مزيز احمد والمسأماكا ہے۔ ایک متنارشام دوانشور یروفیسر سرورلوار تجمیوکاشکر گرار ہول کہ آپ نے مسین بيه حي نعتون کي اصلاح فريالي - ١٠٠٠ معروف صاحب ديوان شاعر جناب سيد مستقيل اجد شارب كامنقوم \_ نعتي جموعد كلام ساقى كور ما كاله كى يشت برمرة م ب الم عبد الديد فورى ميدان محافت بن انتيازي ابيت كرحال بن - كل معروف اخبار است ل الى خدمات انجام دے يك يل دوزنام جرأت شي أن داؤندرر يوريم رے رہودنعت بیجھے ول عقیدت رکتے ہیں۔ الاہرادرم سعیدا جد ( ہوال شہرال عز دور یونین ) کے صدر ہیں۔ وفا شعار ،ورحوصد مند یو جوان ہیں کارگز رکی نصے ٹی مير كالعن سائلي بين- بههر ول مزيز المنسار ومهربان ، وبراطف **داكثر حا خزامه شعیب بیان 10 لطیف آباد کی سر برگ اور عانت جرمحد میرے شامل اللہ** ے اللہ براور اور من برجنا ہے اسلیم منتخ یو نفستر بیز اوقاف ایک سیے بخلص اور ماون ا ست

محکہ بائد بخن دل تواز ، جان پر سوز کی ہے دنھی سفرمیر کا دواں کے لئے

نیز ممرے بہت تل بیارے شفق ومهربان سابق برلیل گورنمنٹ مرزاقلیج بيك بارسيكندرى اسكول وكالج معرت خواجه مونى محمدا قبال شاه چشتى معيني ظهورى أي ب كمال على اولى اورروحاني اسكالرين -جو محمد جميث دعاؤس سے نواز تے رہے ہیں۔میرا نعتیہ جموعہ کلام آپ ہی کی وعاؤں کا ثمر ہے۔جہ یا کتان کے متاز نعتیہ اسكائر، شاعرداديب مصنف نعتيه انسائيكلويية بامر حدونعت كراحي جناب شخرادا حدى ه برانه کا وشول سے تی میری تمام کما بین اشاعت پذیر ہوئیں۔ جناب شنم اواحمد کی قلمی اورعلى محية ل كابيل تبدول عدمككور ومنون مول .. ما ومضان السارك 2009 م یں وحوم نی وی سے نشر مونے والے انفرو ہو برقوی اخبار کے چیف جورو جناب سید راحت على كالمى كايس تهد ول ے مفكور مول من خطيب خوش وال مفتى زمن \_حصرت علامه منتى احد ميال بركاني أيك خوش مزاج اورشفيق عالم وين جيراآب نے میری کماب میلادسان پر محتول سے معورتبر ولک کرند صرف جم پراحسان فرمایا بلكه برمكنه تعاون ش چيش چيش ر ب- بهاستاذ الشعراء - ماير شعر دخن ععرت علامه الور يريكى كود نيائ شعر وفن على كون نيس جانبار بحثيب استادآب جحد يربيه عد شفقت فرائے رہے ہیں۔ مری تمام کابوں کی اصلاح آپ نے عی فرمائی ب-جيشبشاو تغزل كبدمثق نعت كواستاد خلش مظفر نجى بدے زمانے ہا فاكساركي رجمائي فرما رب بين كتاب كسر ورق ير أستاد كا قطعه آويزان

بدانہوں نے اینے شمر می فروغ نعت کے لئے تمایاں خدمات انجام سی میں۔ کامیب کافلیں کرناان کی شاخت بن چکاہے۔ میری کتاب کی تقریب روا کے بھی کر یکے ہیں سلیم میمن کا انداز نظامت مجھے یا کتان کے تمام نقیبان محفل عد زیادہ پہند ہے دوسین اشعار سنانے میں کمال میدرت رکھتے ہیں۔ ایک بحثیت است اناونسر جناب اميد على بهلم كى نعتيد خدمات لائق صدستائش بين - تين نعتيد فتحا-ے مرتب کرنے اور بے شار نمائندہ مختلیں منعقد کرنے کا اعز از حاصل ہے ہا۔ ط ا کو ہر ملی برائذ آف برفار منس (مدارتی ایوارق) یافتاتنا خوال میں یم سن سے انست یں درہے میں ایا کتان مجر میں کمیال ساعت کے جائے ہیں۔ جن انعت خوانی محس لا برا حرفر بدی کا این ایک شخص ب\_به سین آواز سے حزین بوتے کے ساتھ سانسد خوش ہوشاک بھی ہیں ہد فتقق الدین مائی کی ہے نظامت کا اعداز سب ہے أ ووصرف اس کے کدیے نہاہت بااوب اور معنی رسول ہے بہرومند ایں۔رین کے فريدي آج كل دهوم في وي عد با قاعده وابسة جي اور بحيثيت ناظم نعت خوب فري ترتی کرد ہے ہیں۔ المحصد نعت کی پر کیف ساحتوں میں جس نعت قوال سے بسرا تعنق فالعناجا أيول جيها ہے، جے درگاو عاليكا در بارى نعت خوال بھى كہتے جي جيم شاعر بھی ہےدونام ہے محد جادید قریدی کا۔ برادرتقیس عالم ش کری نعت کوا ایس کر بھری ہوئی ہے۔ بیانعت س کر اکثر نمدیدہ ہو جاتے ہیں۔ان شاہ اللہ یہ بہتے۔ مير \_ ساته جابت كا اللهادكر تروي كربه العت خواني عن يحييت شاكر محمد جہا تمیر منتوری جمریم مقبل اور تعمان توم نے بند مقام حاصل کیا ہے۔ اگر اس طرح ادب کرتے دہے تو بہت آ کے جائیں سے بیا حید القادر ملک میں تھی مطور ر میں۔ برلحد تعاون علی بیش بیش رہتے ہیں۔ بیسر بیل کمپری بہیسید وائر سیکنڈری اسكول جناب برونيسر مح سعيد صاحب كي محبت قابل تحسين ب الإجناب تلمير احمد قریش، جناب اللیف احماجمیری و بنی کافل بین چیش چیش دیجے ہیں عوں شریف معزت خواجه غریب نوار سال سال سے بوے اہتمام سے کررہے ہیں جہا قبلہ يزرگوا بحترم عاشق رسول سائيس دا اكمز محد على صديق يك محبت بجرى شخصيت در مكنه تعاوں کرنے والے انسان ہیں۔ میرے کھر کی سال شکفل میں بڑے اہتمام سے شريك موت إلى - جهاد كرصاحب محافل ميلاد كي تقريبات سالها سال معقد كرف كا اعزاز ماص ب المسلك المستت ك لئ واكثر سيد الورطى إدى كى خدمات جيشه ياد ركي جاكيل كي- المعمون نعت أركن تزر مدوح روال الجمن الينان ساية بيتن في اكرم قرائي اخر العادري كي نعتيه كاوسي حماج تعارف جہیں۔ سالباسال ہے متوار محقیم اشان مافل میا، وہنسیم ایوارڈ اور یوم حسین شایاب شان منانے کا اعز از حاصل ہے۔ بدایک سلقہ مند اور مکندتی ون فرمانے والے کلعس دوست ہیں۔سید کاظم علی حسنی شعراء کی معروف او نی تنظیم بزم فروغ ادب کی ترقی کے ليے رات دن كوشال بين المحترم جناب محدب عالم شيرواني الجمن شيدا كان رسول الله كالمن كرورة روال إلى بحس ميدميلا والني الله كالمناف كى باره روز وتقريبات يس جھے بھی حاضری کا موقع عط فرماتے ہیں۔ جہت ج کل معروف نعت کو عابد علی شیرازی کی بہت ک نعیس مقبول ہور ہی ہیں۔ یہ بیجہ نعت خوانی مجھے بوی عز تول سے توازية بيل- الم فول بيان ما خوال رسول المنافع معروف نعت آر كنا تزر، شاعر بقیب محفل محترم استاد راؤ شو کمت علی مصطف کی کا تعلق نواب شاہ ہے مخصرے کہ آپ کاب کے یادے میں کیادات سکتے ہیں؟

الشاتبارک وقت فی حضورطیدالسل مستعمد فی میری استی کوتیوں فرمائے اور اس کے صلے میں تمام مسلمین ومسلمان میری ابید مرحومہ کو تر یا نواور میرے اور اس کے صلے میں تمام مسلمین ومسلمان میری ابید مرحومہ کو تر یا نواور میرے والد مین گرا می کو جنت الفرا اس میں اعلی شام عطا فرائے ۔ مار بارحر بین شریفیں کی ما اوب عاضری نصیب فرمائے اور ماضی حصرت الی ت کلشن المی صاحب کوداد مین میں مرفر وقی عطافر المے ۔ آئین ۔

این دعااز من داز جمله جهیسال مین باد منتظر کرم

صاحبزاده خان اختر نکه یم نقشیندی نتیب ایوان نست حیرته اور پاکستان

خان اختر نديم تتشبندي

سيريزى جرل المجمن عاشقان مدمعة مصطفى متائعة و من قاب اوب حيدر آباد يا - الوان تعت در قى 227 يون الطيف آباد حيدر آباد موياك 3838365 -0346 حسین کھو کھر ،استاد غلام حسین ،اشغاق الدین قریشی بداشد ﷺ جھے شہباز ،عطا ،الرحمٰن فریدی قامی جگرگاتی اوریز کیف آ واروں سے حزین ثنا خوانِ رسول ہیں۔ بیا کٹر میری نعیش پڑھتے رہے ہیں۔

یے دہ محترم عشاقان مدینہ ہیں حن کاعملی تعاون بھیت اپیار چاہت اور عقیدت آئے بھی میر ہے ساتھ ہے۔ وگرند من آئم کہ من دائم ،القدر ہے العزیت ال سب پر ہے کراں کرم فرماے۔ آجن۔

بہر حال آواب تقامت میری رندگی کا باحصل ہے۔جس میں میری 32 سالفتيدندگ كاسر اليشال هـ ين بيس وبنا كركوني شے جميائي والے الهذا اسيناس متبرك كام عدمة قان رمول من كونيسياب كرف كوشش كرد بابول. ايك دن الميهمجر مدنفرت عديم جوكه ايك نامود حراح كومكيم محمرا قبال كفض کی صاحبزادی ہیں۔ شعرواد ب سے دل جمہی رکھتی ہیں۔ فریائے لکیس کہ و متمام تعیس وقطعات درباعيات واحاويث وروايات جوآب اب تك مي فل مي مناجيكے بين انہيں سَمَا بِي شَكِل عِين ترتيب ديه وي تاكه عام صاحب ذوق ، ثنا خوان رسول ، هراتل علم و بنر باخصوص مهنير راناوسرز معليس اور ناظميس محافل نعت منطقة اس ع بحريور استفاده رغيس بينانج ابديم مدت اصرار، لقدم وجل اوراس يحجوب الملطة ك مرم ب بایون بر تلیر سر ساس کام کی تحیل کا آناد بردیاد اس تاب کے بارے یں جب میں نے اپنے استاہ جناب سیف محمر فی اورتایا تو انہوں نے کتاب کا تام آد ب نظامت رہی راقم نے اپنی انتہائی کوشش کی ہے کہ نماب شطیوں ہے مبر ا ہور مکرات رہے عظی مملن ہے۔ آواپ فظامت میں کوئی تیمرہ شامل بیش۔ یہ سے یہ كرتے دہتے ہیں۔

فان اختر ندتیم کونعتیہ کمپیئر تک میں انفرادی سنام حاصل ہے۔ بھی ان کی وجد بہجان وشہرت ہے۔ان کے انداز نظامت کوسب تک بدکرتے ہیں۔ بیتلیم کے محے نتیب محفل ہیں۔ اس حوالہ ہان کے کئی شاکردے موقعیان محفل بن میکے میں ۔ جن میں خاص طور پرمجر رفیل شیخ فریدی محمد احد ﷺ است کو آنسه نفید کا دری سید ذی شان قادری اور شعلہ بیان محمد شریف الدین نیر کوئما بال مقام حاصل ہے۔ ویسے المين بالانفاق مب عي استاد حمليم كرت بين - بلند باسيدت كو حفرت او يب رائ بوری اٹھیں شہنشاہ نقابت کر کارتے تھے۔موصوف، ال فن میں جوشبرت اور ا بندگی حاصل ہے وہ ان تی کا حصہ ہے۔ انصیں ہرنہ ان و ادب میں کی ہزار نعتیہ اشعار وقطعات اورر باعمات زبانی یادی بسر کابیا کست ندول می اظهار می کرتے رہے ہیں۔ جب کرامی علوم اسلام ہے بھی گہرانگا اے ۔ بی وجہ ہے کہ خاص ا حادیث ور دایات از بر بین به یمی خوبیان مین جوانعیمس سے ہم عصرول سے ممتار کرتی ہیں۔آج کمی ہمی نعقیہ مخل میں ان کی شرکت محف او دوب سے خوب تر بنانے ک منانت ہوتی ہے۔

کی ہے کہ خان اخر ندتی کی شخصیت ایک مستن اور مر بوط اکیڈی کا درجہ رکھتی ہے۔ کہ خان صاحب فروغ نعت کے مطلب ہوت ہمہ وقت کوشاں میں۔ ان کی بین خوبیاں کسی کی مربون منت نیس بلک اس میں ان کی خدادا دصلاحیتیں اور ان کے دالد گرامی استاذ الشحراء آفاب طریقت کا بہتا سبتا وادب حضرت صوفی ماسٹر منیرخان بیکر اکبرآ بادی تعشیدی جماحتی رحمت اللہ سلیا حصوصی تصرف شال ہے ماسٹر منیرخان بیکر اکبرآ بادی تعشیدی جماحتی رحمت اللہ سلیا حصوصی تصرف شال ہے

# خان اختر ندیم نقشبندی کی نعتیه خدمات

مرتیب و قدوین به شیخر اواحمد دیسری اسکالر شعبه علیم اسلای جامد کراچی مدیر "محدوانعت" کراچی

مان اخر مريم كالخصيت اكيدى كادرجد كمتى بـ

نتیب ایوان نعت و نعتیہ شاعر کی حیثیت سے شہرت رکھنے وال فحرِ سندہ نعت کمپیئر خان اختر ندیج انتشاندی تحریر و تقریر کے میدان کا ایک ایسا شرسوار ہے۔ جوایک طویل عرصہ سے دیجی قال بی اینے آئی کم لاست دکھا کر مجان مصطفیٰ میں ہے داوو حمیین حاصل کردیا ہے۔

فان اختر ندیم کے وجود میں عشق مسلفی میں کی روشی کا ایسا سمندر موجز ن ہے جس سے ہرائل ول مستفید ہوتا نظر آتا ہے۔ جب کہ ہرا کیک سے خندہ پیشانی سے لمنا ملاتا اس کا شعار ہے۔ ویسے تو حیدرآ ہوشی نعت پرتحریری کام نہ ہونے کے ہرا برہے۔ محر پھر بھی خان اختر ندیم اپنی بساط میں دیجے ہوئے کے دنہ کے تحریری کام أداب بنطانه

ے والد گرامی کے در جات عالی کو بلند قر است. اور ان کا فیض خان اختر ندیم پر جمیشہ جاری دساری رکھے۔ آجن

وجيشهرت وانتياز

نظامت کا خاراس وقت می خان اخر سیم کی شاخت کا معتبر و متند دوالہ ہے۔
خان اخر یو یم کا خاراس وقت می مثالی نقیبا می نفل پی بوتا ہے۔ حیدرآ ہو میں ایسے
عینوں کی کوئی قدر نیس اس قدری تا غیر شیر یہ زبان گفتگو کرنے والے صاحب طرز
نقیب محفل کو تو بہت آ کے ہوتا جا ہے تی محر حق ہے کہ بیاب بھی اپنے منصب کے
اختبارے بڑے مرتب پرفائز جیں۔ انہیں سیال از بھی حاصل ہے کہ وہ پاکستان کے
تقریباً تمام می نامور علائے کرام فرا و حضر گان ایر ت خوانان رمول الفت اور نعت کو
شعراکی نظامت کا شرف حاصل کر بچے ہیں ۔
تصفیف و تا لیف

اس حوالے سے خان اخر عربیہ نے متفرق جہات میں جوہر دکھائے بیں۔ پاکستان کے تقریباً ہرا خبار رسائل و جیز مدیس ان کی بجوں رکھی گئ کہانیاں مضایمن تبعرے منظومات اور تعیس شائع معدیجی بیں۔ان کی نمایال تعنیف و تالیف کا جائزہ پھھائی طرح سے ہے۔

1) اخبارجہاں ش 7 جورائی 1974 وکوسیجی کے لیے سب سے پہانٹم شاکع ہوگی۔ خواکی ہمیشہ میا حدث کروں گا خواسے ہمیشہ محصیت کروں گا آپ کے والد بوی روح م ور شخصیت کے حال تنے ۔ آج بھی ان کا شار استاذ الاسائلة وش كياجا ؟ ب- وه ايك روحاني پيشوا أبا كمال ثناخواں وثنا كو تتے۔ اردو فاری اور صرف دنجو بیس متیازی مقام حاصل تی حقیقت بیه به که معزمت صوفی ماسترمنير خان صاحب رممت القدعديدي يوري زندكي عشق مصطفى عليفة كالملي تمونه تمي زہد و تقوی تازید کی جاری رہار حق کر آپ کا وصال بھی اوا یکٹی تماز فجر کے بعد ہوا۔ عوامی فلاح و بہود کے ہے بے شار کام کے۔ جامع مجد سرفر ز کالونی کے صدر اور ز كو و وعشر كيمنى كے جيئر مين رہے۔ كى ورى كن بين اور الكسين \_ كوش تشين آ ب كى سرشت میں داخل تھی۔اس ہے بھی بھی نام ونمود اور ریا کاری کوایے قریب ندآنے دیا - خان اخر عربیم کے والد کرای کی شاعری کا کشر حصد مدح مجوب علاقع بر مشمل ہے۔ صوفی مد حب کو با بدملت معرت علامه بیر سید جماعت علی شاه محدث علی بوری ادر صاجزادہ پیرسید محرصین شوہ جماعتی سے نہ صرف شرف بیعت بلکہ خلافت واجازت مجى مامل تنى اور مجھے ياد ہے كەمونى ماسرمنى خان صاحب اينے كھرىر برسال ارت شریف کی تقریب منعقد کرتے ہے۔ جس میں نامور ثناخواں اور شعرائے کرام کی كشرتعداد بردي عقيدت واحرام معشريب بوتي تقي - 1992 مين فان اخريد كوان كے والد بزر كوارئے حدوث واچارت عط فرمان \_ بب كرموني عبد بستيم خان نقشهندی مجی خان احد ندیم وخد ونت ب بور یک بین آب آب ایک وضعدار يرييز كاراورز بروتقوى يديمرف از محصيت ين - ين ووقوجبات اورتقع قات ين ك صبورات خان اختر ندميم كي زندى ش انقلاب بيدا مرديا ب-القدرب العزت ان

نتوی (شرید) (13) نعتیه انتخاب نندیده تمدیدهٔ اور اکل چیده مرتب معرد ف تنیب محفل ملک صوفی امیدیلی بهنم حیدر آباد انترو بوز

پاکتان کے کیرافیارات ورسائل جی انٹرویوشائع ہو بھے ہیں جب کہ
دور نامہ" پاسیان" حیدرآبوشی تین مرتبہ کھیل صفح پرائٹرویوز کی اش عت یو تی ہے
ائٹرویور چیئر جن برم فلاح طلعت صابر علی ایڈوکٹ ڈاکٹر سیدانوارا جمراحواز براجمہ
وار ٹی نے تحریر کے۔ جب کہ فان اختر تمریم کی واپسی کرجن ٹریفین پرمعرو ف سحائی و
کالم نگار عبدالوحید فوری کی جانب سے دیے جے عظیم الشان استقبالیہ کار پورٹ
دوزنامہ" کامیاب" حیدرآباد نے فویصورت کیٹ اپ کے ساتھ آ دیم مسؤیرٹ نکے
کی دریڈ ہو پاکتان سے اکر فعیس اور تقاریر نشر ہوتی رہتی ہیں۔
مطبوعہ کتب ہا سے نعت میں ان اختر شدیم نقشہندی
مطبوعہ کتب ہا سے نعت میں ان اختر شدیم نقشہندی

برشار نام کتب یا کشمائز حرت ماری کال مت فرید کاری کال مت مرت مرت کاری کال می کاری کال می کاری کال می کاری کال م مرت فرید کفت و مناقب مان اختر ندیم تعنیندی متبر 1998ء مرت فرید کمناقب کی سیدنا حبد الوباب اله اله طبح دوم 1998ء مرد اله اله اله اله 1990ء نام کتب مصنف مصنف احتراف (عوالت الاین کاربر به مناف اختراف (عوالت اله 1996ء) 2) سب سے پہلی افت 1978ء اخبار صدافت کراچی بیشہ ہے دل میں خیال محمد نظر دیکھتی ہے جمال محمد

3) ابتدائی غزل اقبار پاسیان سوریا اور تکس حیدر آباد 2 ستبر 1986 م لیول په شکوه سیانبیس ہے کول شکایت بھی کی تیس ہے

4) سب سے بہدا انعام -1978 وش مقابلے صن قرائت جمی اول بوزیش

ال رسائل وكتب من تبعرول نعتول اورتعارف كي اشاعت بهو كي

 اعتراف2001ء

خان اخر عربی فتشندی شعبہ نعت کے بہت مخلص، نمان ہیں۔ حیدرآباد
کشعراء کی حدوفعت نگاری کو پاکستان مجرش متعارف کردا ۔ بیل خان صاحب نے
مثالی کردار ادا کیا ہے۔ '' اعتراف'' خان اخر عربی کی و الآب ہے۔ جس میں
نوجوان نعت کو دیدرج خوان رسول مخط عزیز الدین خاتی انقادری کی نعتیہ شاعری
کے حوالے سے پاکستان کے ممتاز شعراء حصرات کی آرا ادمنظوہ ت شافل ہیں۔
اعتراف حقیقت کے حوالے سے بیا کیک عدہ کاوش ہے۔

آ واب نظامت

فظامت نقابت اور کمپیئر گل ایک ایم فنی شعبہ ہے۔ بیس علامات اعلان
کے دسرے جس می شامل کی جاتی ہیں۔ قان اختر عدیم نے اس آن کو مرتظر رکھتے ہوئے
آ داب نظامت تری کے ہے۔ موصوف نے اس پڑکشش کسیب جس آ داب نظامت
کے حوالے سے ناظم کی خوبیاں معرکت الآراحمد بیو فعتیہ اشعار قطعات منا قبات اور
ان منظو مات کوشامل کتاب کیا ہے جو بیر مرصہ 32 سال سے مختف فریمی اور فعتیہ
عافل جس سنا کرداد و خسین حاصل کرتے رہے ہیں۔ انشاعہ ادا آ داب نظامت ان کی
و کے کہ کابوں کی طرح اثر پذیر اور متبول بارگاہ و تب العزامت تا ہے تا ہوگی۔
بہیا دی معلومات

صوفی ماسر منیر خان ساحب پیکر اکبر آباد سی نشیندی جماعی کے صاحبز ادے کا پیدائی تام خان اخر تدیم ہے۔ یہ اختیام حرفیقت نقشیندی قادری

6 نعتیه مجمور کلام ساتی کوژ اس اله این بل 2004 و 2006 میلادستان الله 2006 و 2006 میلادسته پنجتن عبد العمد قادری مرتبه: .. قان اخر تدیم 2007 و 2007 و نعتیه مجموعه کلام سماتی کور علیه الله میرانید و کلام سماتی کور علیه میرانید و کلام سماتی کور علیه میرانید و کلام سماتی کور علیه کار علیه میرانید و کلام کار علیه کلام کار علیه کار علیه کلام کار علیه کار علی کار علی کار علیه کار علی کار علیه کار علیه کار علیه کار علی کار علیه کار علی کار علیه کار علی کار علیه کار علیه کار علیه کار علی کار علی کار علیه کار علی کا

ساق کور علاقے خان اخر عمری تشخیدی کا اولین نعتیہ ویوان ہے۔جس کی طباعت کا اجتمام الجمن عاشقان مدحت مصطفی تلاہے اور آفیا ب اوب حیدر آباد نے کیا ہے۔ انعتیہ مجموعہ کا اجتمام الجمن عاشقان مدحت مصطفی تلاہے اور آفیا ب اوب حیدر آباد نے کیا ہے۔ انعتیہ مجموعہ کا ام سرق کور علاقے وراصل آفاعلیہ السلام کی ان پر بین کرم قربائی کا انعام و فیضان ہے۔ اس کی آب مبارکہ میں 128 اردو تعییں 10 سندھی تعییں اور 31 منا قبات شامل ہیں۔

ميلاوحتان علف

خان اختر ندیم نتشندی ایک قابل فخر اور لائق عزت انسان میں۔ جن کے
اندر محبول کا سمندر سایا ہوا ہے۔ یہ براو عشق رسول انگائے میں سرشار رہے ہوئے ترقی
فعت کے لئے بکھند کھ کرنے کی فکر میں گے رہے ہیں۔ چنانچ انھوں نے اپنی رات
دن کی کر ل قدر محنت ہے نہ بسطانی مطابق اور اخل ق مصطانی مطابق کو عام کرنے کے
دن کی کر ل قدر محنت ہے نہ بسطانی مطابق اور اخل ق مصطانی مطابق میں میں ان کے کے
معراج مصطانی مطابق اور فضائل وُرود کو ہزے دل پذیر آور پزیشش انداز میں میان کیا
ہے۔ ان کی یہ کتاب عاشقان رسول ملے قاور بالخصوص میلا دخواں خواتی نے لیے
ایک عظیم مرمایہ ہے۔

جیلانی ہیں۔ شعر دخن میں تدہم ہیں۔ ٹجی ادر نعتیہ زعر کی میں خاں صاحب۔ بھائی جان سر فحر منت استاد اور فخر سندھ جیسے محبت بھرے القابات سے بکارے جاتے ہیں۔ انعامات واعز ازات

فان اخر ندیم کے اعزازات وانعامات کی تفصیل مختصراً ملا حظہ بیجیے۔ ابہترین نعت کمپیئر ایوارڈ۔1982 منجانب آغا کوھرمجس حساب پاکستان استو شید نخسن کارکردگی نعتیہ ایوارڈ۔ 7 8 9 1 فیم بیک منعل ۔ برم نوجوانان شائے مصطفیٰ حیورا ہاو

٣- بيث نعت يرفارمرالوارد -1992 - عابد في منده يوته ويلفيرَ سوسائل حيدرآباد

مى رنعتيد خسن كاركروگى رحمت ميذل ايوار في 1996 - بدست ممتاز ما برقانون جسنس رحمت جعفرى وجيئر مين هلعت صابر على ايد وكيث برزم فلاح پاكستان -٥ - بهترين كهيئر ايوار في 1996 - اميد على بهنم بانى الجمن فروغ نعت پاكستان ٢ - رحمت للعالمين نعت ايوار في 1997 - بدست البيكر قومي آسيلى الجي بخش موم وادور الى ج سير قر الزمال شاوية غاكو برعلى مجلس حسان پاكستان -

٤- تاج پوشى - 2 اپريل - 1998 - كمپيئر ونعت كومحد احد شخ قادرى سرفراز نعت كوسل حيدرآباد

٨-تاج پوتی ٹرانی ایوارؤ - 1998 میونی خلیل الرجمان ، قاتلی رحمانی قاوری
 ٩-تاج پوتی منظوم تراج عقیدت ایوارؤ - 1998 سیف تحد شخ - انجمن فدائیان پاکستان -

۱۰-تاج بوشی شیلتر ابوار فر 98 و 19 انسار احمد سیروردی برم غلامان صطفی میلین حدیدرآباد

الدرود كا خات خاد في نعتيدا إوارة - 1999 - بدست مبارك معزت على مديروفيسرة اكثر المرادد كا خات خاد في الإسلام المرادد كا خات خاد في المنظمة الموارة الموارة المؤلم المؤلم المؤلم المؤلم المؤلم المؤلم الموارة المحارة المحارة

سال مديندا بوارة وميذل \_2000 \_أعظم قريش المدنى \_ ماستر محمد قاسم نعت كنسل حيدرآ باو

المار بهترين نعبت كهير الوارة و سند 2000 - مافظ سمي افرحمان والمجمن فدائيان دسول معلق حيدرا باد-

10۔ شعبۂ نعت کمیسیر تک کی اعلی ترین خدمات کے اعتراف میں رحسن کارکردگی نعتیہ ایوارڈ-2000۔ مشاور تی کونسل معدر نعت نی نطقہ ایوارڈ۔

\* و-الواردُ رئيس المجد وين معزت قارى محد طفيل تعشيندى ـ علامه قارى محد سليمان الوال آف مرويد ـ 2001 ـ المجد وقر آن اكيدُى بإكتان ـ

۱۵ ایقم فرایخ تحسین ایوار و 2004 مای محمد یوسف اقمرانگش پلک اسکول گلفس مالی ۱۸ میل انگلس پلک اسکول گلفس مالی ۱۸ میل و اطلیف ۱۸ میل و اولیف میل داد و بیستر سر و رئواز بجمهیو بیشا و اطلیف علمی واد فی مرکز کوفری دادو

19\_ بهترين من خوال وكميسير الوارق 2007 - محمد اكرم اختر القاوري يختصيل ناهم صابر

یں کو تیں تھا میری حقیقت بھی کی کھے دلتی اُن کے کرم نے زیست کے رہے پڑھائے ہی

وجه تصنيف آداب نظامت

و کھیلے زیانے میں مشتر کری الل میلاد کا طریقہ راستان الیکن اب اندار اور طریقہ بدل کی ہے۔ نیاد و تر کافل نعت منعقد کی جارتی جیس، چس بی شاخوانوں کو افزادی طور پر دعوت نعت دی جاتی ہے۔ یہ الی صورت ہے کہ جس بی ناظم محفل معفن ساناؤ نسریا کمپیئر کی خدمات اشد ضروری جیس شام ملوم وفنون کے محفل معفن ساناؤ نسریا کمپیئر کی خدمات اشد ضروری جیس شام ملوم وفنون کے محتب اور درس گاجی موجود جیں۔ گرفن نظامت کی با قاعدہ محفظ درس گاہیں۔ چنانچہ اس فیامت کی با قاعدہ محفظ درس گاہیں۔ چنانچہ اس فیامت کی با قاعدہ محفظ درک گاہیں۔ چنانچہ اس فیامت کی با قاعدہ محفظ درک گاہیں۔ چنانچہ اس فیامت کر ہے کی آئے۔

داظم محفل كي ذمه داريان اور اوصعاف

کپیئر با صاحب ، نار دوصله مند اور تعنیم یوفته سید این ای واجه در مت اور شیری زبان بود بنا مسافی ساخته سیم سیم الله ای این به در بنا محب مسطفی ساخته سیم رشاد بود به الم طب دت پنده بخوش الباس اور نماد کا یا بند بود به نام محد من محبر اور دیا کاری سے حقیالا مکا ما شیخ کی کوشش کرے دین مور و بیاد می این مور درجه بیاد کرے دین مور و بیاد کو اناین رسول الله و و داری سے حد درجه بیاد کرے دین محمل کو ایس طرح منظم کرے کہ کی نعت خواں سے مام اور معزز و فضی کی دل آزاری سے بواور محفل کا فروق برحت با جائے کہ اوراب مقطامت میں میہ بات بھی مردوری ہے کہ نائم محفل کو تقیر نہ جائے ۔ بیسب کی تعظیم و تکریم اکر اسے کہ کا خوا میں بات بھی مردوری ہے کہ نائم محفل کو تقیر نہ جائے ۔ بیسب کی تعظیم و تکریم اگرا ہے۔ اس کے کہ مردوری ہے کہ نائم محفل کو تقیر نہ جائے ۔ بیسب کی تعظیم و تکریم اگرات ہوال کی طرح واد

حسين قائم خانى الجيئر \_ المجمن فدائيان رسول حيدر آباد \_ ٣٠ \_ نحسن فعت رسول الفضة الوارة بحثيبت جي - 2007 \_ سيد اكرم على شاه المجمن اساتذه يا كستان

الا يبشن حيد ميدا والتي تفاقية بحسن كاركروكي الوارف فيان اخر تديم بحيثيت كيدير 17 يبس فوراني 17 يفت كو شاهر - 8 0 0 2 - بدست مبارك حضرت علامه كوكب فوراني اوكا ذوى الحاج كلفن البي فريدي في تفسيل عاظم الجيئر من برحسين قائم فاني محود قريشي في المن البي فريدي الجمن فدائيان وسول ملاقية في اكتان و المركي المتر القادري المجمن فدائيان وسول ملاقية في اكتان و المستركية والمناف ورسرى برائذ آف برفاره من الوارف 8002 - قارفت أينال والمشركية في اكتان و مبدالي وروماني عبد لوديد فوري سيده بدالحديث و المناف عبدالي وروماني عبد لوديد فوري سيده بدالحديث و المناف عبدالي ومدالي ومعاني عبد لوديد فوري سيده بدالحديث و مبدالي ومناه ميا وحضرت صبا المرآبادي الوارف 2007 و 200 م

10- فان اخر مرئي 25 ساله نعته فدمات الدارد - 2009 - ميدالرجم كدى - آل إكتان كدى پنون البج يشتل موسائل بدست الجيئر مسارقاتم فانى يحرعرشادكدى -٢٧ - بهلى بارزيارت عمره - 1987 - بهمر و معزرت الحاج سيد قمر الزمال شاه -١٤ - دوسرى بار زيارت ممره - 2009 - بدسيله معزرت الحاج كلشن البي \_ جيئر مين ٤٠ - دوسرى بار زيادت ممره - 2009 - بدسيله معزرت الحاج كلشن البي \_ جيئر مين ٤٠ الموركين درگاه كن سيدنا عبدالوماب شاه جبيلانی فرست ايبري مي ايش الوارد الحق البيري مي ايش الوارد الق اعودُ بالله من الشيطُن الرجيم ٥بسم الله الرحمن الرحيم

# ابتدانيه

آج میں یہاں جس ذات بایرکت کے کہ فیر کے لئے عاصر ہوا ہوں وہ ذات با کمال و با جمال الی ہے کہ جس کے دوئے تابال کے سائے فور ہید جہال تاب کی روشی بھی مائد ہے۔ جس کے درخ انور کے سائے تمام رعنا نیال نظام ہیں۔ جس کی شہنشای کے سائے بیزے بیزے تاجور۔ اولیا ہ۔ اصفیا ہ۔ فوث۔ قضیہ۔ ابدال۔ قائدر۔ اہل علم و دانش کے تری کے تاجور اولیا ہ۔ اصفیا ہ فوث۔ وقصور جن وائس و قائدر۔ اہل علم و دانش کے تری کے دال وحش و طیور ۔ حور وقصور جن وائس و فلک ۔ سب می سرگوں ہیں۔ اور آپ کی شان تو سے کہ جہاں جر بل بھی باتھ عالم سے کھڑے ہیں۔

اب میری تکاموں میں چھاتھیں کوئی جیسے میرے سرکار جین ایسا جیس کوئی

دیکمی جیس می نے اگر شان مصطفی و کیمے کہ چرکیل ہے دربان مصطفیٰ

پیاران کا اگر ماصل ایمان شب گا موس آو بزی بات ہانسان مدینے گا تعظیم محمد می تو ہے جان عبادت عابد کوئی کتنا می ہومسلمان نہ ہے گا و خسین دے کر ہمت افر انی کرتے رہیں تا کدہ محفل کو خوب سے خوب سنوار نے علی اپنا فعال کرداراوا کر سے ہیں کہ بیئر کم دفت میں انہی گفتگواور خوبصورت اشعار سنا کر سامعین کوستنفید کر سے ہی تاظم میزیان محفل سے ذیر اثر ہوتا ہے۔ اسے جائے کہ وہ دوران محفل میزیان سے مشاورت کرتے ہوئے انکی بات کو اولیت و سے در ان محفل میزیان سے مشاورت کرتے ہوئے انکی بات کو اولیت و سے در انہا آ داب نظامت میں ہیں ہیں ہیں جائے گ

آ داب نظامت کی تصنیف و تالیف کا اصل مقصد یہ ہے کہ ناظم محفل ہیں شعور دائم محفل ہیں شعور دائم میں بیدا ہو۔ معرک الآرای کشش عشق رسول مطابقہ ہے مزین اشعار کے استخاب سے مدد لے۔ انجی اور معیاری گفتگو کا سلیقہ پیدا ہو۔ مجھے امید ہے کہ اگر تاظم محفل نے ان لگات برحمل کیا تو

وه ایک مثان تقیب محفل من سکتا ہے۔ الحمد الله اخواج کو بین مقالی کے حمد تے اور وسلے سے براورم خان اخر ترقیم آواب نظامت میں اس تمام امور کو یکی کرویا ہے۔ اس سے ہرعاص رسول منافق مردو خواتین بکمال مفید ہوسکتے ہیں۔

\_ آداب بظامت

پھر جھے خط کار سر ایک معمولی نعت کمپیئر اس محبوب بے مثال کی تعریف و
توصیف بیان کرے۔ بیناممکن ہے۔ جھے بیل نہ جاتی وسعدی کی ہوتی ہے۔ نہ بی
احمد رضا اور بہنراوجیں وجدان ۔ نہ بی اقبال اور شرہ الطیف جیسا عشق اور نہ بی فوٹ
اعظم معین و فرید اور لعل شہباز جیس انداز فلندرانہ میں سرایا تنفی اور مدھیا
محبوب میں لب کش کی ۔ ذبال کھلے تو کیسے کھلے یو ابنی مشکل مرطد ہے۔ عالب
نے کیا خوب کہا ہے۔

نالب ثنائے خواجہ بدیز دال گزاشتیم کان ڈاست پاکس مرتبہ دان تھر است لیکن اس آئیندش ٹمانلیستے کی تعریف وقو صیف اور مدح وثنا بیان شکریں تو پھر کس کی تعریف کریں ۔۔۔ بھنیتا مدح وثنا اور تعریف وقو صیف القدمو وجل کے بعد آپ مستهانی می کوزیما ہے۔۔

میں شکر گزارہوں کہ آپ نے بھے اس وجدانی۔ حقائی۔ مرفانی۔ یزوانی۔
ایمانی۔ مرفانی۔ رحمانی۔ کیف آگیں۔ جال نفین وول نفین۔ روح پرور۔ معطر معظر۔
آرائش وزیبائش۔ سے حزین ومعمور۔ مشق ومستی سے ٹیریز۔ محفل و کرشان صبیب
الرحمان الفیقہ میں بلا کر جھے اور ہم سب کوالٹد زب الموز ت کے شاہکا یو تقیم معزت جمد مصطفی ملائے کے ذکر عائی شان سے کما حقد تیش یاب ہوئے کا موقع عطافر مایا۔ اللہ مصطفی ملائے کے ذکر عائی شان سے کما حقد تیش یاب ہوئے کا موقع عطافر مایا۔ اللہ تب الموز ت ہم سب کے درجات بلند فرمائے۔ آئین۔

تعت بی ول کے دھڑ کنے کا ڈراجہ ہے ترتیم نعت بی میری ساعت مری بینال ہے نعت مرکار دو عالم بی کے جاڈ سوا ورند کس کام کی ہے تعمید سمویائی ہے

### (صاحبزاده خان اختر عرتيم نقشوندي)

مطلب نعت بال کرنے کی نیت کی ہے اس طرح تیری ہی مقلت بیں اضافہ ہوگا تھوے بہتر تو بہت آئیں کے لین اے ندتیم کمپیئر کھے سا کوئی اور نہ پیدا ہوگا

(صاحز اده خان اختر عرتم نقشندی)

ردتی ہے جس شے پر نظر اس میں نظر آتا ہے تو

تیرا ندیم ہے تو

کیے تائے کی ہے تو

اذل مجی تو آخر مجی تو باطن مجی تو ظاہر مجی تو

مجد میں تو کیے میں تو میرے ہر اک مجدے میں تو

قادر کوئی تھے سا نہیں عابر کوئی مجھ سا نہیں

از نے دیے ہیں جان وتن

بی ختم ہے میرا خن

(ماجزادہ خان اخریتم انتہدی)

## نعت سقيد رب كريم ہے

نعت ہے دونوں جہاں جمی ارزوال نعت ہے خس طلب کا واسطہ نعت ہے باغ فیہ بطحا کا پھول نعت ہے ہوتا ہے قرب حق نصیب نعت ہے ہوتا ہے قرب حق نصیب نعت ہے ایمال کی دولت ہے گماں نعت سے پرواز بالی جرئیل نعت کا مکر جہاں میں سعب ہے نعت صمیر حضرت الیمب ہے نعت کا بانی ہے زب زوالجال
نعت ہے شاہ عرب کا واسط
ورحقیقت نعت ہے شن رسول
نعت اظہار جمال مصطفیٰ
نعت اظہار جمال مصطفیٰ
نعت نے جاتی ہے آ قاکے قریب
نعت ہی تعلیم ہے آ واب کی
نعت خوال شخے آ وم ونوح وظیمل
نعت نوس کی حیات قلب ہے
نعت کویا کریے بیقوب ہے
نعت محل کویا کریے بیقوب ہے

R

- اسائسوں کی کھراد میں تو ہے
 - کلے کے اذکاد میں تو ہے
 مرشد میں سرکاد میں تو ہے
 - مرشد میں سرکاد میں تو ہے
 - معرا میں گزاد میں تو ہے
 - معرا میں گزاد میں تو ہے
 - ہواوں کی مبکاد میں تو ہے
 - کھواوں کی مبکاد میں تو ہے
 - کھواوں کی مبکاد میں تو ہے
 - کھی میں چواد میں تو ہے

روح کے نازک تاریش تو ہے
قرآل کے افرار میں تو ہے
مید میں بازار میں تو ہے
ماشق میں تو یار میں تو ہے
دریا میں کہمار میں تو ہے
کیت میں اولہ زار میں تو ہے
خوں میں تو خار میں تو ہے
سامی میں مورور میں تو ہے
سامی میں مورور میں تو ہے

تو ہے سب کا پالنے والا ہر مشکل کو ٹالنے والا ہم تھا تدہم ماجزو خشہ تو نے دکھا یا سیدھا رستہ (صاجزادہ خان اخر ترجم نششندی)

ارب! برا مولا ہے تو بندہ بول میں آقا ہے تو ادراک ہے بالا ہے تو بندہ بول میں آقا ہے تو ادراک ہے بالا ہے تو رزاق ہے بتا ہے تو ارزاق ہے بتا ہے تو بر دل میں تو بر جا ہے تو ادبی میں داتا ہے تو پہتی بول میں بالا ہے تو ادبی موں میں املی ہے تو تطرہ بول میں دریا ہے تو ذرہ بول میں صحوا ہے تو تطرہ بول میں دریا ہے تو ذرہ بول میں صحوا ہے تو

### يشهول

تو نے کا حرہ ہے اور میں ہوں دل ورد آشنا ہے اور میں ہوں تسور میں ہیں جنت کی بہاریں دیار مصطفیٰ ہے اور میں ہوں مری کشتی نہ آئی ہنور میں نگاہ نا خدا ہے اور میں ہوں شہریدان وفا کی یاد آئی خیال کربا ہے اور میں ہول گزاروں عمر قدموں میں تمہارے کی اک مدعا ہے اور میں ہول تگاہوں میں ہے بگر ان کا میلوہ ہے اور میں ہوں نگاہوں میں ہے بگر ان کا میلوہ ہے اور میں ہوں

( معرت صوفی اسرمنیر خان پیرا کبرآبادی نقشهندی مجدّ دی جاعی )

معزاج کے لئے جو حیب خدا چا؛

ہو سلام قافلہ انہا چا!

ہو سلام قافلہ انہا چا!

ہوداز تنے جو حب مراحب مجولے

لکن صفور کیا شنے یہ کس کو پہ چاا

مزی جل اُدھر عی جدھر ناخدا چاا

ہنگام نزع کون ومکال و کیجے رہے

ہنگام نزع کون ومکال و کیجے رہے

وے کر نشان منزل نش ناخدا چاا

شیدة یدم سحابہ مجی ہے نعت
حضرت حتان نے رکھا قدم
نعت سے حیور کی حیات نی
آل شاہ دین کا دل نعت ہے
دب کے سب بیادے دے بی نعت کو
اپ دل ہے بی ساکرتے تھ نعت
ہر گھڑی دہے تھے نوش مال اور گمن
نعت سے قائم ہے شان سی بخش
نعت سے قائم ہے شان سی بخش
نعت ہے قرمود کا مائی کی سائت
نعت سے قائم ہے شان کی سائت
نعت سے قائم ہے شان کی سائت
نعت سے قائم ہے شان کی سائت

مصحف وی کا فلاصریمی ہے نعت اور کرم نعت کو صدیق و فاروق و فی افعات کو مادیق و فاروق و فی فاطر کرم فاطر کر جرا کی منزل نعت ہو اولیا سارے رہے ہیں تعت کو فیت کو فیت کو فیت کو فیت کو فیت کو فیت بھی خوبین الدیں حسن نعت بھی خوبین الدیں حسن نعت بھی خوبین فٹان سینے بخش نعت ہی تھی ہوئے وقدی کی شاخت نعت ہوئے وقدی کی شاخت نعت ہے جاتی وقدی کی شاخت نعت ہوئے وقدی کی شاخت نعت ہے جاتی وقدی کی شاخت نعت ہوئے وقدی کی شاخت نعت ہے جاتی وقدی کی شاخت نعت ہوئے وقدی کی شاخت نعت ہوئے وقدی کی شاخت نعت ہوئے وقدی کی شاخت کے ایمان کی خوبی ہوئے وقدی کی شاخت کی احمد رضا کی جان ہے نعت سے تھیر ہے ایمان کی خوبی ہوئے وقدی کی شاخت کے ایمان کی خوبی ہوئے وقدی کی شاخت کی خوبی ہوئے وقدی کی شاخت کی شاخت کی خوبی ہوئے وقدی کی شاخت کی خوبی ہوئے وقدی کی شاخت کے خوبی ہوئے کی شاخت کی خوبی ہوئے کی خوبی ہوئے کی کی خوبی ہوئے کی خوبی ہوئے کے کہ ہوئے کی خوبی ہوئے کی کی خوبی ہوئے کی خوبی ہوئ

ال کے سب نعت پڑھتے ہیں ترتیم نعت ہے اک سقید زّتِ کریم (صاحبزادہ خان افتر ترتیم نعشبندی)

\*\*\*

جوجائے

جو مجی ان کا غلام ہوجائے۔

التاجدارول الل الم جوجائك

رحمت من مذام ہوجائے۔

ور پ حافیر غلام جوجائے

طاب دیر سب جی اے آتا

جلوءُ تحسن عام جوج*ا*ئے

شاہ بلیٰ کے در یہ جائے کا ۔

اے خدا ہتمام ہوجائے

وه باليس أكر مسية عن

ویش خدمت شلام ہوجائے

حير حميا ذكر أن كالمحفل عن

اب درٔود د سلام موجائے ذکرِ یادِ رسول میں پیکر

عمر ساری تنام ہوجائے

(حصرت مونی ماسترمنیرخان پیکرا کبرآ بادی نششندی مجد وی جماعتی)

حضور پاک تا

بہت تھی دُور منزل پاگیا ہوں حضور پاک کو یاد آ میا ہوں نہیں طاقت تھی آتے کی ذرا بھی کرم ہے اُن کا بلوایا گیا ہوں

دل بھی ای کے ساتھ جوا جان بھی چلی جب جانب مدینہ کوئی تفاظمہ جلا

پیکر ب بل حال یمان جموستے رہے میں نعت پڑھ کے اپنی عقیدت سُنا چلا ( حصرت صوفی ہ سٹرمنیر خان پیکر اکبرآ بادی نقشبندی مجة دی جماعتی )

رحمته للعاكمين ينتخ

خدائی ہے بہ شان بندگی استے قری تم ہو

وہ رب العالمين ہے رحت للعالميں تم ہو

بهار اوليس تم مو عال ول اليس تم مو

كه آغاز دو عالم اور حتم الرسليل تم بو

حمد ن کے معلم ہو میادت سے قری تم ہو

بدؤنياجس سے زينت باكن وه شاودي تم مو

عمی کاروں کو کیا ڈر ہو حساب روز محشر کا عمر معطفے جن شفاعت کے ایس تم ہو

مجمی تختیل میں شان شفاعت جلوہ فرما ہے مجمع من تقدیم شان شفاعت جلوہ فرما ہے

مجى بيم تقور بين تيتم آفرين تم مو

تمہاری شان دشوکت کا بیاں پیر ہے کیا ہوگا غلام آونی ہے جس کا طاقر سدروائیس تم ہو

(حضرت صوفی ماسرمنیرخان پیکرا کبرآبادی تعشیندی مجد دی جماعتی)

نعتين

قطعات منظو مات

اور

نثرى نعتيل

یباں بنتی ہے تقدیر دو عالم ای باجٹ مدینے آگیا ہوں اشہ بطحا کے ردھنے پر بنگئی کر کبوں گا لیجے ہیں آگیا ہوں ایس معدقہ بی تو ہے ہیںرے نی کا بہت چھپے تھا آگے آگیا ہوں انہیں ہے خوف ٹاکامی ذرا بھی مدینے کے قریب اب آگیا ہوں کہ کسی ہے خوف ٹاکامی ذرا بھی مدینے کے قریب اب آگیا ہوں کہ کسی رویا بیٹ کر جالیوں ہے کہی گرا گیا ہوں کسی ہے بھی نے پی گرا گیا ہوں کسی ہے بھی ہے کہی کرا گیا ہوں کسی ہے بھی ہے کہی کرا گیا ہوں کسی ہے بھی ہے کہی اگیا ہوں کسی ہے بھی ہے کہی کرا گیا ہوں کسی ہے کہی ہے کہی کرا گیا ہوں کسی ہے کہی کرا گیا ہوں کسی ہے کہی ہے کہی کرا گیا ہوں کسی ہے کہی کرا گیا ہوں کی کہی کرا گیا ہوں کا کہی کرا گیا ہوں کا کرا گیا ہوں کیا کہی کرا گیا ہی کہی کرا گیا ہوں کا کہی کرا گیا ہے کہی کرا گیا ہوں کسی کرا گیا ہے کہی کرا گیا ہے کرا گیا ہے کہی کرا گیا ہے کرا گیا ہے کرا گیا ہے کہی کرا گیا ہے کر

# ناتم الرسلين تلك

آپ کے نام پر جو فا ہوگئے الیتیں دو قرب فدا ہوگئے اور تی فور آیا نظر ہر طرف جس طرف آپ طوہ تما ہوگئے آئے دُنیا جس طرف آپ طوہ تما ہوگئے آئے دُنیا جس خاتم المرطیم ہے تیں ہم آپ کے نام ہے ہم فدا ہوگئے خون محشر ذرا بھی نہ اُن کو رہا جو غلام رسول خدا ہوگئے دُر کے شر ذرا بھی نہ اُن کو رہا جو غلام رسول خدا ہوگئے ذکر پاک آپ کا جب نے کیا ہوگئے دکھتے کیا ہے کیا ہوگئے گر جی اُن کی حمرانیاں جب مصیبت میں حکل کشا ہوگئے ہوگئے ہوگئے جر مصیبت میں حکل کشا ہوگئے

(حطرت صوفی ماسٹرمٹیر خان پیکرا کبرآ یادی انتشیندی بجد دی جماعتی ) نیک ملت ملت ملت ملت فراق شی میوراور حالب وصال می فائیت و است ہے۔

اس کے سہبا اخر نے کہا کہ

قدت وہ معراج فن ہے کہ جس کے پہلو سے بیٹار

یہ میر سے ریک سخن کو ریک ویٹی ہے ہزار

یکھ وعاکیں، یکھ فضائیں، یکھ صدائی ، یکھ میں کو بیٹار

یکھ وعاکیں، یکھ فضائیں ، یکھ صدائی ، یکھ اول میں

یکھ حبت ، یکھ مقیدت ، یکھ ادب لکھتا ہوں میں

فدت جب لکھتا اول میں

فدت جب لکھتا اول میں

فدت جب لکھتا اول میں

جب نہ تھا کوئی اکیلا تھا وی اجب نہ ہوگا وی جب نہ ہوگا وی اس ہوگا وی صلح کرتا ہے جو پیدا شام ہے ایٹا کرتا ہوں اس کے تام ہے

(انوارمزى)

گزری ہے رات ساری جمائی ہوئی ہے ظلمت ٹارے بھی آساں کے بین آج کور خیرت ففلت کی فیدش ہے اس وقت ساری فلقت اک ہم جیں خیرے در ی امیدوار رحمت بین خیرے در یہ امیدوار رحمت

نعت استحکام ایمان کی دلیل ہے

نعت رسول ثابت آدم ب\_ بجات نوح ب نعت وفاع ملل برانعت

مغائے اساجل ہے۔ نعت گربہ بینوب ہے۔ سوائٹی بیسف ہے۔ تعت میر ایجب ہے۔ نعت اجابت کے درمیان ہے۔ نعت اجابت بیس ہے۔ درخقیقت نعت درسول انتی اور دسول طابعہ کے درمیان ایک مختفر ترین داستہ ہے۔ نعت ملب اسلامیہ کے لئے داؤ سریری ہے۔ نعت ملب اسلامیہ کے لئے داؤ سریری ہے۔ نعت کی سرشاری ہے۔ نعت واردات قبی کا اظہار ہے۔ نعت کا سرشاری ہے۔ نعت واردات قبی کا اظہار ہے۔ نعت عاشقان مصطفیٰ کے لئے عشق کا پر تو جمیل ہے۔ نعت شوق و ذوق والہانہ کے لئے ایک عاشقان مصطفیٰ کے لئے عشق کا پر تو جمیل ہے۔ نعت شوق و ذوق والہانہ کے لئے ایک کی مستند ترین سند ہے۔ نعت استحکام ایمان کی دیل ہے۔ داو باطن کے سے سراغ ہے۔ نعت جمی قبر کے لئے تعتم داہ ہے۔ عالم

چشم زمس کی قسول کاری ہوتی شاب سوس کی خوش گفتاری۔ نسیم سحر خرامال ہوتی شہر مردی بہارال رفضال ہوتی شارت ویلیے کی دل رہا صفاعی مردی بہارال رفضال ہوتی شد رقعی طادی ہوتا نہ چینے کی دل رہا صفاعی آتیں۔ شیر ہوتے نہ جمر حداد بیب کہ کھی نہ ہوتا آپ او ظلفیت کا نتات ہیں وجہ وجو دِکا نتات ہیں۔ مبنب کا نتات ہیں۔ اور یہ پوری کا نتات آپ کا صدافہ ہے۔ وہ خفا نے ہے مرتبہ تھے کو دیانہ کسی کو طلا وہ خفا نے ہے مرتبہ تھے کو دیانہ کسی کو طلا کہ کام جبد نے کھائی شہا ترے شہر و کلام و بنتا کی قسم کہ کلام جبد نے کھائی شہا ترے شہر و کلام و بنتا کی قسم کو اعلی صفرت)

وہ ماہ عرب، ماہ میں ماہ لقا ہے تصویر ہے، توریہ ہے تجیر ہے اکیا ہے اک تورکا میکر ہے کہ بردے جی فدا ہے آفاق میں ایما نہ تو ہوگا نہ ہوا ہے (ادیب دائے اوری)

کتی قومتی وجود علی میں دہر علی نکک و تر کے رہیتے ہے ہم نے بنباد دوئی رکھی یاد خیر البشر کے رہیتے ہے (قمرالدین البحم)

ذکر محبوب کی سید محفل ہے۔ اس میں حاضر ہے جو بھر یارب مرد و عورت گدا بغریب و ابیر سب کی بوری مرادیں کر یا رب (جیل قادری رضوی)

\*\*\*

ر اشکرجس سے اوا کروں مرے مند جس الی زبان کہاں

یہ لواز شیس تری ہے بدہ بے یہ عنایتی تری دم بددم

قو رجیم ہے تو کریم ہے مری لفزشوں پہ نظر ندکر

تری خوصلا مری خوضلا ندوہ تھے جس کم ندیہ جھے ہی کم

مقدورہ میں کب ترے ومغوں کی رقم کا حما کے خداو مہ ہے آو لوح و تھم کا جند جند جند جند مری اعتبائے ٹارش کی ہے ترے نام سے ایٹرا کر رہا ہوں

\*\*\*

# ظقت كاتنات على

یعنی اے نی ایک ایک ایک آپ نہ ہوتے توش بیکا کانت کیکٹی نہ کرتا نہ افلاک ہوتے نہ فضا کیں ہوتے نہ فضا کی ہوتے نہ فضا کی ہوتی نہ ہوتی نہ اور وہ ہفت کی تابانی ہوتی نہ فضا کی ہوتی نہ ہوتی نہ اخر ان شب کی سیماب پائی ہوتی نہ زہرہ وشتری شن رمحالی ہوتی نہ کو ہسار ہوتے نہ آبٹار۔ نہ ہر وزار ہوتے نہ لالہ زار۔ نہ ہولوں کی مہک ہوتی نہ شخوں شن چک۔ نہ

جهال عرش مكال شاو شابال يحسن انسانيت معادب لولاك وجه تخليق كا كات مصدر لطف وعنايت رجهم لطف وعنايت شهر بار ارم تاجدار حرم الي القاهم محراين عبدالله في ومن تورالله يعنى صفرت محرمصطفی صلی الله عليه دآله دسلم

نثرىنعت

نعتیہ کمپیئر دوران نظامت بیریا کیزہ جملے بول کرمخل میں محبت مصطفی استانی میں مجربے راضافہ کرسکتا ہے۔

یدوہ ذکر خیر ہے۔ جس کو ہر پاکرنے سے ٹرال رسیدہ زعدگی ہیں بہار آب تی ہے۔ وقت مشکل جس نے جب ہی جہاں بھی ذکر سرکار کیا۔ یا کرم سرکار کی صدادی۔ وقت مشکل جس نے جب بھی جہاں بھی ذکر سرکار کیا۔ یا کرم سرکار کی صدادی و بین اے موج کرم نظر آئی۔ آپ کا کرم اور آپ کی عطا تو مصیبت کے اعد میروں کا در آپ کی عطا تو مصیبت کے اعد میروں کا در تا ہے۔ آ ہے اب ای بارگاہ مجبوبی ہی جدید نعت کی سعاوت حاصل کر ہے۔

#### \*\*\*\*

میرے آقا فخر کا نتا ہے گئے پریٹان حالوں اور قم نصیبوں کے احساس کے راز داں ہیں۔ قد بیری کروراور تعزیری مُند زورہ و جا کیں تو آپ ہی کی نظر کرم یا نسبہ پلٹ ویتی ہے۔ اور پھر تا کا میوں کو کا مرانیوں کا عنوان ٹل جا تا ہے۔ بیہ جناب رحمت لئو لیبن حضور احم مجنی میں تھے کے ذکر بایر کمت کا عی کرشمہ ہے۔ لہذا ووستنو ذکر رسول سیجھنے کے بھی عاقل جیں ہوتا جا ہے۔ آ ہے سعادت نعت حاصل کریں۔

# القابات مصطفي سلى الأعليدة آلديتم

صاحب تائي هم نبوت\_مددنعين بزم دمالت\_اذفع الددجات\_ا كمل البركات - جامع الحسنات في آدم حسن مرايا فيرجهم - آية محكم - دمير اعظم يخزن جود وكرم في مهل تحم رسل يكعبهُ ول-جال تيس وول تيس مرور و نياو وي-تير بطحارماه وني الماستوكعبا منع جود وسخارقاهم كوثر وجنال يخزن سرچشه مدق صفار بَيرِ بربي سفا\_دافع رفي و باز-شافع محشر يحبوب داور\_صامل قرآن\_مارة ب **چارگال عُم خوادِ عاصیال ۔ سرخیل مرسلال ۔ آ دمیت کا پاسبال ۔ سرتاج مرسلال ۔ گخیر** مادق معصب ناطق مطنع الوادحق آشناك منزل ناز و نياز ما في منهم و كوثر ـ امام القياضين \_ فارح بدروجنين \_ رسول التقلين \_ مه لقا\_ ول كشار خوش نوا\_ خوش ادا پیشوا رونما مجننی مصطفی بیسین و طنه مزل و مدر بیر و تذیر حمادی و منذر معلم كتاب وتحكست داعي الي الله عاحب قول قيمل مرايا جايت روق الرجم مادب فلل مظيم مركوى و كم يرق صاحب كور ميدكال تاريكول ے لکالنے والے صاحب رفعت و شان ایمان والوں کی جان عاشتوں کی مان - ب كسول كاكس \_ ب بسول كالبس \_ بيتى بل يقين \_ ب قرارى بس قراراور شراب من بهاريش الفي بدر الدي قور المعدي كعت الوري ممباح الكلم يشمل أهيم فتلمخ الامم معاحب الجود والكرم يسيدُ المرملين \_خاتم النبيين يشفيع المذنبين -انيس الغريبين \_ راحت العاشقين \_ مراد المثينا قين مثمس العارفين \_ مراج السالكين رحمت للعالمين- معساح المقريين سيد التقلين- بي الحرين-امام القبلتين حصاحب قاب قوسين يحبوب رب المشر قين ورب المغربين -جد الحن والحسين بمولانا و مولى التقلين- مرسل داور-خاص بيبر بحتى المرتبت سيد عالم بمردد عالم بنود مجسم بنير اعظم معالك جنت رآئ دحت مثافع امت فحج عنہا کی آنکھوں کے تارے ہیں۔ اور سننے جو میرے آقاعلی کو نہ مانیں وہ مجرتے مادے ادے ہیں۔

#### ជាជាជាជាជា

نعت رسول علی ان بی زبان می قرآنی بدایت اور ردی کتار ات کا اظهار

است محبوب کا نتات فلیت کیا انسان بی قرآنی بدایت اور دونی کتار ات کا اظهار

است محبوب کا نتات فلیت کیا انسان بی انسان براه می دوانون م داکرام اور احسانات

میشر کا اقرار به بی جب میش رسول فلیت برده تا چا جا ہے گو خود باخود نگاه

ودل اور زبان و میان نعت پڑھنے گئے ہیں نعت شریعت کے آئیے می طریقت کا حسن تعوف کا جمال اور معنان کا احوال ہے۔

عشق کی ابتداء ہمی تم، صل علی مختبہ مختبہ مختبہ مختبہ مختبہ مختبہ مختبہ مال علی مختبہ مال ملی مختبہ مال میں تہاں تہاں میال میکھ ہمی خمیں نہاں تہاں ورد ہمی تم مسل علی حجمبہ ووا ہمی تم ، صل علی حجمبہ (بنرادکھنوی)

چکے کا کوشہ کوشہ لھ کا جائدنی ہوگی قبر کے اعدم آئیں کی گا کوشہ کوشہ لھ کا جائدنی ہوگی قبر کے اعدم آئیں کے بیس دم کون، تحریاصلی اللہ علیہ وسلم ہے، نہ ہوا ہوا ہول جہال میں اللہ علیہ وسلم اللہ علیہ وسلم اللہ علیہ وسلم

تعجب تو یہ ہے کہ فردوں اعلیٰ بنائے خدا اور بسائے محمد کمات اور بجائے محمد کمات اور بجھائے محمد کمات اور بجھائے محمد (علاماقبال)

نعت رحمت کا اشارا ہے

مرکار مدینہ علقہ کی رضت کا اشارہ انتاء اللہ بر محقیٰ مشکل میں ہمارا زاد راہ ہوگا۔اورآپ بی کی شفاعت کے تورے ہمارے گنا ہوں کی سیابی ڈھل جائے گی۔ اس لیے کے ہم اللہ عزوج مل مے مجبوب کا ذکر کر دہے ہیں۔ ہمیں یعین ہے کہ ہم حشر میں سر بلندر ہیں گے۔فرشیتے کہیں کے بیرکون ہے؟ پھر سرکار قرما کی کے بیرمیرا ثنا خوال ہے۔

#### ជាជាជាជាជា

نعت البرقى مقدى اور پاكيز وصنف فن ب مشق رسول الله كالم كيرفت كا عرفان عاصل كرنا نامكن ب افعت مجت مصطفى الله في كرتى ب انعت من الله في كرتى ب انعت سنة بى دل پراثر كرجاتى ب اور دولاف و بى ب بسم سے ايمان واجان ميں پيشكى آجاتى ب اس كے كرفت سنت ور در ممان ب سيمسير قرآن ب انعت و كما كف كى جان ب رفعت حضور عبد العملة قاد السلام سے عقيدت و مجت كا مؤثر ترين اظهار

## نعت میراایمان ہے

میرے آقا علیہ کین ومکان کا وجدان رکھتے ہیں۔ یہ میراا بجان ہے۔ آپ ہی عہد ہ نامہ دفا کا عنوان ہیں۔ عشا قان رسول کے دوں کی دھر کن ہیں۔ مخفل اصغیاء اور مجلس انہیاء کے جرائے ہیں۔ شرعبت کے شرعی طب اسلامیہ کے بیتارہ کروشنی اور شخص اسلامیہ کے دخشتہ و ماہتا ب ہیں۔ کا نتات عالم کے دخشتہ و ماہتا ب ہیں۔ کا نتات عالم کے دخشتہ و ماہتا ب ہیں۔ اور کہیں تو ذرااور کھس کے کہدوں میرے آقا مصطفیٰ ہے تو ہر تی اور کہیں تو ذرااور کھس کے کہدوں میرے آقا مصطفیٰ ہے تو ہر تی اصطفاٰ کے جیکتے ہوئے ستارے ہیں۔ سیدو طیبہ طاہرہ حضرت آمنہ رضی اللہ تعالیٰ تعالیٰ اللہ تعالیٰ اللہ تعالیٰ اللہ تعالیٰ اللہ تعالیٰ تع

مدت رسول سے قلب کو قرار ہے طلقت رسول ہی رب کا شاہکار ہے عظمت رسول ہو جان بھی خار ہے عظمت رسول ہد جان بھی خار ہے عظمت رسول ہد جان بھی خار ہے (صاحبزادہ خان اختر ندیم نششدی)

نی دائم چہ منزل ہود شب جائے کہ من ہورم

بہرسو رض کمل ہود شب جائے کہ من ہورم

پری بیکر نکارے مرو قدے لالہ رضارے

سراپا آفت دل ہود شب جائے کہ من ہورم

خدا خود میر مجل ہود اندر لا مکاں خسرو

محد شع محفل ہود شب جائے کہ من ہودم

محد شع محفل ہود شب جائے کہ من ہودم

(امبرضر

وکی و بھٹے دکھ و بھٹے مدینہ یا رسول اللہ خطاؤں پر ہے تادم ہید کمینہ یا رسول اللہ ( خالد مجمود ) مریش جرکامشکل ہے جینا یارسول اللہ چمپالوچمپالوا ہے والمان شفاعت یمی

زندگی کا حاصل ہے آرزو دیے کی ہوئی خالدگل میں یو دیے کی (خالد محمود) کوں نہ ہو یہ ہر لھے جنتج ہدسینے کی اس لیے ہماتے ہیں لوگ گل کودائن میں

جیسے میرے سرکار ہیں ایبا جیس کوئی افلاک پہ تو گنبد خصرا تبین کوئی (خالہ محمود) اب میری نگاہوں میں چی جین کیل اعز از میرهاممل ہے قو حاصل ہے زمیں کو

مرا دُول مبر آن، کی شہ چھین تھ کے در کی گدائی نہ چھین (بدزبان خورشیداجمہ)

خدادا میری آشائی نه چین متاع دل و جال میری لوث لے دل پزیر جملے

دہ گورے مکھڑے والہ جس کے روئے زیب کے داسلے سے ابر رحمت کی دعا تھی انگی جاتی جیں۔ جو بیٹیموں کا وال ہے۔ غلامول کا مولی ہے۔ اور ہم سب کا مجاو یادیٰ ہے۔ اک عظیم ترین ذات گرائی کی بار گا و بیس سعادت نعت حاصل کر رہے ہیں۔ جناب۔۔۔۔۔

\*\*\*

اب بين جمل تنا وخوان محترم كود كونتونعت وسدر بابول ووميدان نعت كرعتيم البيان -خوش الحان -خوش زبان ثنا خوان شيرين بيان جناب م جيس - بين ورخواست كزار بول كه تشريف لا كي اور بارگاه وسالت منطقة مين بديه مقيدت ويش فرما كين -مب ل كركه و يجهد سيحان الله .

مشہموار میدان فعاصت و بلاغت \_ خطیب قادر الکلام \_ فخر ابلسد و ماکی طریقت وشریعت \_ مقررشیری بیان حضرت علاً مدمولانا ے ادب سے درخواست ہے کہ دو تشریف لوکی اور اینے ایمان افروز بیان سے سامعین کو توازیں ۔

نعرہ تجبیر نعرہ رمالت آج ہر سمت رحمت کی برسات ہے محفل نعت بھی حق کی سوعات ہے ہوں غلام نی، اے جہم مجھے تو جلائ کی، کیا تیری اوقات ہے موں غلام نی، اے جہم مجھے

# نعت رسول ﷺ

شبشاه شعروض مشاعر فوش أواسا ديب يمثال جناب قبدعان ساتور بريلوي آج على في بوا يار الداز على كي البان كي ثناء جموعة جموعة عن سناتا مول أفعت شه دومرا، شفية شفية ورا مجموست مجموست آب کور قلم کوبیگونے لگا، میرا وجدان کفتوں کو دھونے لگا يكرية أبنك موتى يروف لكا، وجد شي شوق تما جموع مجموع ش نے متی ش ان کا تصور کیا ، پھر تصور مدینے بھے لے جا ان کی خدمت میں ہوں اب علی پہنچا ہوا،مث کیا فاصلہ جمو سے جموعتے یہ جواحمہ مجی بیں اور حربھی بیں، ہرمسمان کے ایمال کا مقصد مجی ہیں نام ان كا ذرا لے كے ديكے كوئى، مست بوجائے كا جموعے جموعے كونى قسمت كوكر ليجيد يول كرى، ديجي آنا كدربارير ماضرى ان کی قربت لے کی بغضل خدا ، تیجے دل سے دُعا مجموحے مجموعے ومرسكين جال إلى الاست في سب سكوب إلى بياس بياس في جب یہ انوار تے برم تی جماکیا، پر سجی نے کیا جموعے جموعے

موجوں پے سفینہ وکی یکے سامل پر سفینہ ویکھیں سے
اے ذوق نظر مالی تہ ہواک روز مدید ویکھیں سے
اے جذبہ ول اے شوق طلب آداب وفا طوظ رہیں
جو حرش پہ بہنچا دیتا ہے اک روز وہ زیند ویکھیں کے
جو حرش پہ بہنچا دیتا ہے اک روز وہ زیند ویکھیں کے

سارے حرفوں میں ایک حرف پیارا بہت اور بکا بہت
سارے ناموں میں اک نام سوہنا بہت اور بہار ابہت
میری دینائی اور مرے ذہن سے تو ہوتا نہیں
میں نے دوئے فی کو سوھا بہت اور چاہا بہت
میرے ہاتھوں سے اور میر کو سوھا بہت اور چاہا بہت
میرے ہاتھوں سے اور میر سے توثی و کی جات نیں
میں نے اسم فی کو تکھا بہت اور چا بہت
سے بینیں ماستوں می سر کرنے والے مسافر ایے من
سے بینیں ماستوں می سر کرنے والے مسافر ایے من
سے سیاروں کا سیا سیارا ہے اک کملی والا بہت

(سليم كوثر)

شان رسول محترم ہوگی کمی ہے کیا رقم ش ہوا منہ دوات کا انوار خوش نوا رہا ان کی شاء عمی لب کشا . نفش کا حق اوا کیا لفف لیا حیات کا مالیقہ کیا میں اور کیا گھیا کیا ہے۔

حن صدف نه تابش کو ہر کا ذکر ہے وارا کی بات ہے ند سکتدر کا ذکر ہے نے مغفرت نہ عرصہ محشر کا ذکر ہے مخشن کی بات ہے نہ کل تر کا ذکر ہے ميرے ليوں يانعب ويبركا ذكر ہے واليل جس كى زلف معتمركى بي حمم وبد سکون سائی کوٹر کا ذکر ہے (قريزواني)

مہتاب و آفتاب نہ اختر کا ذکر ہے تیمر کی گفتگو ہےنہ کسرٹی کی بات ہے ميران عدل ويرمش اعمال كالميس ذكر شيم ل په نه ذكر حيم ہے ہیں تظرے اس زئے برنور کا جمال والقس جس كے چروانوار كى ہے تم ان دور اضطراب شی میرے کے قمر

ئی کے دریہ کی کا غلام آتا ہے ني كى مرح كا جس دم مقدم آتا ہے ند شاہ معر تد سلطان شام آتا ہے ص جرائت لبوكويات كانب المتابون

نعت اسلامی نقاشت کا تمانحدہ اصول نعت كى مخل شى شركت بحى سعادت كاحمول (قعرى كانيوري)

نعت نفذلس رسالت، نعت تحريم رسول نت كربرانظ برمونا برمت كانزول

انعت کیا ہے ، وست بستہ ان کی دربائی کا نام نعت کیاہے، روشہ اقدی یہ مہمانی کا نام نعت کیا ہے، اب براب دیدے سے خانے کا نام العدت كياب، آنسوول كرقص على آنے كا نام نعت کیا ہے ، لوح جاں پر پھول بھراتے کا نام نعت کیا ہے، ان کی چوکمٹ پریکل جانے کا نام

كياكبور، وعما يُون كاكون سااتداز ب تفديعيد رسور ياك كا آغاز ب

نعت ابواب محمد کا جلی عنوان ہے ہم غلامان محمد کی سی پیجان ہے

مدهاني وشواسيا كمال ثناء توال وشاء كوخيفة مجاز معرسته فأسهيرسيد شاعت بلي شاويحدث بلي يوري هرية مونى، مرمنير خال پيكرا كبرآ يا دى نتشدى عاى رمة الله عليه

بدية تبنيت

آرام گاه حفرت صوفی منیر خال اور تے جمائی بھی باشر (ب کمال ادماف منف نعت میں تھان کے بے کراں تقدم سے ملاتھ جمیں ان کا آستاں بے نک رسول یاک بھی تھان یہ ممر ہاں ادر أب معطفا يرجز كت تعالى جال ول نعت كوجى كيي البيل نيز نعت خوال علق خدا كو اينا سمجية يتبع خاعران یاد الی آپ کے سر پر حمی ساعیاں بات تصان فيض جي منظل اورجوان الله اور رسول رہے ان یہ ممریال جب شمراً كره على موت آب ضوفشال س ودہزار ہتھے میں ہوئے خلد کورواں فرز ندخوش لعيب باخر عريم خال مدّ المصطفا وخطيب اورنعت خوال الله ان کو رکھ ای داہ م روال

اللہ کے کرم سے حکوم رہے سوا نبسة تفى تقش بندو مجدد ے آپ كى کرتے شامری بی پیرکے نامے تقے حفرت عامت مل شاہ کے مرید یہ عاش رسول تھے ایسے کہ واو داو الله كو أيول كامشق ان كرول عن تعا كبته تقدادر يزهة تفيعتس رمول ك روحانی چیشوا بھی تھے اور منتی بھی تھے ان کو علوم ویں بید کھمل عبور تھ استادم رال بھی تھے خلقت کے واسطے روزہ نماز آپ کے محبوب محفل تے یاں اک ہزارتو سواور انیس تھا وہ س الای سال علم وجل کے گزار کے بیٹا ہےان کاان کے طریقے پر کاربند يه تاهم محافل نصب رمول بين والدك اين بيمي مجازي خليفه ين وہ ماد عرب بن اے نیم اپنا تو جہاں میں سہارا ہے جوجا کی فدائس نام پہم، بینام بی ابیا بیارا ہے (مولوک شفع الدین نیم)

جھ پر بھی کرم سیجئے سرکار مدینہ دل میرا بھی ہے طالب دیدار مدینہ جو بچھ بھی کوئی آکے بہال انسٹنے ، ملے گا ہر چیز کے محار میں سرکار مدینہ (حسرت موہانی)

پُی سے آثارہ راہ گزر کو خبر نہ ہو جبریل پر بچھاکیں تو پر کو خبر نہ ہو فریاد اٹنی جو کرے مال زار میں ممکن ٹیس کے خبر بشر کو خبر نہ ہو (مولانا شاہ احدر شاخان فاهل بر الدی)

حق جلوه کر زطرز بیان محد است آرے کلام حق به زبان محد است عالب تنائے خواجہ به یزدان گزاشتیم کان ذائت پاک مرجه دان محد است عالب تنائے خواجہ به یزدان گزاشتیم

غرق اللت ويرؤ نمناك بهونا حامية نعت كني ك ليدل يك مونا عام (رياش مين چوهري) نہ بندگی ند سمی خسروی سے ملتا ہے غال محش کھنتہ ول سے ملا ہے جو کیف روح کونعید نی سے ماکا ہے ندوع ملك عامل دمير جنت س (اوعبدائے اوری) ال سے بڑھ کراور کیا ہوعظمت نعت رسول مدحت محبوب مي آيات قرآل كانزول میں تھی وامن ظهوری پیش کیا کرول تذرادماف ني جي چھ په شعروں كے بحول ( مرا تروي) نعت ني ش جب يس محالب كشابوا محد يرمرے في كاكرم اور سوا موا مكريه كهدر إب كدكيا ماجرا جوا قرآن کبدرہا ہے تی وٹ یر گئے (سردمهارندوی)

(صبااكبرآبادي)

نازال ہوں معادت کے مجم رول رہا ہوں میزان حقیدت جی آئیں لول رہا ہوں میزان حقیدت جی آئیں لول رہا ہوں میر اول ہوں میر اول اول میں تبال محول رہا ہوں میر ایس محول رہا ہوں میں تبال محول رہا ہوں اول

(ادیبرائے بری)

(اتَإِلَ)

تزجمه

اور جیل آپ ما واللہ کس مان نے نہ جنا اپٹی مرض کے مطابق ہوئے جنوہ فرما (عزبرشاہ وارثی) آپ ما کوئی حسیل ہم نے شدد بکھاند سُن پاک وطاہر ہے ہراک عیب سے ذات حضرت

یہ انتخاب بھی معمول انتخاب نہیں وہ آدی ہے گر و کھنے کی تاب نہیں یہ کہہ دیا ترا فائی ترا جواب نہیں کہاں کیاب سے بہترکوئی کیاب نہیں

ش جاہتا ہوں آئے جس کا کھے جواب میں نگاہ برق خیل، چرو آفاب خین خدائے محینے کے نقشہ رسول اکرم کا میں تیرے معجف ڈرخ کا مطالعہ کرلوں

بناکے آپ کو خالق نے یہ کیا ارشاد مرا جواب تو تو ہے ترا جواب تیں شاہ شاہ شاہ

کیا موا منہ، بیمری مدح نگاری کیاچیز جب خداخو دہے تنا وخوان رسول حرلی

ہم ہول اور کوئے ہی کی فاک ہو

موت چاہے جتنی دیت ناک ہو

(مبا کرآبادی)

دنیا کے بیکسوں کا سہارا حضور ہیں

میری مراد میری تمنا حضور ہیں

(مبا کرآبادی)

اس طرح استی کا قصد باک او جان دی مے ہم تو پڑھ پڑھ کے درود

ونیا کے بیکسوں کا سمارا ہے اور کون میری مراد میری تمنا نہیں کچھ اور ز مین از مُب أوساكن ، فلك در محتق أوثیدا ند آدم بافت توبه ند نورج از غرق لحجیّا (مولانا جاي) ومُسَالُ الهَدَعَنَى نُورِ ، كَرُوشُد تُورِ ہا پیدا اگر نام محمد را نیا ؤردے شفع آدم

شار ہو نہیں کتے، شار کر دیکھو یقیں نہ آئے تو ان کو پکار کر دیکھو (حبدالعزیز خالد)

خدا گواہ، خدا کے رسول کے اوصاف تم ان ہے دور ہولیکن وہتم ہے دور نہیں

ہر کوشے ہر طبقے می حرے شددائی طبتے ہیں کوغ رہا ہے سرور عالم اکون ومکال میں نام تیرا

، کین وہ خطا پوٹ جارا بھی خدا ہے ملے میں جارے بھی تھے کی شاہ ہے (اویبرائے ہوری)

ہم کو بھی خرے کے گنا ہوں کی سزا ہے زاہد کو اگر ناز عمادت ہے، بجا ہے

وی ہے توج بشر کا معلم اعظم قوراتھ چوڑ دی تھک تھک کے نیل سکو یوم (عبدالعزیز خالد)

اُی کو صاحب خُللِ مُقیم کیتے ہیں شارکرنے چلیں اُس کی توبیوں کا اگر

جن کی تعمت علی ہے کے نظارے ہوئے کیے جبریل نے لیجات گزارے ہوئے (محمطی عمیوری)

ان کی آئموں پرفدا مائرستارے او تھے رہ کے سدرہ پہمرکی رفاقت کے بغیر

وَأَجِمَلُ مِنكَ لَمَ تَبَادِ النِساءُ كَانْكَ قَدْ خُبِلَقْتُ كُمَا تَشَاءُ (حَالَى مِنْ الرَّيْنِ الرَّيْنِ الرَّيْنِ الرَّيْنِ

واحسنُ منکَ لم تَر قَطُّ عيبي خُلِقست مُسرًا مِن كُلَّ عيب. شاعری میری منزل تو ہر گزشیں ہاں نظامت مری خاص ریجان ہے نعت مولائے کل ہے شخف ہے جھے یہ میرا دین ہے میرا ایمان ہے جوئت میرے بیارے نی کائیں ہے "وہ میرا بھی نہیں" رب کا فرمان ہے

جب علک مالس ہے تعت ہو منا رہوں اے عدیم حزیں ہی ادمان ہے

البخش دی تیری است سید علال ہے اب ہمارا بھی اللہ مجمہال ہے بالیقیں مری ہخشش کا ساوان ہے ان کو بے شہر آ قا کا عرفان ہے ان کو بے شہر آ قا کا عرفان ہے نعت خوانی تی اس کمر کی پہان ہے ان سے معراج پر میرے رب ئے کہا اہل ثروت تو پنچ مدینے محر آج میں کررہا ہوں نظامت بہاں مرتضیٰ و بنول و حسین و حسن سے تمر الزمال شاہ کا دولت کدہ

آرزو کوئی باتی خیل ہے تھی ہے بال مدید محر دل کا امرمان ہے

شاد ہر نا کام او ای جائے گا

کھ شہد انعام ہو ای جائے گا

دل کو بھی آرام ہو ای جائے گا

(موار ناشاہ احدر شاخال فاصل ہر طوی مرے جسے میں آئی ہے تھے کی شاہ خواتی مرے جسے میں آئی ہے تھے کی شاہ خواتی اسے ہوگی شاہ خواتی اسے ہوگی شاہ خواتی اسے ہوگی شاہ خواتی کے سیاری کی کے میں پریشانی اسے ہوگی شاہ در کو تین کے آئے کی گھڑی ہے ہوگی شہر در کو تین کے آئے نے کی گھڑی ہے ہیں ہر در کو تین کے آئے نے کی گھڑی ہے

لطف ان كا عام عو على جائك كا ساكو واكن تني كا تنام لو ال رضا بركام كا اك وقت ب

مقدر کومرے بخش کی رصت کی تاباتی عجبت سرور کونین کی جس دل کوحاصل ہو

برست بری او کی دهت کی جعری

ماصل کوئی فیشان نبیس موسکا انسان مجھی انسان نبیس موسکا (میااکبرآبادی) الله کا عرفان نیس ہوسکیا دِل بیں نہ مجت ہو تھے کی اگر

ملیا تیل ہے درد جو اُن کی تظرید ہو آئے در حبیب تو اچی خبر شد ہو

کیا لطف ہے تن کا اگر چشم تر نہ ہو ہوائی طرح سے اٹی مدینے عمل حاضری

خدا کی حد کرد مصطفا کی بات کرد خیائے مظمر ڈات خدا کی بات کرد (آباد)

ند ابتداء کی ند پکته انتهاء کی بات کرو پامو ورود پامومصطفا کی بات کرد

ہم دیے سے اللہ! کور آ کے ظہر تیران کی سکیں وہی روگی دل وہیں روگیا، میاں وہی روگی، فم ای در پانی جیل روگی زندگانی وہیں کاش ہوتی ہسر، کاش بنراد آتے شہم لوث کر اور پوری ہوئی ہر تمنا گر ، یہ تمنائے قلب حزیں رومی

**ተ**ተተተ

ارمانہے

(معاجزادہ خان اخر ندیج فشیندی) میری کل زیست پراس کا احسان ہے جھ کو جو کچھ ملا ، اُن کا فیضان ہے

میرے دل میں جواک فردمہمان ہے شعری نسبت مجھے مرے والد نے دی کیا بات رمنا اس میمنتان کرم کی زبرا ہے کل جس جس حسین اور حسن میمول (مولانا شاہ احمد رمنا خال فاضل بریلوی)

(اجرزتم قاک)

ش نے دوری کا شاید کیا تھا گلہ آپ نے مجھ کو روضے پہ باوا لیا جب مدینے کی جنت ش داخل موا

ذرے ذرے کو پڑھتے ہوئے ہے۔ نا فاتم الانبیاء مصطفے مصطفے اک خوش می خوش دل میں تحلیل تھی کویا حزل مری باب جریل تھی اُس ہے آگے وہ روضے کی قدیل تھی سرکار نے متان کو منبر پہ منعایا آٹا کے نٹا خوال کی توقیر یوی ہے (عرطی تلبوری) مجوب دوعالم کی رصت ہی زمانے شل ہر دکھ کا مداوا ہے ، ہر تم کا سارا ہے اللہ نے من کی ہے قریاد سوائی کی سرکار مدینہ کو جس تے بھی پکارا ہے

صداکیں درودوں کی آئی رہیں گی مراس کول شاوہ وہارہ کا خدا رکتے آباد الل تظر کو، اللہ کا حیاد ہوتا رہے گا سکوت وں وجال خیال نی ہے، تکابول کا مرکز جمال نی ہے مشار کے ہے آرزد کے وصال نی ہے، وہ دل خم سے آزاد ہوتا رہے گا

( عرعلي تعوري)

قریان ان کے قدموں پر مرجانا جاہے اب تو مرا نصیب سنور جانا جاہے جود و کرم بہاں بھی بھر جانا جاہے دائن مرا بھی یا تی بھر جانا جاہے اب قاتی کو بعلی محر جانا جاہے اب قاتی کو بعلی محر جانا جاہے مشق نی ش مدے گرر جانا جا ہے بدالتجاہے میری اے فم خوار ہے کسال وامن پ رے بیٹے بین مخل بین آپ کی دے دو جمے بھی صدقہ حسنین اتنا تم رہتا ہے روز وشب بڑا ہے جین ، یا نی

\*\*\*

مرتا یہ قدم ہے تن سلطان زمن چول لب چول دائن چول زمن چول بدن چول دندان و الب و زلف و رُحْ شركے قدائی جین وُقِ عدن لعل ایمن مشک نفتن چول جس طرح منتے ہیں اب نام تھر کے سب کاش ہم آل و تھی مب نام تھر کے سب جب لیانام ہی واقعی ام تھر کے سب جب لیانام ہی واقعی وائر ور مت کیا دی واقعی نام تھر کے سب تھا کہاں پہلے ہمیں حفظ مراحب کا خیاں ہم نے سیکھا ہے اوب نام ٹھر کے سبب

( ليقوب پرواز )

ذکر آقا کا سنتے ستاتے رہو یاد ش اُن کی روئے رالاتے رہو بس می کام ہے وہ ضدا کی شم روز محشر جو عاصی کے کام آئے گا

آنسو بھد خلوص بہانے کا وقت ہے لوج جبین گر جمکانے کا وقت ہے محفل کی ہوئی ہے ورود وسلام کی یوفقت نعت پاک سانے کا وقت ہے

(منور بدايوني)

\*\*\*

لوگ نازال ہیں کہ وہ مدد یقیں تک پہنچ کی ارباب خرد لوح مبیں تک پہنچ کی ارباب خرد لوح مبیں تک پہنچ کی ایک ان ان و کین ایں دورکر زمات سے معد یوں پہلے میں سے آتا کے قدم عرش پریں تک پہنچ کی ان اقبال تعظیم) بیان کیسے وہ الفاظ میں صفات ان کی نرول وقی اللی ہے بات بات اُن کی میان کیسے وہ الفاظ میں صفات ان کی دونوں عالم کو جس نے منور یہ برطرف تھی صدا مصطفے مصور تھی گست محمور سے ایک محمور سے کے دردو وسلام و دعا دل شام مصطفے مصطفی

جی کو گیرے ہوئے ہیں زمانے کے خم میری حالت پہ سیجے نگاہ کرم آپ کا نام لیوا ہوں شاہ اہم آپ بی ابتدادآپ بی ایجا مصطفع مصطفع مصطفع مصطفع مصطفع مصطفع

(مسعوداحد شفتی)

ماتنے ہو ہمی مدینے جائے گا جمولیاں بھر بھر کرم کی لانے گا مصطفا کے نام پر بک کر تو دکھ پھر خدا کیا کیا کر م قرمائے گا الفت آ قائے رشت کے طفیل جرم آبکی میں بدل جائے گا الفت آ قائے رشت کے طفیل جرم آبکی میں بدل جائے گا ار طفیل نقش بائے مصطفا آمتی ہر آبک بخشا جائے گا دائین اجمد سے دائیتہ جوڑ لے دائیتہ جوڑ کے دائیتہ دائیتہ جوڑ کے دائیتہ کے دائیتہ کے دائیتہ جوڑ کے دائیتہ کے دائیتہ

(ارشد محودارشد)

- آماب نظا<del>مت</del> ـــ

ور و یام بیت الحرم چوم لول گا سیم بیار ارم چوم لول گا نظر سے در محرّم چوم نوں گا در و فرش کو چی بیم چوم لول گا دب سے جی وہ چیم نم چوم لول گا خود اپنی زبان و تکم چوم لول گا خود اپنی زبان و تکم چوم لول گا مقدر ہے لے جائے بھد کو مدینے مدینے مل کھیل ہے آتا کی خوشہو مدینے میں کھیل ہے آتا کی خوشہو میں کھیل ہے آتا کی خوشہو در پاک پر جب بھنے گا مرا سر فراق محمد میں جو رو رہی ہو میں او میں او میں او میں او کھیے کھیے کھیے کھیے کھیے مام کوڑ

ند تم اُس کی کے بھی قربان جادل نی کی گلی دم بد دم چوم لول گا

جرتفتری اور ہر متلمت کے شایاں ہو گئیں ۔ دو زیانیں جو محمد کی شاخواں ہو گئیں ۔ لے محصے تشریف وہ جب الا مکال کی سیر کو ۔ نفشیں ان کی بعید، زفکر انسال ہو گئیں ۔ نفسیہ وسالت تم نے جب چھیٹرا عزیز ۔ محصل میں وقائب سلطان رسولال ہو گئیں ۔ مرحی میں وقائب سلطان رسولال ہو گئیں ۔ م

(عزیز ماصل بوری)

نعت کیا ہے اک تلاوت کر بلائے معمر ش ہریزید کی دور پرعاب رہاجس کا جال چارہ کے چارگاں ہے ڈٹم کا مرہم ہے نعت اپنے آتا ہے تقیدت کا ہے عکس فوش نصال فعت صادتی چاہتوں کے بائح کا کھلتا گلاب معمرت حسان بن ثابت کا گل ڈار خیال

( محمد فیروزشاه میانوال) وه لاجواب مین، أن كا جواب كیا مو**گا** 

حبيب بإكسكى كاخطاب كيا موكا

زين تابرفك بيدكا كات أن كي

أنبيل كردم مصمتورب يرم كون ومكال

مری طلب کا نقاضا دیار پاک حضور تمام نسن و نقدش نمام کلبت و نور نه مجھ کوخواہشِ جنت ندشوقِ حوروقسور مقام ارضِ مدینہ کسی کو کیا معلوم

جمم ملت پراگر چرزخم بین کاری بہت آپ کو اس بیشری سے ہے بیاری بہت آوالوام جہاں بی بوہ کی خواری بہت (سرفراز) آپ کی چٹم کرم سے مندل ہو ہا کیں گے اس کادا کن بیار کے پھولوں سے پھر بجر دیجئے نام لیوا آپ کے ہیں تیجئے اب سرفراز

مرک تراد مدینے کتا جدادے ہے دی ترین جنیں شفقت گنادگادے ہے امید ان کو بدایت اُمیدوارے ہے (منیف اسعدی) زے نصیب آبیں ربا مال زارے ہے آبیس ہے ہوگا شفاعت کامر طبر آسال اگر ہے اُن ہے محبت او تھم بھی مانو

کیا حرہ آئے ایے جینے علی عمل بہاں دل میر الدینے عمل عمل کول کب بلاؤ سے آتا دہ یہ کہہ دیں ای مینے عمل

(مُخْدُداوي)

لعت ﷺ

(صاحبزاده خان اخرَ عَرَيْم مَعْشِندي)

عل آقا كا دست كرم چيم لول كا

كف بائ الل حرم جوم لول كا

پر آرزو ہے شیشہ ول چور چور ہو پھر کوئی شے تو تامل نذر صنور ہو یارب!اک التجاہے کے محشر میں جو بھی ہو نعت رسول پاک کی محفل ضرور ہو (ادیب دائے ہوری)

جمال معطفی کا تور ہے دل کے جھینے جی سمندر جی سفینہ ہے ہمندر ہے سفینے جی مقدر کا لکھا تو سب کو دیتا ہے خدالیکن جو تسمت جی زیکھا ہو دہ مات ہمسانے میں (سمان مصففے)

وروازہ کمولتے ہیں قرشتے قبول اک سسمہ ہے رہمید حل کے نزول کا دونوں جہان گوش ہر آواز ہو گئے میں نام لے رہا ہوں خدا کے رسول کا (مظفروارثی)

یں جہاں جہاں موا موں ترے نام سے موالی تری رحمتوں نے بیدہ کر مری آبرہ بچالی کی رحمتوں نے دیکھی شری آب کی جموں کی میں بھی آئے چوموں ترے آستان کے جلوب، ترے دوھے کی دو جالی

اے در در گارف والوجی تو آؤشد یں کے دریہ اس در پرتو سارے عالم کی مجری کو بنایا جاتا ہے ارمان حضوری ہے دل میں اللہ مجھے بلوا لیے اب بارجدائی اے آتا مجھے نہ اٹھایا جاتا ہے نمام است ماسی کے جب ہوتم حای کے پہتر ہوتم حای جو ہے تہر ، کی پر عذاب کیا ہوگا جو ہے ہے ہار ہے است ماسی کے جب ہوتم حای کہ جو ہے تہار ہے خلاموں شراے شروتی کے کا ش بطی مستقل رہ جاؤل ہے کہ تی ایمی اوجوری ہے لاکھ سجدے کرد تو کیا حاصل اُن کی الفت بہت ضروری ہے لاکھ سجدے کرد تو کیا حاصل اُن کی الفت بہت ضروری ہے ول پر جو مرے نام محمد کا رقم ہے جینا بھی اہم ہے مرامرنا بھی اہم ہے ول پر جو مرے نام محمد کا رقم ہے جینا بھی اہم ہے مرامرنا بھی اہم ہے کرم اور کرم اور کرم اور کرم ہے کہ کرم ہے کہ کرم ہے کہ کرم ہے کرم ہے کہ کرم ہے کہ کرم ہے کرم ہے

ہم کی دین سے ہوں قائل کروارتو ہیں۔ نام لیوا بیل محمد کے پرستار تو ہیں معشق ہوجائے کسی سے کوئی چارہ تو نہیں معشق ہوجائے کسی سے کوئی چارہ تو نہیں مرف مسلم کا محمد پر اجارہ تو نہیں (مہندر علمہیدی)

جب انتک کے دریا جی الفاظ رواں مول کے پہنچیں گی وہیں تعین مرکار جہاں مول کے محشر سے آگر محشر لیکن جمیں ممل کا ور

(اويبرائيوري)

خوش ہو چس سے آگی تو محسول ہے ہوا ہر پھول جسے محو ہو ذکر رسول میں . الفاظ ساتھ ویں تو میں اظہار کرسکوں لذت بی پھے بجیب ہے ذکر رسول میں

وہ نبی جس نے خدا کے دین کی تبلیغ میں ماکا کا کی سٹی باتھ الب اظہارے

مانکتے کا شعور دیتے ہیں جو بھی ماگو ضرور دیتے ہیں مانکتے کا شعور دیتے ہیں مانکتے وال ہو آگر کوئی میرے آتا ضرور دیتے ہیں ہم نیارتی کسی ہے کوں مانکیں ہم کو سب پھر حضور دیتے ہیں (نیازی)

ذِكَرُ كَى مُحَفَلُونَ مِن رَجِعَ بِينَ شَاءِ يَطْحًا وَلُولَ مِنْ رَجِعَ بِينَ إِن كَ وَأَكُن كُو جِيمُورُ نِهِ وَالْمِ عَمَر بَعِرَ مَشْكُلُونِ مِنْ رَجِعَ بِينَ إِن كَ وَأَكُن كُو جِيمُورُ نِهِ وَالْمِ عَمْر بَعِرَ مَشْكُلُونِ مِنْ رَجِعَ بِينَ

چرو گردش ماحول تکمر جائے گا ایٹی دور کا انسان شدھر جائے گا اے گا انسان شدھر جائے گا اے گا اے گا اے گا اے گا اے گا ایسان کی ماجت ہے اگر تھام لے واسمن سرکارستور جائے گا ایسان کا (بنگل انسان )

جو راز دل عی نہاں ہے نہاں سے کئے دے

کی کے عاد کا قم ہے خوقی سے تنہ دے

قدایا جس کو شرورت ہے دے اسے جنت

محمور کے قدموں کے پاس دیے دے

د

(3262)

اللہ سے بندے کو طا دیتا ہے۔ گڑی ہوئی گفتریر بنا دیتا ہے ہے نام محمد علی کی الکی تاثیر جو فقر علی شائی کا عزا دیتا ہے (عابد لگانی)

مرے لے کر پاؤل تک توری توریس جیسے مندے بولاً قر آن ، وہ تقریر ہے مویتی ہے دل جی دنیامصطفا کو دیکھ کر وہ مصور کیسا ہوگا جس کی پیقسور ہے (قرجاالوی) نی کی یاد ہے روٹن مرے دل کا محمید ہے وہ میرے دل میں رہتے ہیں ہمرا دل بی مدید ہے نظر افروز ہیں رعمینیاں فردوس کی لیکن جو تسکین ول و جاں ہے وہ آقا کا مدید ہے (نازی)

عم حیات نہ خوف قف مدینے ش نماز عشق کریں کے اوا مدینے عمل المجاج ل کی جب اختیا مدینے عمل الگاہ شوق کی ہے اختیا مدینے عمل اوھر اوھر نہ بھٹکتے کرو فدا کے لئے براہ راست ہے راہ فدا مدینے عمل جمیب کیف و مسرت ہے روح پر طاری نگاہ دل ہے اور دل مرا مدینے عمل قدم بر ھاد کہ سے کی مست اے قصری ہے ہے کہ مول کا برا آمرا مدینے عمل ہے ہے کہ مول کا برا آمرا مدینے عمل

(قفرى كانيورى)

کزرا وہ جدھرے وہ ہوئی راہ گزرتور اس لورجم ک ب برشام و عراور کیمو کی منیا نور عاے کی چک لور ال آیة رحمت كا ب برزى وزير لور كب لور، وبأن لور، زبال نور، بيال نور ول لور، جگر توره جبین تور ،نظر تور مرتاب قدم نور عمال نور بنهال لور برسمت تري لور ، ا دهر نور أدهر نور نبت ہوئی جس کوری فاک کن یا ہے اه شمره وه کوچه وه در و بام وه کمر نور جس صبح اتارا محیا وہ جاند زخیں پر وه ماه دوه وان نور، وه ساعت وه محر نور كيول كرنه ببول زهرادحسين اورحسن نور اس کٹل رسالت کا ہے ہر برگ وٹمر تور جس روية منوريه مو" دالفجر" كي طلعت ے جاتیں کر اس کو کیں اہل تظرفور

( فراعظم چشی )

یوں دھڑ کتا ہے کہ جیسے پڑھ رہا ہو کوئی نفت ماضری طیبہ کی جس دم خبریا تا ہے دل (عزیز الدین خالق القادری)

داتا ، کی م یدافد تاج در بنده نواز ، بادشاه حسن سر بسر اترے بعکاری شاه و گدا اور تاج در سلطان دو جہان شبنشاه ، کر و بر بنده بندے بدایت میرکی جو جائے اک نظر ایک میں کی جو جائے اک نظر ایک میں کی جو جائے ایک نظر المجمال و یا سید البشر"

( عَبِّرِ مِثَاهِ وَارِبِیْ) آپ کی شان کے قربان کہاں تک پہنچ کو کی پہنچ ہی شہیں آپ جہ ں تک پہنچ یہ قو اک راز ہے محبوب ومحب وونوں کا کوئی کیا جائے کہ سرکار کہاں تک پہنچ ( عربی فاکی )

> مرکار مرایا الفت بین اب شرجهم رحت بین بین ایسے تی کا بیرو اول جو جود وسطا کے جیکر بین دیکھولواس عالم امکان میں برسو بین عیال انواران کے تم لاکو آئیش تاکی جالو ، وہ تور و میا کے جیکر بین

(اكرم في الخر)

ین م اجم ، کہکٹال اور آفاب و ماہتاب سب کے سب انوار آقا ہے ہوئے ہی کُیل یاب دونوں عالم میں کوئی ٹانی نہیں ہے آپ کا آپ ہیں اپنی نظیم اور آپ ہیں اپنا جواب (اکرم علی ایجز)

ساعتول پیارم بے صاب ہوتا ہے۔ اوب! کے ذکر دسمالت مآب ہوتا ہے۔ اوا میں خلق انظر میں مجاب ہوجس کے خلام ان کا وہی کامیاب ہوتا ہے (ابرادکر تجوری)

(ظَفْريرويزتقوي)

یزم رسول پاک اٹنی کی رہے ہرول میں مصطفا کی محبت ہی دہے صلی علی کی ذھوم جہال جس مجی رہے نصب نبی سے بول بی فضا کوئی رہے مسلی علی کی ذھوم جہال جس جشن ولادت ہوتا اید ان کے ہر استی کی غلامی ہو مشتھ

(رشیدوارثی)

مر لا مکان سے طلب ہو تی سوئے معجا وہ چلے ہی

کوئی مد ہے ان کے عروق کی بلنے السفسلسیٰ بیکنسائیہ

(مجرشاہوارثی)

جونال یا نے کہیں اینا سکول یا تا ہے دل جب دیار سردرکوشن یا جا تا ہے دل

وه باعب خلق 🛪 و كل مين، هيقاً خاتم الزال بين یہ تھم ہے انبیا کو حق کا کہ ان کو اپنا امام کہنا مثال شیر مرکانا ، اجل کو پیر زندگی بنانا تیں ہے آسان اس جہاں میں زیال سے حق کا کام کہنا

(محرجان بحم)

فعنل حق سے اس بی اس در کوئٹن کے وحت للعالمين كاجس في بايا خطاب یا نی اسے تری تریف کاحل موادا ا کی اس سے رہ رہے آو نے پایا ہے مزش اور تش کا خطاب (کر جان اجم)

جب مشغلہ ہے، جب بندگی ہے کنفر رومنیہ مصطفا پر کئی ہے عام ليم. تي ارك یمی زعرک ہے، مجی بندگی ہے (گه جان انجم)

> سلیتے وندکی میں بندکی کے جن برتی کے جے مطلوب ہول وہ سکھ لے سیاد تیمبر سے سہارا ہے تجات آخری کا اک میں میرا جھے الفت ویبر سے ہاولاد ویبر سے

(محرمان الجم)

تمباری است عس ہم ہوئے میں ماری بے شک تجات ہوگی حمیں وہ دولہا ہو ساتھ جس کے تمام امت برات ہوگی جو پخشوائے گا عاصول کو،وہ کون ہوگا خمیں تو ہو کے جو کام آنیکی روز محشر وه اک تمباری عی ذات مو کی . (كنسادْكى)

عركيا ميرى نظر على باغ جنت كاسال كلفن طيبه بن جب ديكمي بهارجان فزا میرا دل مری نظر مراقعم میری زیال رات دن مشغول بين آقام ي توصيف من (أكرم على اخر) آپ کو بے قرار دیکھا ہے

کتا امت سے بیار دیکھا ہے جلوۃ حسن یار دیکھا ہے عرش پر خود بلا کے خاتق نے

كه دو جهان ش تيرا جواب، ناممكن ادائے اسم مرای مجتاب نا ممکن ند ير سے تيرے كرم كا سحاب ما يمكن (Tub)

(اكريلي الخز)

مقام حمرا سجد میں تو آئیں سکن خوشا دولفظا 'محما'' كدلب كوچ مے بغير تری مطا کا اگر کوئی دل سے طالب ہو

يكام دوب جوده كل وشام كرت يل بدؤون وشوق يهال المتمام كرت ين (اكرم على أخر)

در رسول یہ قدی سلام کرتے ہیں وه خوش نصيب بين جوآپ كى محافل كا

آج احد مل کے جلووں یہ تھر ہے وہ حیدر کرار کے دل بھر کا سر ہے (محرمان الجم)

کیا چر یہ تایا کی خورشید و قمر ہے نيزے يہ بھی جو چڑھ کے ر امجو علاوت

ب مشعد الل ول كا جر دم رسول حق مي سلام كبنا ۾ ڻام پوڪھ کوئي تو اين کو ان کا ادثيٰ خلام کينا کریں ناقست بیناز کیوں ہم کدود ہیں اس زندگی کے مقعمد خدائے واصد کی حمد کرنا شائے فجر الانام کہنا کوئی کہنا ہے سر عرش علیٰ رہنا ہے اپنے محبوب کے جلووں ٹس چیمیار ہتا ہے (ساحرصد لیقی)

کوئی کہتا ہے کہ کھیے میں ضدار بتا ہے ہم فقیروں کا عقیدہ ہے کہ معبود عظیم

دیکھنے پر بھی مری آگھ تمنائی ہے دوکر بموں ٹس گناگار کی بن آئی ہے (استاب ثان مصطفے ﷺ)

یا نبی آپ کے جلووں میں وہ رعمنائی ہے حق تعالی بھی کریم اور محمد بھی کریم

عاش پہس کے آئش دوز خرام ہے دائیم یہ مجزو ہے رسالت مآب کا (رشیدوارٹی)

قرآن وہ محیفہ دیت انام ہے ہر لفظ جادوال ہے خدا کی کتاب کا

اس كى تجبيب شى قدرت خداكى ہے قر - ترج و الفظائع إلى كالفائ محيم ہے (رضيدوارثى) قرآں کو دیکھنا بھی عبادت فعدا کی ہے سیلہ وٹی کا قالب رسول کریم ہے

مالق کی کل بنعب فید دو سرا بھی ہے اسراد کا نتات کا عقدہ کشا بھی ہے (رشیدوارثی) قرآن کیمیا بھی الدید شفا بھی ہے رب کی وی بہلق رسول خدا بھی ہے

عرفانِ ذاتِ حَلَّ کی مقدس کماب ہو سلطانِ کا نئات رسالت میآب ہو (ستاروارٹی) بے مثل و بے نظیر ہوتم لاجواب ہو جاہ وشرف میں کوئی تہاری تہیں مثال

آج دیا ش رمولوں کا امام آتاہے لومبارک ہو کہ اب وہ تمام آتا ہے (ستاروارٹی)

عرشِ اعظم ہے میہ خالق کا بیام آتا ہے اور بھی آئے ٹی، چکے ستارے بن کر

ا تغیر ہو رہی ہے خدا کے کلام کی

توصیف کر دیا یول دسول انام کی

کرو نہ ذکر خطا کا بعطا کی بات کرو سنو سنو!کرم مصطفا کی بات کرو اگریہ جاہوکہ دوسائی دل تمہارے خن رسول پاک کے جود وسط کی بات کرو (دیاش میروردی)

> وئی اک در ہے تجدہ گاہ دل او سوچنا کیا ہے وہیں جل کر تعلمے گا،زندگ کا مدَّ عا کیا ہے خرد دالے نہ سمجے ہیں نہ سمجیس کے بھی اس کو یہ اہل دل سمجھے ہیں مقام مصطفا کیا ہے

> ہتنا دیا سرکا ملکتے نے جمولو آئی مری اوقات جیس بہلو کرم ہے ان کا ورت جموش تو ایسی بات جس عشق در بلخا سے پہلے مفلس و خشہ حال تھا جس نام جمر کے جس قرباں اب وو مرے حالات نیس

(SE278)

(ٹریقے نیز )

میرے دائن کی جو کھے ہے ان کے کرم کا صدقہ ہے
میرا والی میرا وال شہر عدیث والا ہے
کوان ہوں کی اور کیا ہول کی مید دنیا والے سمجھے میں
نعت نمی کی پڑھتا ہوں جی مجب سے ہوش سنجالا ہے
(منیا جوالی تی)

مفلس پر کرم قرما کمی مے نبیوں کے نبی رفتہ رفتہ تم ویکموش موجاؤں گا اک روز فنی رفتہ رفتہ واکن پہنچائے کر دِسٹر سرکار دو عالم کے در پر جاکیں گے بھی اِن شاءاللہ ہم لوگ بھی رفتہ رفتہ

(شبیرحسن انساری)

جب محمد کی بات ہوتی ہے۔ وجد علی کا کتات ہوتی ہے ایک ادنی کی ویردی ان کی ہر بلا سے نجات ہوتی ہے (شاوانسارالہ آبردی)

جو کملی والے نی کے غلام ہوتے ہیں معین و تعلب و فرید و نظام ہوتے ہیں معین معین متلوں کے کام ہوتے ہیں مرے مضور کی شان کرم کا کیا کہنا کہنا گیک جمیکتے ہیں متلوں کے کام ہوتے ہیں (مندش مظار)

نسل اتسال کی قیادت آپ کے باتھوں میں ہے اتسب عاصی کی عظمت آپ کے باتھوں میں ہے کیا خبر کس یا مد پر جند فے گی حشر میں ہم غلاموں کی تو جند آپ کے باتھوں میں ہے اسرار عارفی)

یے خودی میں مینے کے آجاتے ہیں آفا کے غلام میں منافق کے غلام میں میں جس جا بھی اللہ اللہ کا اللہ میں آج میں اللہ میں آج میں اللہ میں خاشقان مصطفا کو وہ بڑی اللہ میں کی

(عبدالتارنيازي)

یہ ساری کا نات خدا کی ٹا کے بعد تھے پڑھ ربی ہے اگر کے نام کی (رافیدوارالی)

بھیجا ہے خدا درود شریف تم پ یا مصطفا درود شریف تام محضورت زبان پ آیا ہے سب پڑھو پر ملا درود شریف ان کو مشکل کٹا بھی پڑھتے تھے ہے ہے مشکل کٹا درود شریف مرتبہ اس کا ہو گیا اکلی درد جس نے کیا درود شریف جس کومولود سے تی نفرت ہو وہ پڑھے کیا جملا درود شریف جس کومولود سے تی نفرت ہو وہ پڑھے کیا جملا درود شریف بر مرض کے لئے شفا ہے بی دائع ہر با درود شریف تیری بخش ضرور ہو گی گئور تو نے تکھا پڑھا درود شریف تیری بخش ضرور ہو گی گئور تو نے تکھا پڑھا درود شریف

اے شہنشاہ مدید العملوٰۃ والسلام ندید عرش معلی العملوٰۃ والسلام میں وہ کی ہوں جیل قادری مرنے کے بعد میرا لاشد ہی کے گا العملوٰۃ والسلام میں وہ کی ہوں جیل قادری (جیل قادری)

تھ کوآ تھوں میں چمپالوں کدر کھوں دل میں تھے کوئے مجبوب خدا وکھ کے آتے والے دل کی دھراک سے باد بی ہے شوآل ہر دم دیکھنا کھر جھے آتا میں بلانے والے

(سیدوماہت صین توتی) نقش بائے شہ بحر و بر ال حمی رہنما خوب سے خوب تر بال عمی

اب جس کو مری اور کیا چاہیے جب می مکرم کا در فل عمیا اب جس کو مری اور کیا چاہیے جب می مکرم کا در فل عمیا (سید مقبول حسین شارب)

جب جيز ۽ بيج جم چاہتے جي حضورا الى آئھول جي نم چاہتے جي حضورا الى آئھول جي نم چاہتے جي حضورا آپ کو کتا جم چاہتے جي حضورا آپ کو کتا جم چاہتے جي حضورا آپ کو کتا جم چاہتے جي (مسرور کِنَّل)

> قیامت کے وان دیکھنا شان کیا ہے وہ خود کیا ہیں اور ان کا دامان کیا ہے مرمے پاس فعد ی کی کے علاوہ معلا اور بخشش کا سامان کیا ہے

آج افتک مرے نعت مٹائیں تو جیب کیا

من کر وہ جیسے پاس بلائیں تو جیب کیا
دیدار کے قابل تو کہاں میری نظر ہے
لیکن دہ کمجی خواب میں آئیں تو جیب کیا
ان پر تو گنہ گار کا سب حال کھلا ہے
اس پر بھی وہ دائمن میں چیپ کی تو جب کیا
منے ڈھانپ کے رکھن کہ گنہ گار بہت ہوں
منے ڈھانپ کے رکھن کہ گنہ گار بہت ہوں
منے کو مری و کھنے آئیں تو جیب کیا
وہ شن دوعالم جی اد ببان کے کرم سے
صحرا جی آگر بھول کھیل آئیں تو جیب کیا
صحرا جی آگر بھول کھیل آئیں تو جیب کیا

(ادعبداعيوري)

آپ کے در سے شاآیا کوئی بے نیلی مرام کیسجے جھ پہلی کرم جس ہوں غلام این غلام آپ کی ذات گرامی لائق صد احرام آپ پر لاکھوں درود اور آپ پر لاکھوں سلام

(اسرآرعارتی)

تی ٹی اللہ ونیا میں ہوئے جب مصطفے پیدا تو ہے جانوں میں جینے کا ہوا ہے حصلہ پیدا دیر مصطفے پیدا دیر مصاب اس الا مصطفے پیدا دیر مصراتی الا میر اچار سوط دی تھا کہا ہے ۔ یدونیا ہوگی تابال ہوئے جب مصطفے پیدا (سید و والعقدار مسین تقوی)

سردر انبیا کی ہے محفل کی، لیجے کہ حرا جموعے جموعے

آپ سنتے رہیں میں سنا تارہوں ، ذکر صلی علی جموعے ہمو سے

مبر تسکین عالم ہے یار جی ، دفتح رہنے وقع ہے میلار نی

آپ بینمیں ہا کر ذرا برم کو، ہوگی رحمت فدا جموعے ہمو ہے

ماشتو! حاصل زندگ ہے کی از عرک کی حتم بندگی ہے کی

ہر گھڑی ہوزیاں پر نیازی آگر، مدحی مصطفا جموعے ہموسے

(مبدالتارنازي)

وبلیز یہ سرکار کی جو لوگ پڑے ہیں۔ وہ خور بھی بھلے ان کے مقدر بھی بھلے ہیں ہوں نقشبندی، چشتی افظامی و فریدی۔ سرکار کے سے فانے ہراک سمت کھلے ہیں (نیازی)

آئے حضور یاد تو آئے ہیے گئے جن عاصول کومندندلگاتا تھا کوئی شخص منی ند ہو برباد پس مرگ اللی جب فاک اللہ برگ اللی جب فاک اڑے میری مدینے کی موامو دے ڈالیے اس بخشش کا صدقہ اے جارہ دل اور وحسن کی بھی دوا ہو

(حسرره برسوي)

این میخوب کو اللہ نے صورت بخش ید بیضا کی کلیم اللہ کو نعمت بخشی اور عیمانی کو مسیحائی کی دولت بخشی اور عیمانی کو مسیحائی کی دولت بخشی میرے سرکار کو بے مردہ زیارت بخشی

کولُ آجائے طلب سے جمی سوادیتے ہیں۔ آئے بہار تو ہر دکھ کی دوادیتے ہیں۔ گالیاں دیتا ہو کو کُی تو دھا دیتے ہیں۔ اعظم اللہ نے معفرت کودہ سیرت بخشی

(اعظم جشق)

دل کی ہوتی ہے ہر دُعا پوری دل شی باب ِ قبول ہوتا ہے اس کو ہوتا ہے دل کو ہوتا ہوتا ہے دل کو ہوتا ہوتا ہے دل میں رسول ہوتا ہے دل میں رسول ہوتا ہے دل کو ہوتائیں ہے دل کا مرش جس کے دل میں رسول ہوتا ہے دل کا مرش منافق منافق منافق منافق منافق منافق منافق منافق منافق کا در اللہ منافق منافق کا در اللہ منافق منافق کا در اللہ منافق کی در اللہ منافق کا در اللہ منافق کی د

جواب سے کہ ہو مح شا خدا جسے جواب سے وہ مخار کل بنائے گئے جواب سے کہ وہ نہ ہوتا تو کھیلیں ہوتا جواب سے کہ محمہ کا بول بالا تھا جواب سے کہ محمہ کا بول بالا تھا

اُٹھ جاتا ہے جدائی کا پردہ تماز میں عقبے کا چین مفلد کا وعدہ تماز میں سوال میر کہ ہو تعریف مصطف کیسے
سوال میر کہ کی وہ عرش پر بلائے مملے
سوال میر کہ انہیں کیوں کیا حمیا پیدا
سوال میر شب معراج کیا اجالا تھا

مودا ہے اپنے ملا ہے بندہ نماز علی یہ قبر علی ایس سے محشر علی ہوشفی دو جہانوں پر ترا اور کرم چھایا مہے عاصوں پر سائبال بن کرترا سابیدہے (غلام علی بلیل اندن)

ایمی ایمان میں کال نہیں ہے ری مشکل کوئی مشکل نہیں ہے

(عبدالنن اكبدادر) آپ بي افضل خداك بعد تصديمتمر چشم الطاف وكرم مومرب باكتان ير

(رفع الدين وكي) جال قدائ الله إلى رسول الله

اے رسول ہاتھی اے رحمۃ للعالمیں روز تحشر جب سوانیزے پہآئے آفاب

ئی کے در کا جو سائل نہیں ہے کرم سرکار کا جب سے ہوا ہے

آپ کا رتبہ ہے ادراک بشرے ماورا اے حبیب کبریا،اے مبزگنبدے کمیں

ول گدائے تو یا رسول اللہ کاش جر مونے من زبان بودے

آفاق ہا گردیدہ ام بھی تال و رزیدہ ام بسیار خوبال دیدہ ام بیکن تو چزے دیگری من قدم تو مال شدی من تو شدم تو مال شدی تا کس نہ گویہ بعد ازیں من دیگرم تو دیگری تا کس نہ گویہ بعد ازیں من دیگرم تو دیگری

(اميرخرو)

ول ورد سے بہل کی طرح لوث رہا ہو سینے پہ تملی کو ترا ہاتھ دھرا ہو آتا ہے فقیرول پہ آئیس عار کھھ البا خود بھیک دیں اور خود کہیں مثلنا کا بھلا ہو

آداب بظامت

موج لے محرابیا محکانا کس عالم میں وحوشے کا وداوں جہاں میں ان کا حوالہ کل بھی تھا اور آج مجی ہے کیے گمنا سکا ہے کوئی ان کی عزت وعظمت کو ان کا تا خوال الله تعالی كل يمي تعا اور آج مجي ہے جوليس ماني رجه ان كامياني أنيل اين جيها ان کے داول یر کفر کا تال کل مجی تھا اور آج بھی ہے مرش بری سے قرق زیل تک لو لو شام و سحر جنن ولاوت شاو جہال کا کل مجی تما اور آج مجی ہے حسن وحسين فاطمه زجرا بيارے بيارے مولا على آل ئي کا رحيہ إلا كل يكي تھا اور آئ كى ہ اک جادر کے مائے کے بے محرا مادا مرابے بیج تی کنے کا دو شالہ کل بھی تھا اور آج بھی ہے غوث وقريد وخوانيد وصابرسب تنرب ركلوالي بي تو تو تدمیم أن كا متوالا كل بحى تما اور آج بحى ب

وہ جن کے دامن رصت سے آگئے ہے۔ گند گار کو ملک ہے ماملا کا بیار انٹیل کی ذائے گرائی سے فرض ہے بیادیہ بروز حشر جمیں بھولنا نہیں سرکار (ادیب)

جم كوروح كى بيجان تدسمجا جائے عبكر توركو انسان تدسمجا جائے

بیرل نماز کیوں نہ ہو معراج موغین یاتا عروج وقرب ہے بندہ نماز میں (عدالسم بيدل) لوَّ بَكُرُ وَيَا مِنْ كِيا فَهَا وَيَصِحْ كُو اگر طبیبہ نہ ہوتا دیکھنے کو فب امری محد کو باوایا خدا نے ایتا جلوہ دیکھنے کو کیا ہے دوبان دیکھنے کو وہ جس نے ویکھاہے اک بار طیبہ زماند ارک کیا تمنا دیکھنے کو چل تھا تور سے جب تور ہے (الآل جعفري) راز اس کو قائل کرتی ہے خوش نظر بخوش معاش کرتی ہے م دور کو عال کرتی ہے رحت مصطفح عليه خداكي فتم ((B,on))

#### نعت تك

(معاجبزاوه خان اختر عميم نتشوندي)

نام محر الخل و بالا كل بحی تھا اور آئ بھی ہے مشکلیں سب كى نالنے والا كل بھی تھا اور آئ بھی ہے بدل فیل مشکلیں سب كى نالنے والا كل بھی تھا اور آئ بھی ہے مب سب سے بیارا سب سے زالا كل بھی تھا اور آئ بھی ہے معمل ہے والیم روثن، تار كی كا اب كیا كام میرا نی دنیا كا اجالا كل بھی تھا اور آئ بھی ہے كا كم میرا نی دنیا كا اجالا كل بھی تھا اور آئ بھی ہے كل بھی مب ان كھی ہے كل بھی مب ان كھی ہے كل بھی مب ان كھی ہے والوا جا كو اابوش كے نافن لو بیارا نی سب كا ركھوالا كل بھی تھا اور آئ بھی ہے مردو ان كو سجھنے والوا جا كو اابوش كے نافن لو مردو ان كو سجھنے والوا جا كو اابوش كے نافن لو مردو ان كو سجھنے والوا جا كو اابوش كے نافن لو تھی ہے مردو ان كو سجھنے والوا جا كو اابوش كے نافن لو

ہزار بار بشویم وائن زمشک و گلاب ہنوز نام تو محفق کمال ہے ادبی

براد بار دہن کو گلب سے دھویا پر اب بھی نام ترالوں تو ب اوب تھرول بے میرے کھید دل میں ترا مقام سعید ای حالے سے میں کول فوش اقتب تھمرول

(منتوم أرد وترجمه: مصاجزاده خان اختر عرفم نقشوندي)

مِن وَّجهِكَ النَّبَيرِ لَقَد نُوَّرُ القَمَرُ بعد الاخدا بزرگ ترکی تصد مختر

يا صَاحِبُ الجمَالِ وِيَا مَيُّدَ الْبَشَرِ كَا يُسْكِنُ النَّمَاءُ كَمَا كَانَ حَقَّهُ

ا کے دیکر کسن اے بھر کے سرداد چہرے سے ترے علی جائد ہے پُرانوار حکن علی نہیں ادائے حق توصیف بس سے کہ خدا کے بعد میری سرکار

(منظوم أردوترجمه مصاحيز اده حان اختر عرتيم تعشيدي)

ایسے انسان کو انسان نہ سمجما جائے (سید حیدرعہائی آنوی)

(سید حیدر عباس اموی) سر په دشت کی گھٹا جموم کے چھائی ہوگی محفل صل علی جس نے سجائی ہوگی

(نازی)

دو خیل میں تو حارا کھ خیل کوئی مجل مو وہ حارا کھ خیل

آئے مری تقدیر تمنا تو یک ہے والی شریس ول اول کا جا او یک ہے جوانبيل كبتا بانان بي مير يي

جب گذگارول کی طیب یس رسانی ہوگی رد زیمشرونی ہوگا سرے آتا کے قریب

کیا سمندر کیا کنارا کھے نہیں جو نہیں ہے نام لیوا آپ کا

پہنچوں در سرکار پہ جاہ تو مجی ہے بیان کی رمنا ہے جمعے جمیعیں جمعےروکیں

## رزق کی کشادگی کیلئے

حصن حمین کی روایت ہے کہ سرکار دو عالم سلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے
ارشاد فر ویا ہے کہ جس کے یہاں رزق کی تلی ہے اور وہ پر بیٹان رہتا ہے تو
است چاہئے کہ وہ جب اپنے کھر جس داخل ہوتو سب سے پہلے المتام ملیکم
ورحمت اللہ و برکات کے اور پھر در وو وسل م پڑ سے اور آخر جس ایک بارسورہ
اخلاص پڑھے۔ انشا واللہ جد تی رزق کی تنگی ختم ہوج سے گ

منانب: ١٠٤٠ كرجم على صد يقى متندى طابرى

ہم جہاں بھی آئیں جائیں دب انادے ساتھ ہے خوف کیوں ول ٹی بٹھائی رب انادے ساتھ ہے جو تی کا او گیا اللہ اس کا او گیا بخش ویں ساری خطائیں دب انادے ساتھ ہے بخش ویں ساری خطائیں دب انادے ساتھ ہے (اندمیاں حافظ ایکاتی)

جے اللہ کہتے ہیں ترائی شان والا ہے دو عالم کا وہ خالق ہے اکیلا ہے ترالا ہے هیقت میں جو ہے بعدِ خدا تعریف کے قابل دو عمدِ اللہ کا بیٹا عمد کمل والا ہے (محمدِ اللہ کا بیٹا عمد کمل والا ہے

تری دھوں کا دریا سر عام کال دیا ہے گھے بھیک فل دیا ہے مرا کام کال دیا ہے مرے دل کی دھڑکوں ٹی ہے شریک ہم حیرا ای عام کل دیا ہے اس کی دھڑکوں ٹی ہے شریک ہم حیرا ای عام کی بدولت مرا کام کیل دیا ہے مرے دامن گوائی میں ہے بھیک مصطفا کی ای بھیک مصطفا کی ای بھیک می ہے بھیک مصطفا کی ای بھیک رہا ہے میں دیا ہے اس دیا ہے اس دیا ہے میں دیا ہے اس دیا ہے اس دیا ہے میں دیا ہے دیا ہے میں دیا ہے دیا ہے میں دیا

(قاسم جانگیری) کھے آپ نے باایا یہ کرم ٹیس تو کیا ہے مرا مرتبہ پڑھایا یہ کرم ٹیس تو کیا ہے درمصطفا ہے الجم میں خود آسمیا گردل سمجی اوٹ کرند آ یو یہ کرم ٹیس تو کیا ہے (قرابھم) جب حسن تفا ابن كا جلوہ تما الوار كا عالم كيا ہوگا بركوئى فدا ہے من ديكھے تو ويدار كا عالم كيا ہوگا جس وقت شف خدمت جس ان كى بوبكر وعرضان وكل إلى وقت رسول اكرم كے دربار كا عالم كيا ہوگا

(جمنومانی)

محشرش شفاعت کا دو حق دار نه ہوگا منجد حار علی ڈوب گا بھی پار نہ ہوگا مخطل علی ترا بیشنا بے کار نہ ہوگا کیا مجھ پہ کرم سند ایران نہ ہوگا کیا مجھ پہ کرم سند ایران نہ ہوگا

آتے ہیں وی جن کوسر کار بلاتے ہیں جو سرور عالم کا میلاد مناتے ہیں ہم نعت کی صورت میں قرآن سناتے ہیں (نیازی)

برسر جیشدآپ کی چکفٹ پیٹم دے ہر دم زیاں ہے مدحجہ شاو اہم دے (رشیددارثی)

وه خدا او به خدا از دیک پاتے جا کی گے مرے آتا عاصول کو بخشواتے جا کی گے (احمال مافظ مرکاتی) سلطان مدینہ سے جسے پیار نہ ہوگا مشکل میں نہ جو یاد کرے اپنے نی کو دنیا بھی سنور جائے گی، جنت بھی ہے گی بدلے ہیں حضور آپ نے دنیا کے مقدر

محبوب کی محفل کو معقاق سواتے ہیں وہ لوگ خدا شاہر قسمت کے سکندر ہیں آقاک نتا خواتی در اصل عبا دت ہے

سرکار ایوں بی آپ کا لفف وکرم رہے فرصت بی ل سکے نہ ورؤ د وسمام ہے

سیّد کو نمن سے جو لو نگاتے جا کیں گے کوئی بھی پرسمال نہ ہوگا عشر میں حافظ کر درؤ و وقعت کی محفل کو بھگاتے رہو جائے مدست شام امم جلاتے رہو کی نہ آ لیکی زنہار خبرو برکت میں ہیشہ جشن صبیب ضدا مناتے رہو (رشیدہدم)

ہونہ یہ پھول تو بنبل کا ترخم ہی نہ ہو چین دہر میں کلیوں کا تبہم ہی نہ ہو یہ بندساتی ہوتو گھرے ہی نہ ہو یہ بندساتی ہوتو گھرے ہی نہ ہو ہم تی نہ ہو ہی نہ ہو تھی اور جم کی نہ ہو خیمہ افلاک کا استادہ ای نام سے ہے بنجس استی تیش آبادہ ای نام سے ہے تو بندس مستی تیش آبادہ ای نام سے ہے تو بندس مستی کو بالا کرد ہے دہر جس اسم محمد سے آبالہ کرد ہے دہر جس اسم محمد سے آبالہ کرد ہے دہر جس اسم محمد سے آبالہ کرد ہے کی محمد سے وقا تو تے تو ہم تیرے ہیں کی محمد سے وقا تو تے تو ہم تیرے ہیں کی محمد ہیں دی جہاں چیز ہے کیا الوری وقام تیرے ہیں

(علامها تبال)

جس سے لی کوئن کو عزت اُس سے عزت مالی ہم اُس سے لیے گی ہم کو عزت عزت وال نام ہے وہ معتقرائے چھوٹے مندسے اُس کی کیا تحریف کرے جس کو خدا خود جاہے ایسا جاہت والا نام ہے وہ

(معتظرہائی)

ہم مدینے اگر گئے ہوتے کا م بکڑے سنور گئے ہوتے اُن کی چٹم کرم جو ہو جاتی پار ہم بھی اُتر گئے ہوتے اُن کی چٹم کرم جو ہو جاتی پار ہم بھی اُتر گئے ہوتے (ظَفْراکبرآبادی)

مخزن دوعطا کا ہے دوفیق کا دریا ہے اے کا ٹی دوخا کن کو کہد یں کہ پر بیرا ہے (حضرت سیدخا کن علی ضاحت سنی) مدشکر کہ پھر آیا سرکار کے قدموں میں میں رہ کو پکار آیا سرکار کے قدموں میں اک نست سنا آیا سرکار کے قدموں میں اک نست سنا آیا سرکار کے قدموں میں (منتہجی رحماتی)

جس کے در اقدی سے خالی نہ کیا کوئی گڑی ہوئی اک بل میں تقدیر سنور جائے

اللہ نے پہنچایا سرکار کے قدموں میں زو کیسے بھلا ہوگی اب کوئی دعا میری جھے جیسہ جمی والال کیا تذرکو لے جاتا

الاریب ود عالم علی فیل این کا جواب قرآن کے ماند قیس کوئی کاب اک بار تو پڑھ کر کوئی دیکھے وال ہے چر دیکھے کہ ملتا ہے اے کتا افواب

(صابرين زوتي)

لذت لعیب ہے جھے کوڑ کے جام کی النہ کی پڑھ رہا ہول ورود و سلام کی فالن نے اس پہلاست مقبلے تمام کی تعظیم جس نے کی ہے تھے کے نام کی

(عيم فرا آبال علم)

شفتے الوریٰ کا جو نام آگیا ہے شفاعت کا میری بیام آگیا ہے تنظم کی کم ہے کیا فخر میرا مرا نعت خوانوں ٹیں نام آگیا ہے (حکیم محمدا قبال گلش) حضرت ستيد تا ابو بكرصد بق مني الله تعالمة

کیا بیاں کیجے ' میں کی مدین کہ رہا ہے اضمی خدا مدین ہم نقی عارثور میں بھی رہے ہم نے آتا ہے کی وفا مدین مشکلیں اس کی موکنی آسال جس نے جب بھی کہا ہے یا مدین مشکلیں اس کی موکنیں آسال جس نے جب بھی کہا ہے یا مدین

حضرت ستيرناعمر فاروق يني الدنوالي منه

مجر کی دُما فاروق اعظم مجر پر فدا فاروق اعظم زمائے میں بہت مادل میں لیکن میں اُن سب سے سوا فاروق اعظم بشر تو کیا کہ رُدد نمل پر ہے تہارا دہدیہ فاروق اعظم

حضرت سيدناعثان غنى بنى الدنالات

دین کے رہ بر ہیں علی ان فنی تعلق دُنیا پر ہیں علی ان فنی دین کی خاطر لٹائے جان و مال دین کے یاور ہیں علیان فنی مرح ذوالورین ول سے کیجے جان تیقیر ہیں علیان فنی مرح ذوالورین ول سے کیجے جان تیقیر ہیں علیان فنی (فان اختر ترقیم)

حضرت سید ناعلی اگر تضی رض اشته لاهد حمایت بی امامت میں شجاعت میں حوادث بی علی واور علی رہبر علی حیدر علی مولی مرک عزت مرک منظمت مرک افغت مرک تبعت علی مولی علی مولی مولی مولی علی مولی علی مولی مولی مولی مولی در نی ہے رہوں جمل ہے کام ہوجائے مرا بھی اُن کے غلاموں جمل ہام ہوجائے دائے کہ زمانے جمل ہر طرقب دائے کام ہوجائے کر ایک ہار تی کا قطام ہوجائے رخیس حضور کی تعنیں تمام اہل و میال کروں جس سے کی اہتمام ہوجائے جو کی ہے جس نے نائے دسول و آلی رسول خوا کے خوا کرے کہ وہ متبول مام ہو جائے نظا کرے کہ وہ متبول مام ہو جائے در حضور ہے حاضر قلام ہو جائے در حضور ہے جائے در حضور ہے حاضر قلام ہو جائے در حضور ہے جائے در حضور ہے در

(صاجزاده خال الترعيم فنشيندي)

حضرت عا كشرصد القدرض الله تا كانتها المست عا كشر البشر البي عائشه ولي خير البشر البي عائشه وي عائشه وي عائشه وي عدد المرح الوكر أضل الم المحاب المن عردول عن المرح الوكر أضل المن تقام المحاب المن عودول عن الله المرح المرح

حضرت سيده فاطمدز برارسي الذي الا

نور چشم مسطق یا سیده یا فاطمه جان ودل تم پر فدا یا سیده یا فاطمه مادر شیر وثیر دار دار مرتف اے بتول یا صفا یا سیده یا فاطمه ستاروارثی)

منبط کے قوار علی تھے مبر کے قوار حمین آپ کی جمبر فاطمہ اپ کی جسی بین دونوں ہی جوہر فاطمہ دی حسب ' املی نسب زہرہ لتب دی الاحرام سب سے بہتر فاطمہ سے بہتر فاطمہ (نیازی)

حضرت سیدنا امام حسن رضی الله تعالی عند کا نکات مبرکے اے شہر یارِ محترم الل تسلیم در منا کو تونے بخشی زندگی اے تسیم باغ رصت قمع برم فاطی آشنائے سر وحدت اے حسن این علی (أعظم چشق)

ریاض ہی کی نظفتہ کلی ہوں میں باران رحمت سے بچوٹی بچلی ہوں علی بلیل محلقن مصطف تنے مجھے یہ شرف ہے قلام علی ہوں

(غلام على بلبل اندن)

شاہ مردان خیر ہزدان مولاوشکل کشا مافظ دسن میں میں گئی علی جان علی دہ شجاعت ہو عدالت ہو سخادت یا کرم ہر قررتی جاری کا ہے زیر منوان علی

(رشيدوارثي)

(سيدذوالفغارعلى نفوي)

حضور سيد ناغوث اعظم دستگير رستاندهد بب دم آخر خيال آيا بدے فم ساتھ جيں ان کي رحت بول آهي، فم شکر ہم ساتھ جيں اقر يا کيوں دورہ جيں ميں کوئي تنها تہيں موں غلام فوث اعظم فوث اعظم ساتھ جيں

(منور بدايولي)

حضرت خواجه غریب **نواز**ره نداشطیه (الحاج گلش اللی قادری)

کیاں ہے کوئی تمہاری مثال یا فواجہ معین دین ہو تم یا کمال یا فواجہ ہے معطف بی کی جیسی تمہاری سیرت باک ہے معطف بی کا جیسا جمال یا فواجہ ہیشہ آپ نے مکتوں کی لائ رکھی ہے ہیشہ آپ نے مکتوں کی لائ رکھی ہے کی بروھے کو روھہ ترا سیجھے ہیں کئی روھے کو روھہ ترا سیجھے ہیں تمہارے در کے جو مثلا ہیں سب فی تفہرے دیا ہے فواجہ تمہارے در کے جو مثلا ہیں سب فی تفہرے دیا ہے فواجہ مرے دیا رکی کشتی ہمنور جس آن کھنی مرے دیا رکی کشتی ہمنور جس آن کھنی خواجہ مرے دیا رکی کشتی ہمنور جس آن کھنی خواجہ مرے دیا رکی کشتی ہمنور جس آن کھنی خواجہ مرے دیا رکی کشتی ہمنور جس آن کھنی خواجہ مرے دیا رکی کشتی ہمنور جس آن کھنی خواجہ مرے دیا رکی کشتی ہمنور جس آن کھنی خواجہ مرے دیا رکی کشتی ہمنور جس آن کھنی

حضرت سیدناامام حسین رضی الله تعالی مند دب داور محشر ہے تبی شاخی محشر محشر ہمی گذگاروں کی کیا خوب بنی ہے غرقاب مبھی ہو نہیں سکتی مری مشتی جب ساریکن سرید حسین ابن علی ہے

(ij)

ہے تول یا کے رسول اکرم حسین جھے سے جدائیں ہے جو انہیں ہے تام اس محاب بیں کرم آمام رشتے می سے تھکم مقام مبرو رضا جل لیکن حسین سادو سرائیس ہے ۔

حفرت امير خسرو، نظام اوليا ہے پوچھ
کيا حسيں مقام ہے بايا فريد کا
جب كك روہ جہان عن ذكر في كرو
ونيا كو يد بيام ہے بايا فريد كا
جو گلشن فريد پركتا ہے جال ناد
سيا وي غلام ہے بايا فريد كا
آتے كى كام حشر على تبعت فريد كى
جادي تو غلام ہے بايا فريد كا
جادي تو غلام ہے بايا فريد كا
جادي تو غلام ہے بايا فريد كا

## عبدالة ماب جيلاني رمة الدمليه

آئے ہمکاری در یہ مہدالا ہاب جیال جاکس کے مجدول ہر کر مبدالا ہاب جیال اتا ہیں ہے جیال ہو کہ مبدالا ہاب جیال قو ہے کی ترا در مبدالا ہاب جیال قو ہے کی ترا در مبدالا ہاب جیال کھاتے ہیں دوز در یہ دان دات تیرا لکر اور ی دان دات تیرا لکر اور ی دان دات تیرا لکر قدموں میں جنوہ کر ہیں لات مجر تہادے کیا حیوں ہے منظر عبدالا ہاب جیال کیا حیوں ہے منظر عبدالا ہاب جیال خوٹ اور ی کے صدتے اور ی تن کے صدتے مشکل عاری مل کر عبدالا ہاب جیال

لقب تمبارے ہیں ہندانولی عطائے رسول
دیا خدا نے تمبین وہ کمال یا خواجہ
تی کے صدقے میں کردو نہال کائن کو
کہ اب تو ہوگیا جینا محال یا خواجہ

#### \*\*\*

عال صحب ش التمر فریب آواز جال این علی مرب سر فریب آواز غلام خواجہ کہا جارہا ہے محش کو ہے کیسی اس بر کرم کی تنفر فریب آواز

#### \*\*\*

مطا کرم کا اشارا ہو یافریب ٹواز حمیس تو سب کا سارا ہو یافریب ٹواز حمیس تو سب کا سارا ہو یافریب ٹواز تہارے در کا اک اوئی محما ہے گئش بھی بلند اس کا متاما ہو یا فریب ٹواز بلند اس کا متاما ہو یا فریب ٹواز (الی جھش الی)

#### بأبأ فريدرجة الثداليه

کیما حسین نام ہے بابا فرید کا مرد کا مرد کا مرد کا مرد کا مرد کا خواجہ تطب کے یہ لال ہیں چہاں میں مام ہے بابا قرید کا چہاں میں مام ہے بابا قرید کا

خوت وقطب ابدال وولی بھی خواد فرید اور میرے تی بھی خوش بیں تمهادے مرک میں آکر العل سٹی شہباز آلکندر گرک بات عنائے والے سب کا ساتھ نبھائے والے خال عمریکم اختر کے رہبر العل سٹی شہباز آلکندر

> آ فآب طریقت صفرت صوفی باسر منیر خان پیرا کرآ بادی تنشدی

رفست ہوئے ہیں جب سے وہ محرّم قلندر
اب یاد آرہ ہیں رو رہ کے ہم کو اکثر
مونی منیر پیلے مونی منیر پیلے مونی منیر پیلے
مُرشد نے ہمی فلافت دے کر انہیں لوازا
وہ برمعرفت کے ایسے تھے اک شاور
مونی منیر پیلے مونی منیر پیلے مونی منیر پیلے
یم ادب کی بے فلک وہ کررہ شے فدرت
مونی منیر پیلے
رکھتے تھے پائی اپنے اک طم کا وہ وفتر
مونی منیر پیلے
ان کی جو شامری تھی بے فک وہ دل نشیں تھی
مربوط اُن کا لیجۂ مخصوص اُن کا تیور
مونی منیر پیلے
مربوط اُن کا لیجۂ مخصوص اُن کا تیور

خوف و خطر نہیں ہے منگوں کو اب کمی کا

سر پر تی ہے چادر عبدالة ہاب جیلاں

دب کی عزاجوں ہے، بیارے نبی کے صدقے

مخف کی ہے در پر عبدالة ہاب جیلاں

جادید کی ہے خواہش، کنے فکر کے صدقے

ہو ہاتھ میرے سر پر عبدالة ہاب جیلاں

ہو ہاتھ میرے سر پر عبدالة ہاب جیلاں

ہو ہاتھ میرے سر پر عبدالة ہاب جیلاں

غران عقيدة معرت في سيرة على شهباز فلندر

(صاجزاده فان اخر عديم نتشندي)

اورو نگاہ امام جعفر افعل سخی شہباز تعدد اول رہی ہے دنیا مل کر افعل سخی شہباز تعدد آل ہیں اواد و فل ہیں سردار و سرتاج ولی ہیں سہون کے شہباز تعدد افعاد میں ہیں جگل جگل ایستی ایستی اللی جہلی افعل سخی کی جہباز تعدد جگل جگل ایستی ایستی اللی جہلی افعل سخی کی کی جلوہ جلوہ جلوہ معظر سطار افعل سخی شہباز تعدد جگ کی کی جوتے ہیں سب لوگ نچھاور افعل سخی شہباز تعدد کوئی ذال کے جاتا ہے من کی مراد ہراک یاتا ہے جولی جرکر افعل سخی شہباز تعدد جولی جرکر افعل سخی شہباز تعدد افعاد کی میں سب جمولی جرکر افعال سخی شہباز تعدد افعاد افعا

#### نعت

کھے افک شب ہجر بھا کیوں نہیں کہتے یوں ول کی گلی آگ بھا کیوں نہیں لیتے جب بخش دیا شرف غلای شد خوبال مِرُ رُحُ مے فتاب اینے بنا کوں ہیں لیتے کر جٹے جو وٹو کے تم قرب ٹی کا ول اینا مدید علی بنا کیوں تہیں لیتے دیج ای وہ ہر ایک کو منہ یا کی مرادی أس ور كا كدا خود كو ينا كيول فيس ليخ ردية يو تريح بو يهال درد و الم ش اب مل کے مدید شن دوا کول فیس لیتے اب بم ے سے جاتے ہیں جر کے مدے مركار مديد ش بلا كيول فيل ليج ساتی مجی تی اور این ساتے مجی اب رہز ے خوار و چاو بور کے اُٹھا کیوں قبیل لیے درکار ہے آجھوں میں اگر روشی عاقل خاک رور مرکار لکا کیاں جیس کیے جب بھی تھی ہاتھ اپنشفت سے میرے مرپر رکھتے تھے ہاتھ اپنشفت سے میرے مرپر رکھتے تھے ہاتھ اپنشفت سے میرے مرپر کر رمونی منیر پیکر اموان انجی الدین تھی)

آ قاب طریقت دعنرے صوفی ماسٹر منیر خال پیکر اکرآبادی صوفی منیر آخان کی یاد آئیگی ہہت صوفی منیر آخان کی یاد آئیگی ہہت تصدیخ ن وری کا چھڑا جب کہیں کمی نظرول سے دور ہوگئ ول سے نہ جانکے دیر ہوگئ وری کا آج مجمی محفق تی ہوگی (رشید ہورم)

ستناہے زمانے میں فریول کی مداکون سرکار دو عالم مرے آتا کے سواکون اللہ بھی بھٹے گا خطاکون اللہ بھٹے گا خطاکون اللہ بھٹے گا خطاکون (روائل جودمیوری)

ب اجازت أس طرف تظري الله سكنا ہے كون وہ ته بلوائي تو الن كے وَر به جاسكا ہے كون بن كو دن اللہ على ہے كون بن كو دنيا شي فيل أن كى شفاعت بريقيس حشر على أن كو جنم ہے كون حشر على أن كو جنم ہے كون

آئی حمی جمل طرف سے وہ آواز ذم بذم فوراً نبی کے بوصد کے اس طرف قدم نزدیک تر خدا سے بوت سرور ام بات بات تھا گر دو کمال سے کم بات اس طرف رسول آدھ حمی خدا کی ذات کا کار کیا جدا اس خردین کی ہے ہے بات بات کار کیا جدا اس خردین کی ہے ہے بات

(الأكلانيس)

الله الله يه بمار المنفل من وشام ب بر كمزى لب ير هم مصطف كا نام ب الله الله الله بي المرام الله من الله الله م وكر ميلاد في كرما رمول كا عمر بحر منظر و جلته رمو جلنا تمبارا كام ب المرجمتي )

> منتی احمد عمرادل ال قدرمرشاریه دوزوشی جری زبال پرددت مرکاری د کو کرشان خی مکر بط بطت ریل بدهقیده جنت میل ان پر خداکی بار ب

(Ling 5)

#### نام محريظة كسب

الک پر تور ہوا نام جر کے سیب
مریال ہوگا خدا نام جرکے سیب
ہم کو کیا کچو نہ ملا نام جرکے سیب
ایک رہنا ہے سدا نام جرکے سیب
حوصلہ ہم کو ملاء نام جرکے سیب
مث کی آن کی خطا نام جرکے سیب
ٹی آن کی خطا نام جرکے سیب
ٹی گئی درج ویلا نام جرکے سیب
ٹیش ان کا بھی ملانام جرکے سیب
شیش ان کا بھی ملانام جرکے سیب
معتبر ہیں یا خدا نام جرکے سیب
معتبر ہیں یا خدا نام جرکے سیب
یہ کرم جو یہ ہوا نام جرکے سیب

جو لما ہم كو ملا نام فحرك سبب
كر الي الم محد كو دفليند دل كا
زيب دينا ند تھا ہر در په بينكنے رہنا
تفرقہ ہم كومنانا ہے ذمائے ہے عربی
جان دتن آ قا پہ قربان كريں كے سوہ د
ایوں لماحفرت آدم كو محى الى نام ہے فين جب ہى جھكو فم واكام نے فيراہے ترقيم
مرجد بن تن باك كا كيا تيجيے بيال
قطب وابدال وولى ، جاتى وسعدى ورضا
شامل قافلة راج مديند موں عربيم

تا اہد ہورش طوفاں سے رہیں کے محفوظ جو سینے مرے آتا کے حوالے موں کے اُن کو جند مرے آتا کے حوالے موں کے اُن کو جند سے والے کا خدا حشر کے دان مدرق دل سے جو اُنیس جائے دائے ہوں کے

آوج ہے اپنے مقدر کا ستارہ ہوگا جس گمزی محدد تحفرا کا فکارہ ہوگا خلد وکوڑ سے دہے اُمت عاصی محردم یہ کہاں رحمت عالم کو گوارہ ہوگا

(ٹرینے ٹیر)

مویٰ ہے کیا تم نہ جھے دیکھ سکو کے محبوب کو دیدار کرایا شب معراج کو زیرار کرایا شب معراج کو زنیس طالب ومطلوب ہی فاقی محبوب ہیں محبوب ہیں معراج (مزیز الدین فاتی القادری)

مالات سب بدل دید آقا کے نام نے
سب پر کرم کیے در خیر الانام نے
آجائے اِک جملک جونظر آپ کی آنہیں
لگ جا کی حن والے بھی دل اپنا تھائے
ایار مصطفا ہول مرا یہ طلائ ہے
اے باروائے چاو جھے دو نے کے سائے
اسے کی آرزو ہے ایسے کیجے آبول
سے نعت جوکمی ہے تہارے قلام نے
سے نعت جوکمی ہے تہارے قلام نے

( المراحمة الادري)

مرشدياك

یہ کیف ہے مُرشد بیاک کا جدھ میں نے دیکھا خدا مل میا
علی مل کئے تو ہم لے کھ اللہ کے اور خدا مل میا
تیری دَین کا کیکہ فیکا نہ نیس جو ماٹھا تھا اس سے ہوا مل میا
بنانے کو داو جانت مجھے میرا مُرشد و رہنما مل میا
بنانے کو داو جانت مجھے میرا مُرشد و رہنما مل میا
بنارہ کی چوکٹ ہوگی اب زیادت بیرک
بنارہ کی ہے اس قدر دال میں محبت بیرک
بیرکی احداد سے ہوتی بین آسان مشکلیں
بیرکی احداد سے ہوتی بین آسان مشکلیں
بیرکی احداد سے ہوتی بین آسان مشکلیں
بیرگی احداد سے ہوتی بین آسان مشکلیں

(ما تح فروال)

الله نے آقاک بلایا شب معراج بے بردہ بھال اینا دکھایا شب معراج اللہ اللہ عمراج اللہ معراج اللہ معرا

أواب تظامت

جو در شاہ دیں سے لما ہے۔ وہ سکوں کب کین سے لما ہے ہم گومب کھو سین سے لما ہے ہم گومب کھو سین سے لما ہے (محتربدالونی)

تبلنی ویں کے داسطے کمر کمر بھد نیاز ذکر نبی کی برم سجانے کا وقت ہے محفل تھی ہوئی ہے سلام وورود کی یہ دفت نصیف پاک سنانے کا وقت ہے (یردفیسرا قبال تظلیم)

بارہ ریج الاول کے دن کیہا سال تھا جگ مگ جگ مگ پیدا ہوئے سرکا ردد عالم سمارا جہال تھا جگ مگ جگ مگ طُلدِ بریں سے حوریں آئی آمنہ کی لی کے آگان میں لورانی تھا کوشہ کوشہ سارا مکاں تھا جگ مگ جگ مگ (محروجدانی)

ساغر کی آرزو ہے نہ بیانہ چاہیے ہیں اک نگاو ترشدے قانہ چاہیے بیرم نماز عشق کی ہے خدا گواہ ہر وم تصور رہن جانانہ چا ہے (بیدموارق)

یوں تو لاکھوں مدجیس جیں آپ ساکوئی جیس ایک محبوب خداہے دوسرا کوئی خیس جرم جتنا عی نہ کون ہو بخش دیتا ہے خدا وہ جے کہ دیں کہ جائیری خطا کوئی فیس

(تلوري)

مدح خوانول كو مدعوكرني كاشعار

جب مرے کوئی نہ آیا تھائے آیرو رکھ لی ٹی کے نام نے کر رہا ہوں ذکر عمل مرکار کا محتبد معزا ہے ممرے سائے (عبوری)

نست پڑھنا صاحب قرآن کی خیرت رصان کی وہی ہے حفرت رصان کی وہف ہے مقدر آپ کا مشدر آپ کا شخصہ ہے مقدر آپ کا شخصہ ہے مقدر آپ کا شخصہ ہے مقدر آپ کا

ترجمان اللي سقت آپ جين وارث راو طريقت آپ جين آپ جين هي شاخوان رسول آپ کو ماسل ب عرفان رسول دسول دسول دسول

یہ آگر پڑم پیش لب کھول ہے۔ اس کی قسمت کا لکھا ہول ہے واصف رمعترت روالا بن کر کان چی حرف کا دس کھول ہے بڑی بڑی بڑی ہیں۔

(طاہرسلطانی)

- آداب مظاهت

الله علوه حضور جبال كك تظر<sup>ط</sup>ي مچیوٹی می چر کتا برا کام کر گئی ایسے ش اے اجل تو کہاں جا کے مرکعی جنت مری ثلاہ سے ول سے أثر كني (شاب كيرانوي)

یہ کیفیت بھی بارہا جمعہ بر گزر کی أتكمول في خود من سارا بدينة موليا بائے ورول ہے جوا مر جما ہوا دیکھاہے جب سے جس نے دیار تی شاب

روش کر حیات نائے رسول ہے جلووں کی کا نات شائے رسول ہے مرمائة انجات ثائے رمول ہے ي بات كدر إ اول يدے احا و ے (منیرقسوری)

> أجالے وہن میں ہیں روشی حمیر میں ہے ك فاكرك في مريد مرع فيرض ب مدي سنجول كا يارو شرور سنجول كا کہ بیسٹر تو مرے ہاتھ کی کیر جی ہے

(سرشارمد نتی)

ان کے اعداز کرم کے کیا کھوں کتے ہیں نام موع درياً تي بادان أوداع تكرال دوستو! بب بھی دُعا مالکو تو ہے مالکو ضرور رُ كُ سُبِتُ أَن كَاعُمُ أَن كِي رَضًا \* أَن كِي المال (اديب،ائه اوري)

بشن میلاداللی ہے اُن سے الفت کی دلیل ہر مسلمال کی ہے جابت جشن میاا دُالتی جشن میلاؤالنی ہے ماحت تھب ونظر ہے مبت کی علامت جش میلاؤالنبی

( ما برسلطانی )

ے مكال سے لامكان تك رغب كاشان رسول جس طرف بھی جائے کا ہے بینان رسول جنت الفرووس من إك ون تيس جاوَل كاش جمع کو کافی ہے غلای غلامان رمول

(للنسآخ) آئے نہ کول سلام مدوآ لاب کا یش ذکر کر د با بول دسمالت مآ ب کا الله كي نظر كا جودس نظر بي برك تم كيا جواب لاؤك اس لاجواب كا (252)

> مو متوازب سے کرو ہر دم موال مصطفا و کچر لو کے خواب عن اِک دان بھال مصطفا ورين كي كي ش كائن ين كون ين والدين علوہ کر ہر شے میں ہے حسن وحمال مصطفا حشّ کیا ہو تو پھر اہلِ نظر کے واسلے آج بھی دنیا میں روثن ہے تھا لی معطفا

(سعدنتشنوی)

## لوآئی ہے شب برات

(صاحبزاوه خان اختر ندتیم نتشیدی)

رب کے بندو! سر کو جمکاؤ او آئی ہے شب برات آن الی تقدی جگازاد آئی ہے شب برات اٹو اٹو مجد کو جاؤالو آئی ہے شب برات ووزرج سے چھٹارا یاؤالو آئی ہے شب برات آج اوا ہے خالق وحولا 'پہلے فلک پر جلوہ قرما مب این دائن پھیااؤالو آئی ہے شب ہرات کر بیں تفامال باب تبھارے رب بھی ندہوگا رامنی برارے یاؤں کا کر آئیں مناؤ لو آئی ہے شب برات کراو الیہ عام عوکراس ہے کما ہے الیہ کا الد محمر ابنا جت میں بناؤ او آئی ہے شب بمات الی بے بیشب بیداری رب کے صفور آنو ہول جاری مجر جر جا او رب سے یاد او آئی ہے شب برات مَالِنَ كُلِ فِي عَم كُو مِطا كُارات بِ اللِّي بركت وال نعت أس كے محبوب كى كاؤا او آئى ہے شب برات ذكر أي ونها كي دوات ذكرتي عقبي كي راحت ذکر کرو اور خوش ہوجاؤ کو آل ہے شب برات آئ کی شب ہے ڈرودوں والی اپٹی کرو آ کا کوسلامی پڑھو ڈرود اور رب کو مناؤ کو آئی ہے شب برات سنتے ہیں ان سے نعت آؤ پاتے ہیں ہم ترور سیّد حسن علی کا یہ انداز و کھنے مرح رسول لے کر مدینے گئی ایر تم سیّد حسن علی کا یہ اعزاز د کھنے

(صاجزاده خان اخرّ برتم خشیندی)

منی زان فر السدد مرایارشدد بدایت مرحد منی دان فر السدد مرایارشدد بدایت مرحد منی جمال الدین بدردی افتادری دوش جمال الدین بدردی افتادری جمال دوش از شع درسات مخرس منی جمال دیم اللی طریقت شارع ز مو مدیث مرای مرای مرای خرس منی جمال بخر علم و مرح مکمت مخرس منی جمال ایمان کے داون می ان کی جابت ہے ترجم اللی ایمان کے داون می ان کی جابت ہے ترجم کرتے میں آت کی درست مخرس منی جمال کرتے میں آت کی درست مخرس منی جمال

(صاحبزاده خان اخر يم تيم فتشيندي)

غزل

غزل

رہے اپنیم سکون وقرار مشکل ہے ایک میں آئے ہے آیا کہ پیار مشکل ہے وفا کے بدے جاتا ہے توانا ہے تو اس میں اب بھی تر مقبار مشکل ہے کروں میں اب بھی تر مقبار مشکل ہے کیا ہے تیرے تفافل نے بھی کو وہواند سکون پائے لی سے قرار مشکل ہے تیرے میان مور بول رات وان جاناں تر وہ قید ہے جس مے فر ر مشکل ہے تر وہ قید ہے جس مے فر ر مشکل ہے ترکی وہ قید ہے جس مے فر ر مشکل ہے

ورب اپنے تی کی بدولت دے ہم کو جند کی بٹارت
کی کو اور کہتے جاد کو آئی ہے شب برات
حاضری طیب کی تمنا کب ہوگی پوری اے آ قا
اپنے مَدَیُ کو اب آتے بااؤ کو آئی ہے شب برات
اپنے مَدَیُ کو اب آتے بااؤ کو آئی ہے شب برات

(ساجر اده فان اخرى يم فتشدى)

فرشعر ع حدداً بإذاستاد شعروض ربها يدم ورخ درب معزت سيد صاحمان على حسنى

(صاحبز ادہ خان اسر مدیم فتشندی) جملا تا رہا جس سے سدا ایوان اوب روشی کا وہی جنار تے ضامن متی تل ترقی کی طرف تافلہ شع عربیم یا ادب قافلہ سالار کے ضامن منی

آداب بظامت

سر اینهٔ ابلسده ایر دانهٔ شمع رسالت امیرافتکر شاه خوانان رسول تا اینه شمیر ش درگاه عالیه تنی سیدنا حمیدالوماب شاه جیلانی نرست حید رآباد محلت ال حضرت الحاج کلشش المحکمی قادری فریدی جیلانی

(صاحِزادوفان اخرّ ندَيْم تَعْشِيدي)

ل من قسمت سے جس کو قرب گاش الی مرال اس کے ہوئے ہیں حضرت گلش الی اس کے ہوئے ہیں حضرت گلش الی سے جی ان کا دیوانہ زمانہ سے سیدا ان داسلول سے شیرت کلش الی حاضر خدمت ہوا ہے ہے ترجیم ہے لوا ہی اس کوجی حاصل ہے بے شک نبست کھشن الی

#### \*\*\*

نور جیئم شاہ جیلاں یا تنی حبدالوہاب اک نظر سوئے غریبالیا تنی عبدالوہاب صفرت کلشن الی بھی جیں کتنے خوش نصیب جین تمہادے در کے دربال یا تنی عبدالوہاب زمانہ اینے معماعب جمل جاتا ہے عربیم بے جادا کوئی خم محماد مشکل ہے (صاجزادہ خان اخر عربیم تعشیدی)

غزل

ایوں ہے ہی وہ سچا نہیں ہے کوئی شکانت ہی کی نہیں ہے اسے خبر کیا ہو زعری کی ارش آگر چہاب تک جی نہیں ہے اسے خبر کیا ہو زعری کی وہ جانے کیا لطف کیف وستی کہی تہاری نظر ہے جس نے شراب اللہ کی ٹیس ہے لگاو عالم میں چاہے کہ اومری نگاہوں میں وَرحقیقت فیل ہے وعدے کا پاس جس کو وہ آدی آدی آدی تو ٹیس ہے میں وہ مسافر چیپ کتنے مسافت زعری میں جن کو الم کا کوئی الم نہیں ہے خوش کی کوئی خوش نہیں ہے میں چر ہے سورج کو چ ہی خوش کی کوئی خوش نہیں ہے میں چر ہے اجازت خمیر نے بیر ے دی تبیی ہے لاوں میں جب کو چ ہی ہی جس کر ہے ہیں کہا کوئی الم نہیں ہے ہی جانے کی کرئی خوش نہیں ہے میں چر ہے ہیں کا کوئی الم نہیں ہے اجازت خمیر نے بیر ے دی نہیں ہے جو کہا تبیی جس کی جس کی جس کی جس جی کہا تبیی جس کی جس میں دکا بیتیں جس جو بیات دل کی ترقیم میں نے کہی کہی ہی دی جس جی کرنیوں ہے دوہ بات دل کی ترقیم میں نے کہی کری سے کہی نہیں ہے دوہ بات دل کی ترقیم میں نے کہی کری سے کہی نہیں ہے دوہ بات دل کی ترقیم میں نے کہی کری سے کہی نہیں ہے دوہ بات دل کی ترقیم میں نے کہی کری سے کہی نہیں ہے دوہ بات دل کی ترقیم میں نے کہی کری سے کہی نہیں ہے دوہ بات دل کی ترقیم میں نے کہی کری سے کہی نہیں ہے دوہ بات دل کی ترقیم میں نے کہی کری سے کی نہیں ہے دوہ بات دل کی ترقیم میں نے کہی کری سے کی نہیں ہے دوہ بات دل کی ترقیم میں نے کہی کری سے کہی نہیں ہے دوہ بات دل کی ترقیم میں نے کہی کری سے کہی نہیں ہے دوہ بات دل کی ترقیم میں نے کہی کری سے کہی نہیں ہے دوہ بات دل کی ترقیم میں نے کہی کریں ہے کہی نہیں ہے دوہ بات دل کی ترقیم میں نے کہی کری ہے کہی کریں ہے کہی نہیں ہے کہیں ہے کہی نہیں ہے کی کری ہی کی کری ہے کہی نہیں ہے کہی نہیں ہے کہی نہیں ہے کہیں ہے کری ہے کہی نہیں ہے کہیں ہے کہی نہیں ہے کہی نہیں ہے کہی نہیں ہے کہی نہیں ہے کری نہیں ہے کہی نہیں ہ

(صاحبز اده خان اخر عد تم فتشبندی)

\_\_ آجاپ ب**ظامت** 

میکی میکی عفر بدال یا دشیم میکی میں معرضت پہ اولئے والے عقل سلیم بھی ہیں بدم نعت نبی سے لے کر برم خطابت تک خان بھی ہیں بداختر بھی ہیں اور برتیم بھی ہیں

(خنشّ مثلغر)

نام اِن کا بہ فعنل دب کریم ہر جگہ یہ بی محرّم ہوگا خان اخر عربی یہ ہر دم شاہ لولاک کا کرم ہوگا (خلش مظلم)

حمق عِن کے کلیم میں بے شک مدتی دل میں عیم ہیں بے شک عالم و فاشل و خلیب و اورب خان افتر ندتیم ہیں ہے شک عالم و فاشل و خلیب و اورب خان افتر ندتیم ہیں ہے شک

یہ نعت کوئی کا ہے سلسلہ بہت ہی قدیم شریک جرم ہے ہی جی تو خود بھی رب کریم سوائے عفرت رحتان نے کی الفت کتاب "ماتی کوٹر" ہے ان گلوں کی تمریم

(طلاستيرم الرجعفري)

خدا محفوظ رکھے خان اخر حقیقت ہے جو میں ہملا رہا ہوں پڑھی "میلادِ حسان" میں نے نیر سرورد احش و مستی پارہا ہوں (علامہ نیر مہال جعفری)

لیس الی تکسیں حضرت آپ نے واقعی کردی کرامت آپ نے "
"ماتی کور" ہے لافائی کتاب ہم کو بجش ہے یہ دولت آپ نے

ہو تریم کمتریں پر بھی نگاہ النفات ہے نی کا یہ نگا خوال یا کئی عبدالوہاب

مثلق ومربان ـ مداريء كرفيرالانام عظيمة محت مجوب لا حفرت الحاج سيد قمر الرقم مال شاه

نلام مصطفا ترالزمان شاہ مصطفا ترالزمان شاہ مصطفا ترالزمان شاہ نمائے کے جو محکرات ہوئے ہیں ان کا آمرا ترالزمان شاہ جو ظاہر ہے وہی باطن ہے ان کا جو رالزمان شاہ وہی باطن ہے ان کا جی مرد یامنا ترالزمان شاہ دل آرا ہے عربے ان کی عمیت ول آرا ہے عربے ان کی عمیت جیں ایسے خوش اوا قرالزمان شاہ وہی اور ان مرالزمان شاہ

(صاجزاده فان اخرَ يَهِ مِنْ مُعَبِّندي)

مسنف" آواب تلاست فان اختر نکریم نشهدی کی نظری المار تغیبان ورنشه فلات کی منزاف می باند پایش مناور از مقیدت و میت اور مغبت ال شبیاز آفندد شاخ سر مربز کی طرح مجملنا باغ کے پیول کی طرح مجملنا مول جاؤ کے اسپند آپ کو تم فان اختر ندیم سے جملنا رفائش منافر)

طف والناعبدالتكورمبت ثاونعت آركنا تزريد حصيبان چيشتى فقاى محبت كے سافر سے سرشارتم موجر حسين خوشا! عاقب شاو ابدار تم موجر حسين تمارى محبت كا ب معترف برتمهارا عربي النام معترف برتمهارا عربين بينية بوے على منسارتم موجر حسين

(صاحبزاده خان اخرَ مُدَيّم نَتَشَهُندي)

مسكراكرد كجيثا

اپ جاروں ست دنیا کو منور دیکنا
اے عربی خوش کام اپنا مقدر دیکنا
خوش وں کے شہر جس تم کو میسر آمیا
نور خوش اور موا کا اک سمندر دیکنا
اک مسلسل روشی چرے پہ مجینے کی عربی
آکے جس تم مجی چرد سجا کر دیکنا
زعری جر کا تمہارا یہ افاقہ ہے عربی
سبز محبد کو مسلسل مسترا کر دیکنا

(الإى ثابر)

انا کافی ہے دعری کے لئے رکہ لیں آتا جو توکری کے لئے میں جت ہی لا جواب محر میں تو تویا تری کلی کے لئے آپ پر آقا کرم کردیں نمیمیا ان سے کی کی محبت آپ نے کہ کہد دہا ہے زبیر صاف کو کی اوا حمال کی سقت آپ نے (زبیرالمدجودی) کی مبکریں خان اخر عمیم کل کی مبکریں خان اخر عمیم کل کی مبکریں خان اخر عمیم بارہا ہم نے پرکھا ہے شہر آئیس پیار بی بیار میں خان اخر عمیم بارہا ہم نے پرکھا ہے شہر آئیس پیار بی بیار میں خان اخر عمیم بارہا ہم نے پرکھا ہے شہر آئیس

استاذالعلی افخ الدین معرف علد منتی احمد میال برکائی بند؛ خاص خدا بین معرف احمد میان نعت گوئ مصطف بین معرف احمد میان قادری مجی اور رضوی مجی بین برکائی مجی بین اے عربی اس سے موا بین محضرت احمد میان

سکریزی جزل اجمن شیدائیان رسول جناب محبوب عالم شیروائی
اجمن شیدائیال کے آپ جی سکریزی
کرتے جی ب بارہ مدن معناوں کا بیٹمام
بید دُما محبوب عالم کے لیے کیجے عربیم
ذکر محبوب رود عالم کا کریں دنیا جی عام

(صاجراده خان اخرع ميم نتشيدي)

أحاب بظلمت

(صاجزاده فان اختر عربم معشندی)

\*\*\*

أستاد كيائه متيت

مرے استاد کی جو پہ نہاہت مہرائی ہے استاد کی بدوات ہی جھے ہر کامرائی ہے لئے ایس جھے کوخان اخر ندیم استاد کیا اجھے کہ میری ذات ان کے فن کی ک ادنی نشائی ہے جھے استاد تخشا ایسا مرکار دو عالم نے لیوں پر جس کے ہر استاد کی مرح خوانی ہے نظامت پر مرے استاد کی میب داد دیتے ہیں مطارے واسطے یہ داد د جہ شاد مائی ہے میں ایٹ چھوٹے منہ یہ داد د جہ شاد مائی ہے میں ایٹ چھوٹے منہ یہ یہ کون طائی ہوں مرے استاد دالا کا جہاں میں کون طائی ہے

سیرت مصطفی تو اے عابد کی دادت ہے ذعری کے نئے (عابد شیرازی عطاری)

2-اريل 1998 مروز جعرات بروتع تاح ليوشى برعطا كا كالتعاب

نظامت میں ثانے مصفہ کی ہے وریائے کرم اُن کی عطا کا ندیم نیک خو کی تاج پڑی ہے صدقہ سیف محبوب خدا کا آقا کا کرم ہے مرے آقا کی مطاہے دامان طلب گوہر مقصد ہے ہجرا ہے ہے سیف یہ پہیان غلاقی ٹی کی بیتاج یہ اعزاز اُسی ور ہے طاہے ہے سیف یہ پہیان غلاقی ٹی کی بیتاج یہ اعزاز اُسی ور ہے طاہے (سیف فر ہج چین)

تم نا خوان می ہو کر ہوئے عالی مقام اب تمہارا تن ہے جنعہ عمل مکال کوڑ کا جام ہے دُعا رب ہے ہی تم کو بلائس اے عربیم آرزو کی آرزو یہ ہے کہ ہو تم کو دوام (عیم آرزو)

معروف ومتازنقيب كافل نعت عظ

بناب محمد مليم ميمن اوريار محمد وفق يشخ بناب محمد مليم

سلیم میمن کا ہے نظامت کے فن میں بے شک مقام اُضل رفتی شیخ اپنے ول میں رکھتے ہی کا میں احرام اُضل رفتی شیخ آپ کی یہ خوبی تدتیم کے دل میں بس گئی ہے نیول یہ اپنے سجائے رکھتے ہو ذکر خیرالانام اُضل نیول یہ اپنے سجائے رکھتے ہو ذکر خیرالانام اُضل (صاجرادہ خان اختر تدتیم خشیندگ)

عائد نے شق کیا ہے کلجہ ڈوبا سورج بھی پھر لوث آیا کیا ہے ان اشاروں کی عظمت از زیس تا فلک میماری ہے به محن وقریده دشا محی جای و سعدی آل مها مجی سب کی نعتوں سے میں نی کی ابوئے خوش دل کوم کار ہی ہے عرش پر بھی تو دھویں کی ہیں آساں پر بھی خوشیاں ر پی ہیں جشن معراج کی مجی بثارت جش میلا و سے آربی ہے از ابراہیم تا اتن مریم 'سب نے دی ہے گوائی یہ تیم آمد مصطفے ہے مسلم یہ خوش کی گھڑی آرہی ہے کیا کروں کیے چینجوں مدینے اکاش بن جا کیں ایسے قرینے یاد هم محمد کی ہر دم قلب کو جمرے تزیاری ہے اے تدمیم ان کی مرحت کئے جائوش تعیبی کے موتی لئے جا تھے یہ ان کی ٹکاو کرم ہے میسی تھے یہ ہیشہ دای ہے (صاحبزاده خان اخرّ عربیم نشوندی)

میں ان کی شان کے اگن کہاں کچھ نار کر پایا ہے ول ان پر فدا ہے ان پہ قربال ذعرگائی ہے ہے ان پہ قربال ذعرگائی ہے ہے ان کی علی تعلیم کا شمرہ ہے ان کی علی تعلیم کا شمرہ مرے اشعار میں دیکھو صد کینی روائی ہے ہے ۔ مرے اشعار میں دیکھو صد کینی روائی ہے ہے ۔ مرے اشعار میں دیکھو صد کینی روائی ہے ہے ۔

#### آمرمصطفياتك

آند معطف برید دنیا کیس کیس خوش یا رس ہے سارے عالم میں ہے دھوم ان کی ہر طرف روشنی جماری ہے حعرت آمنہ کو مبارک ' رب کا بیارا ملا ہے آئیں کو اب کھلے گی حلیمہ کی قسست کی جوش ہو کے اِترا رہی ہے كول نه موسب محرول ش جراعال أدمعينظ ب تمايال رحت حل تعالی جہاں میں این جلوے جو و کملاری ہے اب اعرمے سے کول واسلہ واہر طرف جب نی کی میا ہو روشی بھی تو خود جگھا کرا گیت میلاد کے گاری ہے ما تک لوایا تکنا ہو جوتم کو جو بھی لیناہے مولا سے لے لو آج موقع ہے اے تاجدارہ عرش سے بدمدا آری ہے مب كم جملت ول كمل محة بين لا من جاك سبهل محة بي الی اُمِری ہے مج مسرت شام عُم دویتی جاری ہے معطفظ آمکتے ہیں زہیں پر' بن کے ہم پُرخطاؤں کے رہ پر رّبِ رحمان کی شان رحمت کیارہ منظر بید دکھلا وی ہے

#### متناز وشعله بيال خطيبانِ ملّت \_

علامه صاحبزاده الوالخير محمد زبير تنشيدي علامه مفتی احمد ميال بركانی علامه مساق احمد ميال الدين بركانی علامه موقی رضا محمد مبای علامه غلام احمد بیگ قامی مفتی جمال الدين لغدادی القادری علامه قاری محمد سليمان احوان علامه مولانا محمد بن يا بين مفتی مبد الرشيد نوری علامه مولانا دلدار حسین الرشيد نوری علامه مولانا دلدار حسین مختشدی علامه مران محمد شريف تنشيندی علامه مران ما مرادی مطاری -

## حيدرآباد كغما كنده نقيبان محفل:

مزت مآب جناب میف می شیخ بناب طفر قرایش بناب مین می میلیم مین بناب طفر قرایش بناب می سلیم مین بناب قبله امید علی بهام بی رفتی شیخ بی شیخ شریف الدین نیز بشفیق الدین عبال می می الدین می می الدین المی می الدین المی می الدین المی می می الدین المی می می الدین المی الدین المین الم

## حيدرآ باد كےمتاز ومعروف ثناخوانان رسول ﷺ

معفرت مونی محرجیل خان صاحب نششندی نیس احد کا دری\_آغا موهر على (معدارتي الواردُ ما فيز) \_ آمّا و والفقار على (كل ما كنتان الواردُ ) \_ ساكي منظور حسین کھو کھر ۔ نڈیم احمد فریدی (محولڈ میڈلسٹ)۔ حبد الصمد قادری نعت کو مجھ جاوبد خان فريدى نعت مح راستاد عبد القادر طك رآعا المبرعل (كل الكتان الدارة) في عديم اقبال (كل ياكتان الدارة) يحد فاروق رحماني عمد المعلم راجیوت لعمان تومر (کل یا کتان ایوارد) منیف مع شرازی سیدسن علی عابدي (ايوارد يد) \_استاد غلام حسين \_ محد اخر فيخ \_ محد اخر في حد ع مع في عجد اياز فاروتي فيم وارقي فيم الجم (كل باكتان الوارة) يعبد الرشيد رباني آمف ا قبال وكيل حسين نظامي \_ آمف جيس عجروقارچشتي \_ حافظ عجم الدين \_حيدالرؤف ميمن مبد الرؤف في مجر الورسليم مسيد فيدعلى يجيم اختر قريتي مشابدهلي روش مسيد ذى شان الله عبد اللليف بالحى - اولى متين منيس عالم قريدى وحدمتنتم وحسنين سعيد فيم عمران لودي في همران ميمن سيروردي في عامر سيروردي استاد ثنا والله مهروردی۔اشفاق الدین قریش۔راشد شخ۔مطا ء الزمن فریدی قامی۔ارشد سيروردى عمر شابد تنشيندى محر جهاتلير نتشيندى عمر شابد متبول فلام مصطل قادري معين قادري فيهم نظام فياءارجن شاه قاري عمير استادمحدا قبال الجم مجمه صدیق ندار داله محمد ایاس غوری - الی ج محمد اسامیل را تا محمد عاسر هیخ به سید سلمان قادري مولانا محمرا قبال دارقي محمدز وبيب اشرقي مولانا سيدمقبول محمرنوري مرزا فرخ بيك سيدند يم حسين سيدصا برحسين \_

شجره

(صاحبز اده خان اخر عربيم معتبندي)

حق نے مجھی ہے زبال حمد و ثنا کے واسلے اب کلے ایں محت شاہ بدا کے واسلے یا الجی رخم فرہا مصطفا کے واسطے یا رسول اللہ کرم کیجے خدا کے واسطے یا اللی جمع کو سجائی کی دوات کر نصیب معرت بوبكر يا صدق وصفا كے واسطے یا اہمی مجھ کو رکھ انسانے ہے تائم سدا حطرت رفاروق یا عدل وصلا کے واسطے یا الی جھ کو ہر بے فیرتی سے دور رکھ حعرت عان شاہ یا حیا کے واسطے یا الی جمد کو مصیاں نے متایا ہے بہت رخم فرمادے علی مرتعنا کے واسطے یا الی محمد کو آفات دمصائب ہے بیما کر بلائیں زو شہید کر بلا کے واسطے یا خدا تھش البی کو غمول سے دور رکھ غوث أعظم تاج وار اولياء كے واسطے بو سدا پُرسوز قلب حضرت صوفی علیم قاسمید سلطے کے اولیاء کے واسطے یا الی جھ کو رکمنا قادری تازیرگی قدر عجبر القادر قدر ب تما کے واسطے

یا الی بھے کو ولیوں کی عقیدت کر عطا خواجہ سنجر عطائے مصطفا کے واسطے حضرت خواجہ بہاء الدین شاہِ فتش بند فیض رکھنا اُن کا ہر دم جھ گھا کے واسطے میں وہ سائل ہوں کہ جس کو ہانگنا آتا نہیں ہو نظر آئ ہوں کہ جس کو ہانگنا آتا نہیں ہو نظر آئ ہوں جہاعت میں علی کی اے خدا قبر سے آٹھوں جماعت میں علی کی اے خدا حضرت شاہ جا منا کے واسطے معزت متندا کے واسطے ہو تدیم نے توا پر حضرت بیگر کا لطف

## وربار مصطف تنطق سے

جو کچو کمی نے ماٹا دربار معطفے سے بی خورد پایا دربار معطفے سے جو کو طلا سے مردہ دربار معطفے سے آیا مرا بادہ معطفے سے آیا دربار معطفے سے کی اور اس سے بود کر ہوگا سٹر کہیں کا ہو کر ہے جو کو آنا دربار معطفے سے آیا ہوں جی جرت کو آنا دربار معطفے سے آیا ہوں جی جرت کو آنا دربار معطفے سے چکا مرا تعمیا دربار معطفے سے چکا مرا تعمیا دربار معطفے سے بیت جی مرا کے اندا کے بیت جی مال دل کا بیت دربار معطفے سے بیت جی مرا کو کا رشتہ دربار معطفے سے بیت جی مرا کا رشتہ دربار معطفے سے بیت جی مرا کا رشتہ دربار معطفے سے بیت جی مرا کو کا رشتہ دربار معطفے سے بیت جی دربار معطفے سے بیت بیت مرا کا رشتہ دربار معطفے سے بیت بیت مرا کا دربار کیا دربار معطفے سے بیت بیت مرا کا دربار کیا دربار معطفے سے بیت بیت مرا کیا دربار کیا دربار معطفے سے بیت بیت مرا کیا دربار کیا دربار معطفے سے بیت بیت مرا کیا دربار کیا دربار معطفے سے بیت بیت بیت مرا کیا دربار کیا دربار معطفے سے بیت بیت بیت مرا کیا دربار کیا دربار معطفے سے دربار کیا درب

بلل چنستان رمالت عظية الول يأكستان جناب

### الحاج محمد يوسف ميمن

حلۂ پاک کے حتان ہیں بیسف میمن واہ کیا خوب شاہ خوان ہیں ہو سف میمن مدت رشاہ خوان ہیں ہو سف میمن مدت رشاہ مدینہ ہیں گزاری ہے حیات ہم شا خوانوں کی بیجان ہیں بیسف میمن میں میں اوسف میمن (صاحبزادہ خان اخر ندیم تششندی)

معرات چرے عوث من ثانوال جناب عبد الروف ميمن

سرت مرکا یہ دیں کا بید فیفنان ہے جو پڑھی نعت سب کو پہند آگئی نعت نے تم کو پخشا ہے رہے روئف لب پہنعت آئی' رب کو پہند آگئی (صاحبزادہ خان اخر عرقیم نتشندی)

تامرادیب تنبیای ال افت بناب شوکت مصطفا کی (نواب شاء)
تنیب نعت شوکت مصطفا کی! سدا مدح نی ش مم رہے ہو
جہا ل ہوتا ہے ذکر شاہ بطی جیشہ برم کی جاں تم رہے ہو
جہا ل ہوتا ہے ذکر شاہ بطی جیشہ برم کی جاں تم رہے ہو

معروف تنافرال مسطفے بناب عطاء الر حمال قاسمی معروف تنافرال مسطفے بناب عطاء الر حمال قاسمی معرف موست بخشی کرتے ہو مطاء الزندان حم کو اللہ فنل نے عظمت بخشی کرتے ہو مدت آقائے عظمت بخشی (مساجر ادو خان اخر ندیم نششوندی)

بیت الحرم میں گویا دل کھو گیا ہے ہمرا

دابت ہے تمنا درباد مصطفے ہے

دوجے پہ جب پڑھا ہے میں نے دردو پیم

آیا جواب گویا درباد مصطفے ہے

اب کول ہو حشر کا تم اب کیا خوف صیال

بخش کا ہے اشارہ ورباد مصطفے ہے

مولا علی وزہرا کو حسین حیرے آتا

مولا علی وزہرا کو حسین حیرے آتا

لے لو عربی استدقہ کورباد مصطفے ہے

الے لو عربی مصدفہ کورباد مصطفے ہے

کا تب المحدقہ کورباد مصطفے ہے

المحقق میں میں حیرے آتا

### شنراداحمه

فروغ نعت میں ہوں تو بہت سے نام ہیں لیکن نہایت ہے نام ہیں لیکن نہایت ہی اہم کی اہم خدمات ہیں شنراد احمد کی جہال نعت کا ہر فرد ہید اقراد کرتا ہے مہارک کوششیں دن دات ہیں شنراد احمد کی

میدان نعت کے ہیں یہ شغراد شہ سوار میں نعت کے ڈموز سمی ان پہ آشکار سمجما عربیم نے آخیں نعتوں کا اک چین سمجما عربیم نے آخیں نعتوں کا اک چین سمجملتے ہیں جس میں پھول عقیدت کے بے شار (صاحبزادہ خان اخر عربیم نعشیندی) بله بدانت کو خالقهٔ نعته مجموعهٔ مد معنا نکسهٔ کرکسهٔ جناب سید و والفقار مسین شاه نفو می کری

نعت کوئی ہے بلاشہ مباوت نقوی ہم کو اللہ نے بخش یہ معادت نقوی " م کو اللہ نے بخش یہ معادت نقوی " دوفعنا لک ذکرک " کا کلام مسعود ہے تہادے لیے اللہ کی رحمت نقوی (صاحبز ادوفان اخر تدیم نشہندی)

ماہزادہ معزے خوب پر محدزدول جناب خواجہ حیبیب نقشیندی
خواجہ کریم ان کو کلے سے فائی کے
درگاہ زر ول ہے جو سرکو جمائیں کے
معنل ٹن آئی کے حرے آئی کے جب حیب
بھر خواجہ ذر ولی وہاں تحریف لائیں کے

(صاجزاده فان اخر تدیم نشوندی)

استاد ناخوان رمول بناب مونی محمد میل حال ساحب نعت کی دنیا عمل میں مقبول جیں صوتی جمیل جیسے اس کل زار کا اک چول جیں صوفی جمیل

(صاجزاده فان اخر تدمیم نعشندی)

معروف تاخوان رسول جناب عبد القاور ملک اورا ولیس متنین عبد القادر کا ہے مقام بلند دیکے اللہ این کا نام بلند (صاحبز ادوخان اختر ندیم نتشیندی)

(صاحبزاده خان اخرّ ع تيم نششيندي)

مروف نعت آر گنائز رما حزاد محوفی خلیل اکر حمال تادری تا تی رحانی

یه ول وجال آپ په قربال چی صوفی خلیل
محرے ول جس آپ بی مہال چی صوفی خلیل
انعقاد ذکر آتا ہے ہے اللت آپ کو
آپ بی آتا کے یہ اصال چی صوفی خلیل

(صاجر اوه خان اخر عريم نشوندي)

ٹاخوان مسلظ منظ و فرار اور خیای الورسلیم ذاکر خیرال نام انور سلیم نیک خو نیک نام انور سلیم کاشن ذکر نبی کا پیول ہے اور ہے کلشن کا غلام انور سلیم (صاجزادہ خان اخر تریم فتیندی)

141

ورطريقت حزت صوفي غوث محمد مكاي كبل يش این بار کو کمیل کی جوا دیتے ہیں ياد كى بابا فكور الي دوا ديج بي جائش فوٹ تھ جیں مرے باباکے مب كوچو ورال عبت كايدها وية بي

(صاحبزاده مان اخر عربم نتشبندی)

پرتهل کمپری میلسید پائرسیکنڈ دی اسکول وکا عج بینٹ 10 مطیف آیا د جناب پروفیسر

سعيدالدين قريتي آپ نے اسکول کا معیار اوٹیا کردیا مرسعيد الدين بين إك تعميد يرور وكار كردا ب افتراف إن كي مماي كا عرقم واقتی ان کی مسامی آری چی رو به کار

(صاحبزاده خان اختر عربیم نششندی) مغمرومترجم قرآك سامنا والتلميا وتعرمت الماسيي عبدالوحيد جان سر جندى بددى (نذوب يسواد) من برم طریقت کی بیاں ہے تشیدی دید یکی ہے ال کی دید یں مجد الب ٹائی کے سفیر جان سر عندی بھی جی جب عبد الوحید یہ دی کے والد این افر عام ہے اُکیل دیکھے کا اُس کی ہو کی عیر (صاحبز اده خان اخر عرقيم تعشدي)

سنئراستادنتيب عافل نعت جناب سييف محمد سيخ اجيري احاد كاش كتا مول مد ديد إحرام یں شخ اور سیف فر ہے ان کا نام عاشق مجيء محمير مجمي بين اور نعت خواس مجي بين يدم رسول ياك سجانا ہے ان كا كام (صاحبزاده خان اخز ندیم نقشندی)

معردف نعبطة أركنا تزرأ سيكريفري جزل أمجمن فيضان مهايه فيتن جناب

اكرم قريتي اختر القادري اين اكرم قريش جي وه خوش نصيب إن ك ونيا ووي مي سنور جاتي ك ذکر کرتے ہوئے اپنے محبوب کا جانب، هم خبر البشر جاكي م

(صاجزاده خان اخرَ عَلَيْمُ مُتَسِّندي)

ثافوان رسول جناب سام قريدي جو بھی مانگا ہے وہ پایا ہے تغییں زار نے یہ گدا ہے آپ کاکل کا حدد آپ یں یہ تغییر کم ترین جائے کہاں در چیوڑ کر آپ عل اس کو جمع کی بندہ پرور آپ ہیں

(ما جزاده خان اخر ندیم نشیندی)

معردف معالی جناب ڈاکڑ مانق کھ دشمعیب (یرب کینک)
خوش علق ہمی جو اور طنمار ہمی جو تم
خلقت کو تم سے فیض طا ڈاکٹر شعیب
تم ی جیشہ شاہ طاید کا جو کرم
سے عربی کی بھی دعا ڈاکٹر شعیب
سے عربی کی بھی دعا ڈاکٹر شعیب
سے عربی کی بھی دعا ڈاکٹر شعیب

جائے الدین قادری نواب دیں کو مطا ہوا ہے کئی کے در سے ہی کا مدد۔ همیر کرب و بلا کا صدقہ الیس کی سے ملا ہوا ہے نتیب عالی انت جناب شیق الدین عمیاتی نتیب عالی انت جناب شیق الدین عمیاتی نفت خواتی کو جائے گا بیادا شیق ایٹے آتا کا دربار گھوم آتے گا ثانوان رسول ﷺ بناب محمد حنیف شیر از ی کیا کرے گا یہ بیان عظمت و شان رسول بب کہ دب و جہاں ہے خود ٹنا خوان رسول آرڈو ہوری او یارب اس منیف ختد کی ہاتھ آبائے ہوؤ حشر وابان رسول ہاتھ آبائے ہوؤ حشر وابان رسول

(صاجر اوه خان اخر عرقم نتشدي)

معروف خافوال جناب نگر مراحمد فریدی

کیا خوب ہیں خافوال بیارے تذریہ اجمد

محفل علی جی نمایال بیارے تذریہ احمد

ذکر نمی نے ابن کو وہ مرتبہ دیاہے

ہیں سب کے دل کا فرمال بیارے تذریہ احمد

ایس سب کے دل کا فرمال بیارے تذریہ احمد

(معاجزادہ خان اخر عربی کا فرمال کیارے تاریم فنشندی)

. آماب بظامت

وزت آب جناب آلا المبيد على جملهم نتيب محفل مر أن كے نتا خواہ بر بر دور بس بر صورت مركارد و عالم كا ربتا ہے كرم بر دم تم تم بھى عد تحب أن كئم بر بھى نظر مو گ خوش بخت تم اليے ہو الميد على بہلم خوش بخت تم اليے ہو الميد على بہلم

(صاجزاده غان اخر ندتیم نتشندی)

شاع فوٹل نصال ادیب بیدنال انام در نیا گوجناب طلق فوٹل نظرہ با ہنر جناب خلق شاعر معتبر جناب طلق شاعر معتبر جناب طلق شعر این پر 10 موتا ہے اور بادا شعر بر جناب طلق

(صاجزاده خان اخر عربم معشدي)

تان دار شعر و آور با کمال بختل و سکار طامه الور بر بلوی شعر و آوب کی جان جی الور بر بلوی الی آوب کا مان جی الور بر بلوی بے شک می خن کے شہشاہ جی ترتیم ملک مخن کی شان جی الور بر بلوی

(صاحبزاده خان اخز ندیم نقشبندی)

کیا علی اعلیٰ سعادت کے گل اِسے اُن کے روضے کی جالی کو چوم آئے گا (صاحر اور خان اخر عربی فتشندی)

قائدی ترکید - ہمروت و السار جناب محمد خالد قادری

من تحریک کے علم بروار
خالد تاوری ہمارے ہیں

ہا مراقب ہیں اور شعلہ بیاں

ہم کو یہ جان و ول سے بیارے ہیں

(صاحبر اور خان اخر عربم منشیدی)

محترم جناب محمد سلیم ملینے اید مشریزاد قاف دیدرآباد سے مشتل این کو حضرت فیر الایام سے مشتل این افعام سے مشار افعال نعمت کے کار مظیم کا آتا کے دو جہال کا کرم اِن یہ ہے ہوا جہال کا کرم اِن یہ ہے ہوا جہال کا کرم اِن یہ ہے ہوا جہال کا کرم اِن یہ سلیم کا جہا ہے۔

(صاجزاده خان اخر عرقيم نقشندي)

مدراجمن استذہ یا کتان جناب سیدا کرم علی شاہ ماب اکرم علی سواتے ہیں آنتوں کی تحفیق چنتے ہیں ذوق وشوق ہے تصب نبی کے بجول جیوم اٹھتے ہیں کی کرم کے نام پر کیاای ہیں شک کہ ہیں ہے کمرے عاشق رسول کیاای ہیں شک کہ ہیں ہے کمرے عاشق رسول (صاحبزادہ خان اخر عرقیم تشہدی) وہ شاکر دیے مثال جس نے راقم کی تاج پڑی کا احراز حاصل کیا نتیب محفل ونعت کو

محمداحمر شيخ قادري

یں یہ بیارے محمہ التحمہ شخ تاج پڑی مری کرائی ہے میرے شاگرد یا وفا ہیں یہ دیکھوا چھوٹے کی کیا بوا کی ہے میرے شاگرد یا وفا ہیں کے دیکھوں التر عربی فتشندی)

16 إلى في 2009 وعيد والكيدية على كوكن

## نعت رسول 🎏

ظلبہ بریں کو پائے 'جاتا ہوں شی مدینے اس دل کو دل بنائے جاتا ہوں شی مدینے مدحت کے گیت گائے جاتا ہوں شی مدینے مدحت کے گیت گائے جاتا ہوں شی مدینے زیرہ دہا ہوں گیے 'جی آم سے دور رہ کر آتھ کو یہ تنا نے 'جاتا ہوں شی مدینے شی ہوں خوں کا بارا دیں گے وہی مہارا کی حال دل سائے جاتا ہوں شی مدینے گری ہوئی ہے جات موں شی مدینے گری ہوئی ہے جات موں شی مدینے گری ہوئی ہے جات موں شی مدینے گری ہوئی ہے جات ہوں شی مدینے گری ہوئی ہے جات موں شی مدینے گری ہوئی ہے جات ہوں شی مدینے گری ہوئی ہے جات ہوں شی مدینے گری در سے برسوائی ہرگر برگر در جائے خای اس در سے برسوائی ہرگر برگر در جائے خای اس در سے فیض یانے 'جاتا ہوں شی مدینے آس در سے فیض یانے 'جاتا ہوں شی مدینے

ثافران ثیرین زبان محمد تدیم اقبال ہے گل خوش اوا ندیم اقبال واصف مصطفے عدیم اقبال تیری تعیس جی قلب و جان کی جلا مرحبا مرحبا عدیم اقبال

(صاجرَاده فان اخرَ عَرِيمُ تَعْصُدي)

معروف شاعروشا خوان رمول میلانی بناب عبدالصیمد قاوری نعت خوال کون آیا ہے ویکمو ورا میلان ہیں ہم رفعت ہی ہم کو ملتا تیں آت وحوظ ہے ہے ہی ہم کو ملتا تیں طائی کون عبدالشمد تاوری طائل کون عبدالشمد تاوری

(صاجزاده قان اخرى تم نتهندي)

معردف شام نعت دنا فران معطظ برناب تحد جا و بدفر بدی نعت خوانی کی ہے دولت ہے بہا تم کو جادیہ مولائے کی ہے عطا اپنے کانوں سے اور اپنی آواز سے نعت سنتے سناتے رہو تم سمدا (صاحبزاد و خان اختر تدتیم نعشوندی) ورطریت دسرے صوفی عبد استہم خان نتہندی ہای
مہریاں کیا ہوا تم پر خدا صوفی سلیم
تم ہوئے ہو اک ولی کے دل زیاصوفی سلیم
خدمت مرشد کا بیہ اعجاز دیکھو تو سمی
ایک عالم تم یہ ہوتا ہے فدا صوفی سلیم
ایک عالم تم یہ ہوتا ہے فدا صوفی سلیم
(صاحبزادوخان اخر ندیم فشہندی)

مصنف كشر جموعه إئ نعت ثناخوان رسول وثنا كوجناب

عرمیز الدین خاکی افتادری می گریز الدین خاکی افتادری می گریز خاکی جنمیں کہتا ہے جہاں سارا کی جنمیں کہتا ہے جہاں سارا کی جائی محبوب رب ارض و سوا می خدا نے بان کو بڑا مرتبہ دیا ہے تدیم کہ رہے جی تی ایام ارشل کے مدح سرا کہ رہے جی تشہدی کہ رہے جی تشہدی کہ ایس الم ترشل کے مدح سرا

(صاجز ادوخان اخر يريم تشبندي)

#### نعت رسول تكنف

ب کم پہ کرم سیجے یا رحمت عالم گری کو بنا دیجے یا رحمی عالم حنین کا اور حیار و زبرا کا تعدق جمول مری بحر دیجے یا رحمت عالم اک باد تو عمل عاهر دربار ہوا تھا پیر بھے کو بلا لیجے یا رحمت عالم نائمین بیم جی معبول بیں تی شریف برگری ان کے لیوں پر ہے ثائے مصطفا (صاحبزادہ خان اختر عربی نشخیندی)

باکمال دیر درگ اور خوش می نیاخوان درسوس می نیاخی جناب منظور حسیس کھو کھر مرکار دو عالم کے دو ضے کی زیادت کی مرکار کی اللهت شمل ڈو سید ہوئے ہر دم ہیں ہر فعت کو آقا کی پڑھتے ہیں ہدا کہ مست مستور حسین ایسے دنیا ہیں بہت کم ہیں مشتور حسین ایسے دنیا ہیں بہت کم ہیں (صاحبز اور فان اختر عرفی مشتوری)

12.2

متازیر تسیم مدر خوال دسول عظی بناب تحد حاکم قریش المدنی متازیر تسیم مدر خوال دسول عظی بناب تحد حاکم قریش المدنی محترم حاکم قریش کا میک ادمان ہے جلد ان کو جو جائے زیادت آپ کی ہم بھی ہیں ول سے شریک ان کی دھائے تحریمی ویکھیے کی ان ہے جو چھم مناب آپ کی دیات کی در دیات کی دیات کی در دیات

(صاجراده فان اخر عرقم فتثبندي)

سنرزين عافوال فيس احمد قادري

مرحبا!اے نفیس خوش انداز نعت تم نے پڑھی قرینے کی ہو مہارک حمہیں یہ نور خیال برم روثن ہوئی ہے سے کی مصردک حمہیں یہ نور خیال برم روثن ہوئی ہے سے کی (صاحبزادوخان اخر عربے معتبدی)

شعل نوار خوش ادائتیب محمد مشر کیف الدین نیم نعت خوال و بیتا میں جر منزل به اِن کو بیا دُعا حشر کے دان بھی دے اِن میر دوائے مصطفا نتشندی مصاحبزادہ محمد حسین چشتی نیز ۱۰۰ سے را کد احباب نے فروا فردا گل پوشی کی صلودہ وسلام ودعا پر تقریب کا انققام ہوا۔ آخر علی خان اختر ندیم نے جناب عبد الوحید خوری اوران کے تمام سی فی دوستوں کا شکر بیادا کیا۔ بچ بیہے کہ بیتقریب ایک نمائحہ و تقریب تھی جوان شاءاللہ مجیشہ یا ورہے گی۔

الحاج كلشن البي چشتى جيا. ني فريدي

مرس مبارک تی عبدالوہاب شاہ جیدنی اپریں ۹ موہ اے موقع پر مقامی نعت خوانوں کی محفل جی جیس کے آرگیا تزرجمہ قبال میمن تھے۔رہبر ملت ، پروان جمع درمالت معرب الحاج کھٹن الی چشتی دامت برکاجیم الدید نے عمرے سے والهی پر تیاک فیر مقدم کیا۔ بے بناہ عزت افزائی کی۔تمام شرکائے محفل نے گل پوٹی کی۔ آباک فیر مقدم کیا۔ بے بناہ عزت افزائی کی۔تمام شرکائے محفل نے گل پوٹی کی۔اس کی۔آبلہ ماتی صاحب نے در بار عالیہ کی حبین وجمیل جا در اور اجرک پوٹی کی۔اس تقریب کی ضعوصت میتی کہ اس جی خان افتر ندیم سے بوٹ جوٹی وجذ ہے کے ساتھ متواتر ۲۰ منٹ تک مدیب سے متعلق نونیہ اشعار سے محف عاشقان دسول سے خوب مرا بااور دادر حسین پوٹی کی۔

استقبالية كفل مشاعره

ا جولائی بروز جعد برم فروغ ادب حیورآ بودنے بخاری بائی اسکول کی چرچوک کے لاان بھی خان اختر ندیم تعشیندی کی واپسی زیارت تر بین شریفین سے موقع پرایک استقبالیہ غیر طرق مخفل مٹ عرہ کا جتر م کیا جس بھی شعراء نے کثیر تعداد بیں شرکت کی اور گل پوشی کی۔ اجرک وتن مف چیش کئے۔ موصوف سے مدینے سے متعلق نعقیہ اشعار سے گئے۔ نیز چندم عززشعراء نے منظوم خراج عقیدت بھی چیش کیا۔

ہو مقدر کے سکندہ واواخان اخر عریم دیکھ آئے ایجھے منظر واواخان اخر عریم

### استقباليهاوراعزازى تقريبات

۱۶ اپریل بروز جعرات ۲۰۰۹ء صاحبز اوہ قان اخر عدیم نقشیندی کے واپسی زیارت حرجمان شریفین کی خوشی میں ان کے احباب ماراد تمندوں بشعراء کرام اور معزز شحصیات نے اعز ازیہ تقریبات کا اہتمام کیا۔

بيرطر يقت حضرت صوفى عبدالسكيم خان تقشبندى

حضرت قبلہ صوفی عبد السلم خان تعقیندی نے بھیشے کی طرح اپنی محبق کا اظہار کرتے ہوئے خان اختر عدیم کے اعزاز علی ایک استقبالیہ محفل نعت کا اجتمام کیا۔ شرکائے محفل نے خان اختر عدیم کو بارا در تھا تف چیش کے مسلوا قوسلام اور دعا کے بعد لنظر چیش کیا۔

#### متنازمحاني محافى عبدالوحيدغوري

آلی داونڈ رپورٹر دونر تامد جراوت، چیف د پورٹر دونر تامد کامیاب حیورآباد جناب عبدالوحید فوری نے اس خوشی کے موقعہ پرائی فوبھورت اور دکھی تھلی نعت دگل پوشی کا اہتمام کیا جس بھی حیورآباد کی محافی براوری نے جر پورٹر کمت کی حان اختر تدمی کو دیے گئے اس استقبالے بھی چیف ایڈیٹر کامیاب معیدا حمد نے حسین وجیل سندھ فولی بھی جاوید فریدی درباری نعت خوان کی عبد الوہاب شاہ جیلائی نے تن کف مصدارتی ایوارڈیافت شاخواں آغا کو ہر علی نے معمدارتی اور کی نیٹر بنیادی حقق کمیش عبدالیجار رحمائی نے اجرک دونر نامہ صوبہ سندھ کے دقار جمد ہے نے اجرک اور صدر میدالیجار رحمائی نے اجرک دونر نامہ صوبہ سندھ کے دقار جمد ہے نے اجرک اور صدر میدالیت ویلفیٹر ایسوی ایش عبدالجمید شاہ نے اجرک ، معردف محافی ہارون آرو کی میدالیت ویلفیٹر ایسوی ایش عبدالجمید شاہ نے اجرک ، معردف محافی ہارون آرو کی میدالیت کے ایم جوات کے دور میدالیت بھید بیورو ریاست علی ناغز ، اخبار جہاں کے یاسین جمید بینی تحریک کے ایم چین

## صرت الدكوكب توراني اوكار وي

(صاجراده فان اخر عرقم تعشدي)

رُونِ رَوَّانُ الْمُسَنَّةُ طَعْرَتُ كُوكِ نُورِانَى مرتا پاعظمت بن عظمت عفرت كوكب نورانی واقتف كل اسراوشريعت عفرت كوكب نورانی بینی وادمت راه طريقت عفرت كوكب نورانی آب خطيب با كستان كافت مبكراور پاره ول قلب نديم من تقش فنيت عفرت كوكب نورانی سيترزين باصلاحيت نوش الحان شاخوان رسول ملی الله عليه واله ملم

عبداللطيف باشى

بہت تی ہادقار وخوش بیال ہے آپ کی زیاں کہ عمد و تعت کے تنبیب جیں لطیف ہائی کرم ہے جن تفوی پر ضدا کا اور رسول کا آفھیں میں ایک خوش لعیب جی لطیف ہائی

(صاجزاده خان اخر عرفم نعشبندی)

معزز ومحترم عدارة جيب أيرابلتت

ڈاکٹرسیّدانورعلی نیازی

جن پر کرم کے باب نہ ہول زندگی میں بند ہوتے ہیں ایے لوگ زمانے میں مرف چند اس سے زیادہ کیا ہو مطائے محمدی نعب رسول کے ہیں نیازی نیاز مند (صاحبز ادم قان اختر ندیم فتشیندی) تم کو عمرے کی سعادت ہو مبارک جان جاں خوب بایا ہے مقدر واہا خان اخر عدیم (سیدکا ظم علی ں)

جر كر فدا كے نور سے سينے كو،د كھ آئے ديا ہي رہوں اے تربیع كو د كھ آئے ديا ہي رہوں اے تربیع كو د كھ آئے ہيں كے كو د كھ آئے ہيے كو د كھ آئے ہيے كو د كھ آئے ہيے كو د كھ آئے ہيے

(پروفیسرٹا تب آریش) ور آب کو

جب عطا ہو رہی تجوب واور آپ کو کول شرب مائیں مقدر کا سکندر آپ کو آپ نے جونور دیکھا ہے خدا سب کو دکھائے مد میادک یاد عمرہ!خان اختر آپ کو

(پروفیمرشیق احمد بیلانی) مبارک ہو جہیں اے خان اخر کہ کمر کامر دکھے آئے تم خدا کا زیارت کی در خیر الورئ کی ہے ہے انجاز ڈکر مصلیٰ کا (عبدالشکورآتی)

الله كرك زور قلم اور زياده قوميب محمد مو رقم اور زياده ده ناز كرم بحى بين ده اعداز كرم بحى كرتے بين كرم پروه كرم اور زياده ده ناز كرم بحى بين ده اعداز كرم بحى اور زياده (بدرما كرى)

ور حقیقت نابذ فاکار ہے اخر ندیم ایکرال بیر رضیف سرکار ہے اخر ندیم "ساقی کوئر" براہے کارہے اخر ندیم فوش نما اشعار کا گزار ہے اخر ندیم حق نما اِک رفتر افکار ہے اخر ندیم نفتیہ اشعار کا طہار ہے اخر ندیم آپ سے "حرف دُھا" درکارے اخر ندیم آپ سے "حرف دُھا" درکارے اخر ندیم "سان گور" كاپ ت سيدابت بوا "سان گور" حسيس ورائ مي مي كليق ك اب كهلے تو شاعرى كافن أجاكر بوكيا "سان كور" كى عقمت مرحباسي على "سانى كور" كاپ تن زمان كے لئے "سانى كور" كو يا ه كر ش مجمد بايا بول بي بالشاف آپ كو ش نے مجمد بايا بول بي

ہے دُھا کہ آپ کو اللہ دے اُوپی فرون بس کہ جی شام سرکار ہے اخر عربی

جعد 4 دنمبر 2009 ء

عبدالحريد خان جى \_سارى ـ ١١ منى الإرامنت ناظم آباد نبرساز دمهاى شبيداستال كرايى

### آر گنائزرس محافل نعت ـ ذكروساع

قائد قاخوانان دسول الحاج سيد قرائد مان شاه ـ اجير لفكر شاخوانان دسول ـ الحاج الشخص التي قادرى چشتی قريدی ـ سيد مبارک علی شاه چشتی سر ـ کھات ـ سيدا ظهر حسين شاه جاموت ـ جحد اکرم قريشی اختر القادری ـ مجدا قبال ميمن چود داماسينز ـ معاجزاده محمد حسين چشتی ـ صوفی اميد علی بهلم فرد رقح نعت ـ حضرت صوفی محمد اقبال شاه چشتی مينی ظهودی در بار مجازيد ـ معوفی ظيل الرحمان قاتلی دحمان و اکثر سيد الورعلی نيازي ـ محبوب عالم شيروانی انجمن شيدائيان دسول ـ استاد سيف محرش ـ معاجزاده مصطف محبوب عالم شيروانی انجمن شيدائيان دسول ـ استاد سيف محرش ـ معاجزاده مصطف محبوب عالم شيروانی انجمن شيدائيان دسول ـ استاد سيف محرش ـ معاجزاده مصطف اقريک مال بيزم خود الوری فيمن قادری ـ فيمن عالم فريدی ـ الحاج مامزم و بيسف برخیل اقريک استوال ـ محبوالرجيم گدی قائد او پان اسكاوش ـ محد عائم قريش پرتيل استرونگ جي بال اسكول ـ محبوال علی الدنی ـ انجمان صد اين الدين جماعت داکتر محد اقبال خوشه به بال - محد اسلم چشتی بهول والے ـ قاضی دخی دادين الدين جماعت

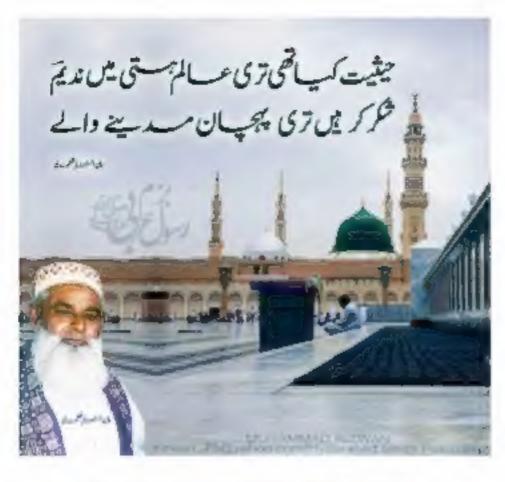
سروف مائی اور الندار خضیت بناب سید عبد الحمید شاہ ارمال ہے جمید خشہ میں مقصد مجمی کی ہے جستی کا بیگات و نیا ہو جاؤں اور ذکر نی وان رات کروں

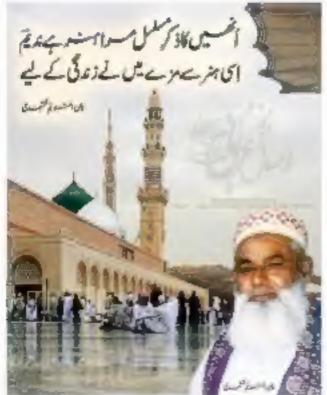
(صاجر اده خان اخر عربم تعقبندي)

نعتيدد يوان وزفعتا لك ذكرك " كم خالق معروف شاعر اسحافي جناب سيد

فروالفقار سيس نفوى كالدين علوى دورت جناب ماجزاده فان اخرى كم كك ك المنظيم على تهذيب من المنظامة المنظيم على تهذيب وياب المنظامة المنظرة على المنظرة على المنظرة على المنظرة على المنظرة المنظ

محترم خال اختر عريم بالمام يجرومناف ويكاد



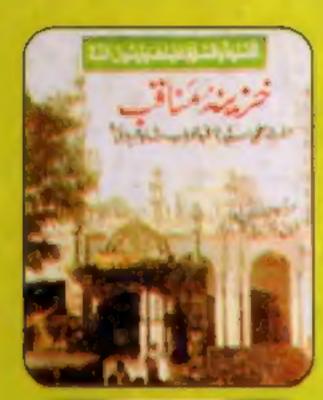


المسنت به معین قا دری شعیب ملک به صوتی عبد استیم خان نتشندی به ایس شین به نظام الدین کیشردان به قاروق شیرازی به حالیم شیرازی بسلیم قرایشی میم الله آتوز مرز افرزی بیلم قرایشی میم الله آتوز مرز افرزی بیلم الله آتوز به میراز افرزی بیلم میرد افرزی به با اعبد الزحمان به ماه می میرد افروی میر مرز افرزی بین احد دا بیا اکرم جینی والے صوفی محد دفیق بونت نمبر 5 معوفی محد دفیق بیزی والید دفتون المیند دفتی بیزی والید میری بینسیع اسکول میر عارف می افتان ایراییم دهاگا فریدرس ماشر آقاب میری بینسیع اسکول میر عارف می افتان ایراییم دهاگا فریدرس باشر آقاب میری بینسیع اسکول میر عارف می افتان ایراییم دهاگا فریدرس ماشر آقاب و اسلامی می افتان بیران المیم میری بینسین احد موالا تا حالی داد کرد می افتان المیم میرد بیران المیم میرد بیرا

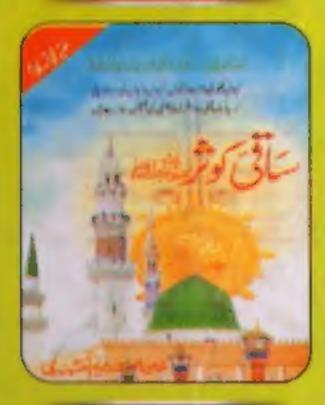
محبين ومحسنين

ماسترنید شاجرایس کے دجم بائی اسکول۔ عبدالجید رشید مرحم۔ عبدالجید نصیب۔ حضرت آبلہ ڈاکٹر رفیع الدین صدیقی نشتیندی۔ ڈاکٹر محر رفیق جو بوآ رتبو۔ لیافت علی عباری۔ حن قبائی آرائیس۔ متازاح رانا انجینئر۔ تکیم صوفی شبر احرقائی نشتیندی۔ سائیس نلام مصطفے جیلائی بلوری اسلامیہ باڈرن بائی اسکول۔ خلیفہ سائیس اشرف سائیس نلام مصطفے جیلائی بلوری اسلامیہ باڈرن بائی اسکول۔ جرابرار صنیف مخل جہاں اقبال۔ ماسٹر ساجد حسین انچاری آسیلی کمپری مینسیع اسکول۔ جرابرار صنیف مخل ادارہ کا دوان زفعت لا بحر میں شاہدرہ۔ جمد عمر شادرہ کا دوان زفعت لا بحر میں شاہدرہ۔ جمد عمر شادرہ کی دواب سین نقوی۔ سیّد شادرہ کی سیّد بائیس نقوی۔ سیّد شاہدی۔ اسٹر سیّد بائیس اسٹور۔ سیّد شاب حسین نقوی۔ سیّد مادرہ ایک اسٹور۔ سیّد شاب حسین نقوی۔ سیّد مادرہ ایک میٹری مینسیع اسکول۔ اسٹر سیّد بائیس نقوی۔ بائٹر سیّد بائر سیّد بائیس اسکول۔

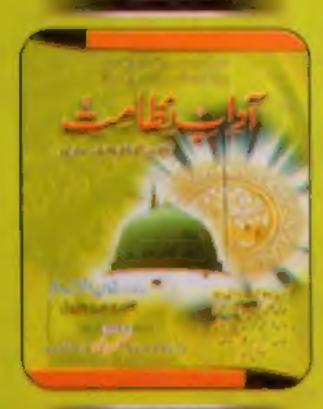
# صاحبراه وظان اختر وريم التشيعري كي مطيوم أصيرة واليف



,1995 <del>/</del>/



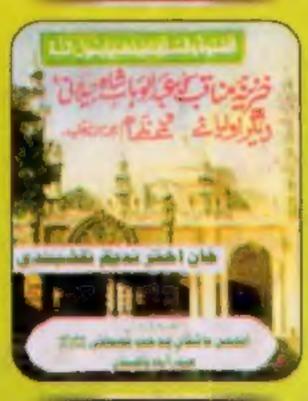
2004



2010



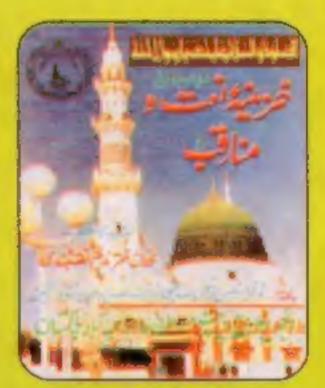
تبر 1992ء



نوبر 1997ء



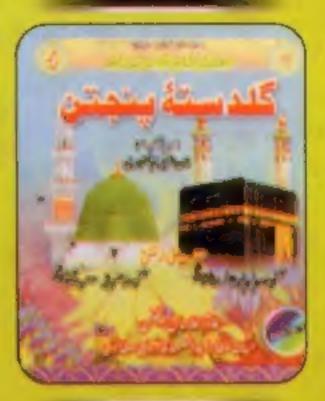
,2006@A



1992



,2001



2009